अंक : 107 वर्ष : 27 अक्तूबर-दिसम्बर, 2004

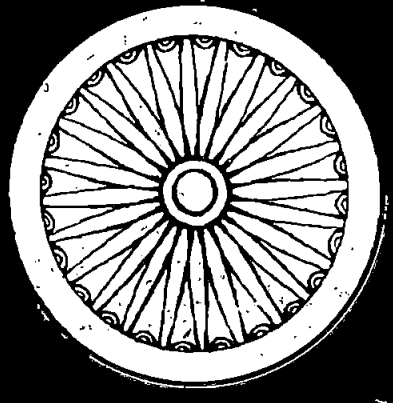

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा विज्ञान भवन, नई दिल्ली में आयोजित हिंदी दिवस समारोह में पुरस्कार प्रदान करते हुए माननीय गृह मंत्री श्री शिवराज पाटील। साथ में बाएं से श्री अनुपम दासगुप्ता, सचिव (राजभाषा विभाग), श्री माणिक राव गावीत, गृह राज्य मंत्री, श्रीप्रकाश जायसवाल, गृह राज्य मंत्री तथा श्री मदन लाल गुप्ता, संयुक्त सचिव (राजभाषा विभाग)।

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा विज्ञान भवन, नई दिल्ली में आयोजित हिंदी दिवस समारोह में 'राजभाषा भारती' अंक 106 (जुलाई-सितंबर, 2004) का विमोचन करते हुए माननीय गृह मंत्री श्री शिवराज पाटील।

भारति जय विजय करे, कनक-शस्य-कमल धरे
—निराला

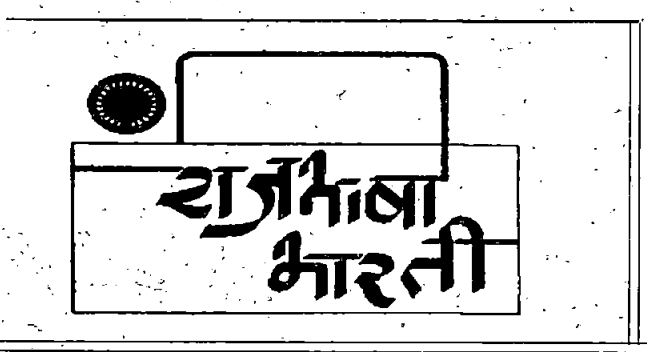

राजभाषा विभाग की त्रैमासिकी

वर्ष : 27

अंक : 107

अक्तूबर—दिसम्बर, 2004

काव्य विशेषांक

❑ संपादक
ओम प्रकाश सेठी
संयुक्त निदेशक (अनुसंधान)
दूरभाष : 24617807

❑ उप संपादक
डॉ० राजेन्द्र प्रताप सिंह
दूरभाष : 24698054

❑ संपादन सहायक
शांति कुमार स्याल
फोन : 24698054

❑ निःशुल्क वितरण के लिए

पत्रिका में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण संबंधित लेखक के हैं। सरकार अथवा राजभाषा विभाग का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

❑ पत्र-व्यवहार का पता :
संपादक, राजभाषा भारती,
राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय,
लोकनायक भवन (द्वितीय तल),
खान मार्किट, नई दिल्ली-110 003

विषय-सूची पृष्ठ

❑ संपादकीय (iv)

❑ काव्य खंड

1.	नव वर्ष तुम्हारा स्वागत है	—ईश्वर चन्द्र श्रीवास्तव	3
2.	कैसे छीनोगे ···	—आनंदकृष्ण	3
3.	भाई चारा	—मुकेश कुमार	4
4.	दिल की गहराई	—नत्थू लाल कुटार	4
5.	प्रेरणा के स्वर	—दिनेश कुमार छाजेड़	5
6.	गज़ल	—सन्तोष धीमान	5
7.	याद तुम्हारी नानी	—सुरेश कुमार सोनपुरे	6
8.	भटक रही पतवार	—डॉ० इन्द्र सेंगर	6
9.	लिखना और जीवनचर्या	—भुवनचंद्र जोशी	7
10.	प्यार का रंग	—रमेश 'वियोगी'	7
11.	समुद्र	—स्मिता दारशेतकर	8
12.	हम और तुम	—आनन्द सरन	8
13.	वेदना के आँसू	—राजेश कुमार दुबे	8
14.	त्रिशंकु	—अनीता रैलन	9
15.	आँसू दिल के मोती	—जे.के. डागर	10
16.	विश्व मंच की बानी हिंदी	—डॉ० सर्वदानंद द्विवेदी	10
17.	अब मैंने पहचान लिया है	—वी. अरुणा	10
18.	साँस-साँस चंदन हो जाये	—दिनेश कुमार सिंह ''घायल''	11
19.	राष्ट्र जीवन मंगलमय	—प्रेम सागर रैना	
20.	शहर के इन जंगलों में	—कर्नल सुरेन्द्र सिंह ठाकुर	12
21.	कर्त्तव्य कवि का	—गिरीश चन्द्र ''पाड़ी अलीगढ़ी''	12
22.	फागुन	—डॉ. पन्ना प्रसाद	13
23.	राष्ट्रीय एकता	—डॉ० अफ़रोज अहमद	13
24.	मैं आत्मा हूँ	—नीलम डेविड	13

3767 HA/2004—1A

25.	समय	—रूप चन्द्र बड़थ्वाल	13
26.	तमसो मा ज्योतिर्गमय	—विजय कुमार शर्मा	14
27.	कविता नहीं कुरुक्षेत्र	—राजेश श्रीवास्तव	15
28.	घरौंदा	—इन्दु मल्होत्रा	15
29.	सूनी चौपाल	—आशा झा	16
30.	सार्थकता	—डॉ० चरनजीत सिंह	16
31.	पहचान	—यशपाल	16
32.	आया सावन	—महेन्द्र सिंह शेखावत ''उत्साही''	17
33.	अश्रु झरते	—देवेन्द्र कुमार शुक्ल ''सफल''	17
34.	प्रागज्योतिषपुर	—प्रवीण. एन. बलिया	17
35.	अंधेरों में दीप	—केशव मिश्र	18
36.	माँ	—कलीमउल्लाह खान 'कलीम असर'	18
37.	कवि तुझे क्या हो गया है	—वीरेन्द्र सिंह रावत	18
38.	आकाश परी	—अल्केश त्यागी	19
39.	मनुष्य	—कमल किशोर बडोला	19
40.	स्वर्ग सोपान	—श्रीलाल प्रसाद	20
41.	आत्मकथ्य	—सुरेन्द्र कुमार	20
42.	वसंत	—गिरीश वर्मा	21
43.	प्रेम की सरिता	—अहमद ''मेराज'' गोंडवी	21
44.	बचपन	—शेखर पिल्लै	21
45.	एक डिजाइनर एवं बरमुडा	—सुभाष चन्द्र राय	22
46.	राजभाषा	—हर्षद. म. पाठक 'हमदम'	24
47.	हे पड्ज!	—बलवंत करंदीकर	24
48.	हम जो बचे रहे	—इलाशंकर गुहा	24
49.	कहाँ हो प्रभु	—(खड़कराज गिरी) वीरभद्र कार्कीढोली	25
50.	धंसा हुआ एक बाण	—राकेश कुमार	25
51.	परछाइयां	— पूनम	26
52.	अपना-अपना भाग्य	—डॉ० सुरेन्द्र कुमार शर्मा	26
53.	रे मन! तुझको कैसे समझाऊँ	—अशोक झा	27
54.	मौन	—राजन कपूर 'राज'	27
55.	पावन संकल्प	—वलीउल्लाह सिद्धीकी 'तारेश'	28
56.	'क' से कर्जा	—मोहन सिंह कुशवाहा	28
57.	औरत	—राजेश सिंघी	29
58.	काश!	—चंद्रभान जैन	29
59.	वक्त	—राकेश कुमार	29
60.	धनु इंद्र चमके	—जयनाथ प्रसाद 'सात्विक'	30
61.	प्रणय	—श्याम लाल मेहता	30
62.	मुट्ठी भर यथार्थ	—अरुण निगम	30
63.	कंक्रीट का शहर	—बृजेश कुमार त्यागी	31

विषय-सूची		पृष्ठ
64. कैक्टस	—पाण्डेय अखिलेश कुमार अरुण	31
65. बीता हुआ कल	—पूनम जालान	31
66. जो जितना ही गंध लुटाए	—ओम प्रकाश वर्मा	31
67. परहित	—श्रवण प्रसाद नामदेव	32
68. भारत की ललनाएं	—दिनेश पाठक	32
69. ग़ज़ल	—राम अवध विश्वकर्मा	32
70. उठ मनुष्य जाग तू	—आर. वी. पान्तावणे	32
71. विश्वास बीज अंकुरित कर	—सुनील कुमार चोपड़ा	33
72. पत्थर की आवाज़	—एस.पी. जैन	33
73. उड़ान	—विभा नरहरि शाह	34
74. कहां गये तुम!	—एम. मेरी क्रिस्टी	34
75. सुख और वैभव	—विक्रम सहानी	34
76. यथार्थ	—संजय जी. देवरस	35
77. ज्योति पर्व	—तारकेश्वर प्रसाद श्रीवास्तव	35
78. आतंक किसी कोख में नहीं पलता	—संगीता सेठी	36
79. कमी ढूँढते रहे	—सुधीर साहु	36
80. ओ भाषा!	—भाष्करानन्द त्रिपाठी	36
81. कर लें होश ठिकाने लोग	—श्री नारायण समीर	37
82. मृत्यु	—हरिभाऊ गिरपुंजे	37
83. पोथी	—मारपल्लि बालाजी	37
84. समर्पण	—बिमला गुप्ता	38
85. सांझ एक गाँव की	—डॉ. चन्द्र कुमार वरठें	38
86. पक्षी की जिज्ञासा	—सुरेश मिश्र	39
87. सत्य समय का	—बलबीर संधू	40
88. पहाड़ शांत है	—डॉ. रामचन्द्र राय	40
89. शब्द साथी हैं	—डॉ. देवेन्द्र तिवारी	41
90. अभिलाषा	—प्रकाश कुमार श्रीवास्तव	42
❑ राजभाषा संबंधी गतिविधियां		
(क)	विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समितियों की बैठकें	45
(ख)	राजभाषा कार्यान्वयन समितियों की बैठकें	47
(ग)	नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों की बैठकें	50
❑	कार्यशालाएं	56
❑	हिंदी दिवस	58
❑	पुरस्कार/प्रतियोगिताएं	70
❑	राजभाषा सम्मेलन	72
❑	प्रशिक्षण/परीक्षा	74
❑	आदेश-अनुदेश	85
❑	विविध	103
❑	पाठकों के पत्र	106

सम्पादकीय

लम्बी प्रतीक्षा के बाद राजभाषा भारती का अंक 107 (काव्य विशेषांक) पाठकों के हाथों में सौंपते हुए संतोष का अनुभव हो रहा है। मार्च 2003 के दौरान विशेषांक के लिए कविताएं आमंत्रित की गई थीं। उत्तर में इतनी अधिक संख्या में कविताएं प्राप्त हुईं कि चयन की समस्या खड़ी हो गई। संकलन में यथासंभव अधिक से अधिक कविताओं को स्थान देने का आग्रह तो था ही। इस प्रकार "समुद्र-मंथन" से निकला यह काव्यामृत पाठकों के समक्ष रसास्वादन के लिए प्रस्तुत है।

ये कविताएं केंद्र सरकार के कार्यालयों/उपक्रमों/बैंकों आदि में कार्यरत कार्मिकों द्वारा रचित हैं, इसलिए स्थापित साहित्यकारों के साथ इनकी तुलना उचित नहीं। फिर भी आप पाएंगे कि शुष्क कार्यालयीन परिवेश में उम्मीद की किरण बाकी है, मशीनों के बीच आदमी आज भी कोमल भाव लिए है और यही भाव आदमी को 'इन्सान' बनाता है। वास्तव में कविता जीवन को देखने-भोगने के प्रति कवि की अपनी संवदेना की अभिव्यक्ति है। आप पाएंगे कि इस संकलन में सम्मिलित कविताएं देश के प्राय: प्रत्येक भू-भाग से और आमफहम हिंदी-उर्दू मिश्रित भाषा से लेकर सुसंस्कृत परिनिष्ठित हिंदी तक में रची गई हैं। निश्चय ही यह इस देश की सामासिक संस्कृति का प्रतीक है। संकलन में कविताएं छंदबद्ध भी हैं और छंदमुक्त भी। कुछ गज़लें भी हैं तो कुछ दोहे भी।

इस संकलन से भारत सरकार के विभिन्न कार्यालयों/प्रतिष्ठानों आदि में कार्यरत कार्मिकों को हिंदी में काम करने का प्रोत्साहन मिलेगा, अभीष्ट यही है। अगर हम मन में निश्चय कर लें तो अपने कार्यालय का परिवेश हिंदीमयी करने से हमें कोई नहीं रोक सकता। विश्वास करें इस प्रयास में हम आपके साथ हैं।

राजभाषा भारती के इस अंक में काव्य के साथ-साथ हिंदी के प्रगामी प्रयोग संबंधी स्थाई स्तम्भ तो हैं ही, क्योंकि उनकी उपयोगिता निर्विवाद है।

उम्मीद है, पाठक राजभाषा भारती के इस अंक को रुचिकर तथा उपयोगी पाएंगे। पत्रिका की प्रस्तुति, कलेवर तथा सामग्री में सुधार संबंधी सुझावों का स्वागत है।

सम्पादक

काव्य खंड

1. नव वर्ष तुम्हारा स्वागत है

आशा से मंडित हर विहान,
नव प्रभात की स्वर्णिम किरणें;
सुगम बने जीवन की राह,
नव वर्ष तुम्हारा स्वागत है।

तकनीकियों का विस्तार हो,
मानव भलाई के लिए;
हो गगन ही लक्ष्य अपना,
नव वर्ष तुम्हारा स्वागत है।

सिर्फ़ है चाहत यही,
इन्सानियत आबाद हो;
मानव-मानव का ख़्याल करे,
नव वर्ष तुम्हारा स्वागत है।

तिमिर मिटे, बिखरे उजियारा,
ज्ञान ज्योत की आभा फैले;
मधुर प्यार की सरिता में,
नव वर्ष तुम्हारा स्वागत है।

विनाश लीला मिटे धरा से,
भय का साया छटे यहाँ से;
सुख-दुख के साथी बनें सभी,
नव वर्ष तुम्हारा स्वागत है।

जन-जन के दिल में यही चाह,
घर-घर में हो खुशियों की छांह;
सभी हैं आतुर मिलने को,
नव वर्ष तुम्हारा स्वागत है।

21वीं सदी के हर विहान,
''ईश्वर'' के पूरे हों अरमान;
हर घर में दीप जलें खुशियों के,
नव वर्ष तुम्हारा स्वागत है।

—ईश्वर चन्द्र श्रीवास्तव
कार्यकारी निदेशक,
महानगर टेलीफोन निगम लि., मुंबई,
15वीं मंजिल, टेलीफोन हाउस,
वीर सावरकर मार्ग, दादर (पश्चिम) मुंबई-28

2. कैसे छीनोगे…

तुम मुझसे बस शब्द और सुर ले पाए
पर बोलो—कैसे छीनोगे मुझसे मेरे गीत?
मुझको तो बस गीत सुनाना आता है।
अधरों पर संगीत सजाना आता है।
गहरा रिश्ता है मेरा पीड़ाओं से—
फिर भी मुझको हास लुटना आता है।
तुम मुझसे बस आह-कराहें ले पाए—
पर बोलो—कैसे छीनोगे मुझसे मेरी प्रीत?
मैंने गीतों में अपनी वह प्यास पढ़ी है—
बरसों से जो प्यास उम्र के साथ चढ़ी है।
तृप्त कराने की कोशिश जब-जब भी हुई है,
तब-तब यह तो और उग्रतर हुई, बढ़ी है।
तुम मुझको बस प्यासी तृष्णा दे पाए
पर बोलो—कैसे छीनोगे मुझसे मेरे मीत?
मुझे पता है इन राहों में फूल नहीं है।
किंतु बताओ? कहां जगत में शूल नहीं है।
जब शूलों से यारी करना आवश्यक हो—
तब गीतों से साथ निभाना भूल नहीं है।
तुम मुझको बस चन्द सलाहें दे पाए—
पर बोलो—कैसे छीनोगे मुझसे मेरी रीत?
मैंने जीवन की बगिया में आंसू बोया है।
मैंने जिसको चाहा है उसको खोया है।
पीड़ा से मेरी आंखें जब-जब भीगी हैं—
मुझसे गले लिपट तब मेरा गीत भी रोया है।
तुम मुझको बस हार पुरानी दे पाए—
पर बोलो—कैसे छीनोगे मुझसे मेरी जीत?

—आनंद कृष्ण
सहायक निदेशक (राजभाषा),
भा.र.भी.रा.अ.दूर.प्रशि. संस्थान,
रिज रोड, जबलपुर-482001

3. भाईचारा

॥ झुक ना सके मिट ना सके
है अपना ऐसा इरादा।
आओ मिलकर हम करें पक्का वादा
सदा रहे हममें भाईचारा ॥

॥ क्यूँ छोटी-छोटी बातों पे हम लड़ें
क्यूँ अपने ही हाथों से अपने भाई का खून करें।
भूलो ना तुम बलिदानी शहीदों की कहानी
याद करो, फिर मिलकर रहो देशवासी ॥

॥ फिर ना कोई सिकंदर, फिर ना कोई फिरंगी
करे आकर भारत माँ को जख्मी।
आओ मिलकर करें रक्षा भारत माँ की
रहे बनाएं हम, सदा ही शांति ॥

॥ झुक ना सके मिट ना सके
है अपना ऐसा इरादा।
आओ मिलकर हम करें पक्का वादा
सदा रहे हममें भाईचारा ॥

—मुकेश कुमार
यूनियन बैंक ऑफ इंडिया,
239, विधान भवन मार्ग,
नारीमन पाईंट, मुंबई-21

4. दिल की गहराई

हमने बहुत विचारा मन में
तब यह बात समझ में आई।
सागर से भी ज्यादा है
मानव के दिल की गहराई ॥ 1 ॥

समंदर को नाप लिया हमने
पर दिल की थाह न पाई।
रहे डूबते-उतराते पर
ठोस चीज कुछ हाथ न आई ॥ 2 ॥

किस पर दिल आ जाएगा
इसका कौन ठिकाना है।
एक बार लग गया जहाँ पर
फिर उसका दीवाना है ॥ 3 ॥

दिल का कौन भरोसा है
जब भी मौका पाएगा।
बेहतर किसी और को पाकर
और कहीं लग जाएगा ॥ 4 ॥

जब दिल में हलचल होती है
सारे अरमान मचलते हैं।
दिल को समझना बड़ा कठिन है
हम सँभल-सँभल कर चलते हैं ॥ 5 ॥

—नत्थू लाल कुटार
उप-प्रबंधक,
बैंक ऑफ महाराष्ट्र,
पानीपत, हरियाणा

5. प्रेरणा के स्वर

कवि ! आज क्यों हो दुविधा में,
क्यों देते हो अपनी लेखनी को विराम।
उठो ! कुछ नया सोचो,
कलम से लिखो कुछ नए आयाम॥

गीत लिखो तुम नई पीढ़ी पर,
जिसमें कुछ करने का जोश हो।
जोश में भी होश हो।

गीत लिखो तुम नई पीढ़ी के संस्कारों पर,
गीत लिखो तुम खेतों और खलिहानों पर,
गीत लिखो तुम सीमा पर डटे जवानों पर॥

कुछ ऐसा लिखो कि,
पर्वत पिघल जाए।
मुरझाए चेहरे खिल जाएं,
कुछ ऐसा लिखो,
जिसमें जीवन की सच्चाई हो,
जीवन की नई परिभाषा हो॥
कुछ ऐसा हम कर दिखाएं,
जो लिखने के योग्य हो॥

तो मित्र ! उठाओ कलम,
मत दो अपनी लेखनी को विराम।
लिखो सदैव नए आयाम,
नए आयाम, नए आयाम॥

—दिनेश कुमार छाजेड़
कार्य दक्ष ई, उत्पादन अनुभाग,
भारी पानी संयंत्र, कोटा
अणु शक्ति (राज.)

6. गज़ल

(1)

सूख रहे सागर भावों के कुछ अहसास बचा कर रखना।
गये दिनों की मीठी यादें अपने पास बचा कर रखना॥
कितना भी विपरीत समय हो, कितना भी अंधियारा हो।
फिर भी जीवन बुरा नहीं है, यह विश्वास बचा कर रखना॥
ना जाने कब बन कर झोंका सूना अन्तर्मन महका दे।
दर पर उसी मस्त सी खुशबू का आभास बचा कर रखना॥
जलता सूरज, तपती धरती, कठिन राह, पावों में छाले।
कुछ भी मुश्किल नहीं रहेगा, हर उल्लास बचा कर रखना॥
देख मेरी आँखों में अब भी तेरा चेहरा झांक रहा है।
बस मेरी खातिर सपनों का कुछ मधुमास बचा कर रखना॥
अगले किसी जन्म में तुम को इसी मोड़ पर खड़ी मिलूंगी।
मेरे हिस्से का अपनापन और इतिहास बचा कर रखना॥

(2)

रह जाती दीवारें तन्हा, दर कहीं और चले जाते हैं।
घर जाने में देर न करना घर कहीं और चले जाते हैं॥
जीवन के अंधे जोखिम में अक्सर ऐसा भी होता है।
मन की दहशत से घबरा कर सर कहीं और चले जाते हैं॥
है यह किसी सदा का जादू या आदत है इन कदमों की।
जाना कहीं और होता है पर कहीं और चले जाते हैं॥
बरखा, बिजली, आंधी, तूफां सूनापथ हो रात अंधेरी।
दीप प्यार का जल उठते ही डर कहीं और चले जाते हैं॥
ऊंचे आसमान के नीचे खुली सांस लेने की खातिर।
जब उड़ने की चाह होती है पर कहीं और चले जाते हैं॥
सपनों की इस बुझी राख का दर्द भरा अफसाना इतना।
डोली कहीं और उठती है वर कहीं और चले जाते हैं॥

—सन्तोष धीमान
कार्यालय महालेखाकार (ले. ह.),
पंजाब, चंडीगढ़

3767 HA/2004- 2A

7. याद तुम्हारी नानी

अबके सावन फिर से आ गई याद तुम्हारी नानी।
तुम तो कहती थी सावन में, खूब बरसता है पानी॥
बढ़ जाती थी धड़कन;
बादल जब गरजते थे।
घटाटोप घनघोर अंधेरा;
बादल खूब बरसते थे।
करती थीं डर पैदा दिल में, कीट पंतगों की बानी।
अबके सावन फिर से आ गई याद तुम्हारी नानी॥
बना महुए का लाटा सब;
बड़े शौक से खाते थे।
बच्चे बूढ़े बाढ़ देखने;
गांव-गांव से आते थे।
पूजे जाते घर-घर में, स्वर्ग लोक के इन्द्र देवता दानी।
अबके सावन फिर से आ गई याद तुम्हारी नानी॥
अबके बरस मेहमान बनकर;
बादल अवनि पर आए हैं।
मन की प्यास नहीं बुझी;
तन को भी तरसाए हैं।
अब सूखे सावन में बहिनों को पड़ती हैं, राखी की रस्म निभानी।
अबके सावन फिर से आ गई याद तुम्हारी नानी॥
नहीं सुनी घोर गर्जना;
नदी नाले नहीं उफनाए।
नहीं दिखे जुगनू इतराते;
और नहीं मेंढक टर्राए।
हो गए उदास जीव-जंतु और जंगल की हरी जवानी।
अबके सावन फिर से आ गई याद तुम्हारी नानी॥
अबके बरस चमकी बिजली;
चमकता है ज्यों जुगनू।
न ही चूही अबके झोंपड़िया;
रोया नहीं अबके फागुन।
देर रात तक सुनते थे सब, बरसात में किस्से कहानी।
अबके सावन फिर से आ गई याद तुम्हारी नानी॥
नहीं दिखे सावन के झूले;
नहीं सुना अबके आल्हा।
सूना-सूना सावन आया;
सजी नहीं अबकी बाला।
दिखे नहीं नंगे नन्हे बच्चे नाचते, नहीं खेले मेंढक रानी।
अबके सावन फिर से आ गई याद तुम्हारी नानी॥

—सुरेश कुमार सोनपुरे
प्रचार एवं जनसंपर्क, बी. एच. ई. एल.,
प्रशासनिक भवन, भोपाल (म. प्र.)

8. भटक रही पतवार

आक्रामक हो गई हवाएँ, संक्रामक हो गई व्यथाएँ।
किससे अपना दर्द कहें हम, किसको अपनी पीर सुनाएँ॥
हर पाती पर दर्द लिखा है,
हर मौसम में आग है।
हर पायल में भरम छिपा है,
हर दामन में दाग है।
स्मृतियों के ताजमहल में, खेल रहीं मन की कुंठाएँ।
किससे अपना दर्द कहें हम, किसको अपनी पीर सुनाएँ॥
सूरज व्यथा रोज बरसाए,
चाँद बना जंजीर है।
पुरवा के घुँघरु घायल हैं,
पछुआ के मन पीर है।
मेरे घर में गर्भवती बन, आकर पसर गई विपदाएँ॥
किससे अपना दर्द कहें हम, किसको अपनी पीर सुनाएँ॥
साँझ-सकारे दोपहरी की,
साँस-पवन में ज्वार है।
केवट की सज रही चिताएँ,
भटक रही पतवार है।
जीवन की सरिता के तट पर सिर धुनतीं वन्ध्या आशाएँ।
किससे अपना दर्द कहें हम, किसको अपनी पीर सुनाएँ॥

—डॉ. इन्द्र सेंगर
हिन्दी अधिकारी,
भारतीय अंतर्देशीय जलमार्ग प्राधिकरण,
ए-13, सैक्टर-1, नौएडा (उ. प्र.)

9. लिखना और जीवनचर्या

दोस्तों ने पूछा—
"बहुत दिनों से तुम्हारी कोई चीज सुनने को नहीं मिली
क्या बात है !
कुछ खास लिख रहे हो क्या
बताओ तो सही !"
मैंने कहा—
"नहीं लिखना-विखना तो मैंने इधर बंद ही कर दिया है।"
दोस्तों ने तपाक से पूछा—
"क्यों ?"
मैंने ज़वाब दिया—
"आजकल मैं यह पड़ताल कर रहा हूँ कि
जो कुछ मैंने लिखा है
कहीं वह मेरे अपने ही आचरण से तो निकल नहीं गया है!
कहीं ऐसा तो नहीं कि
मैं अपनी रचनाओं में तो कुछ और कह रहा हूँ
और अपनी जिंदगी में कुछ और कर रहा हूँ!
कहीं ऐसा तो नहीं कि
जो कुछ मैंने लिखा है
वह सिर्फ दूसरों के लिए लिखा हो
और अपने-आपको मैंने उससे बरी समझ लिया हो!
यह पड़ताल बहुत जरूरी समझी है मैंने
क्योंकि किसी रचनाकार के लिए
ऐसी स्थिति बहुत ही शर्मनाक है कि
उसकी अभिव्यक्ति कुछ और हो
और जीवनचर्या कुछ और
जिस क्षण
रचनाकार की
कथनी और करनी में फर्क आ जाता है
उसी क्षण
रचनाकार की मौत हो जाती है
इसलिए इन दिनों
मैं लिखना छोड़-छाड़कर
सिर्फ यह पड़ताल कर रहा हूँ कि
मैं जीवत हूँ
या
सिर्फ कहने भर को जीवित हूँ!"

—भुवनचंद्र जोशी
विजया बैंक, क्षेत्रीय कार्यालय,
कामधेनु कांप्लेक्स,
अम्बावाडी, अहमदाबाद

10. प्यार का रंग

लोग चाहे इसे कोई भी नाम दें
प्यार स्वारथ नहीं त्याग का नाम है।
इक चकाचौंध सी रोशनी का नहीं
दिल में गुमसुम लगी आग का नाम है।

(1)

आह के तार खींचे गए हों जहां
धड़कनों की लयों पर सजाया गया
इक चुभन ताल की मध्य लय पर बजी
संग जीवन के हो, गुनगुनाया गया।

दिल को खोले हुए, नैन मूंदे हुए
सांस गाए जिसे, राग का नाम है।

(2)

शाम का हो धुआं, कोहरा भोर का
दिन हँसा हो भले, रात रोई कहीं
हो वसंती हवा, सावनों की घटा
मौसमों की नहीं, कैद कोई कहीं

प्यार का रंग अपना अलग रंग है
ज़िंदगी रंग दे, फाग का नाम है।

—रमेश 'वियोगी'
(आर.सी. श्रीवास्तव)
आयकर आयुक्त कार्यालय,
ग्वालियर (म. प्र.)

1. समुद्र

अच्छा लगता है मुझे सहवास तुम्हारा,
मेरी साँसों को भी भाता है हर श्वास तुम्हारा,

ये किनारे, जैसे सुख-दुख हैं, मेरे मन के,
और तूफान ज्यों हलचल हों जीवन के,

पास आकर तुम्हारे, यही लगता है, मुझको
देखूँ और बस देखती ही रहूँ, तुमको,

पग मेरे, हो जाते हैं, व्याकुल, पाने को तुम्हारा स्पर्श,
और महसूस होता है, तब, शायद, यहीं कहीं होगा स्वर्ग,

कभी-कभी तो मन करता है, तुझे सौंप दूँ जीवन,
पर मैं हूँ एक समाज, मुझ पर हैं हजारों बंधन,

मेरा अस्तित्व है छोटा, और तू समुद्र अनंत,
तुझको समर्पण, यानि मेरे जीवन का अंत,

इसलिए ए समुद्र,

फिर न मुझको पास बुलाना, न इस तरह रिझाना,
क्योंकि मेरे लिए तो संभव है, सिर्फ तुझको निहारना,
सिर्फ तुझको निहारना. . .।

—श्रीमती स्मिता दारशेतकर
गोवा संचार भवन, प्लाट-3,
पाट्टो प्लाजा, ईडीसी कंप्लेक्स
पणजी, गोवा-403001

12. हम और तुम

तुम ताजमहल की प्रणय स्रोत, मुमताज महल का जिस्म ढला
हम बिना तराशे पत्थर हैं, तुम खजुराहो की शिल्प कला।

हम पिघला सोना प्याले में, तुम मूरत ढली ढलाई हो
हम अक्षर-अक्षर बिखरे हैं, तुम पुस्तक लिखी लिखाई
हो हम खुद में खुद का बिखराव, तुम जुड़े-जुड़े सब अलगाव
हम पृष्ठ-पृष्ठ ही फैले हैं, तुम गीता बन के छाई हो।

हम पूरी रात अमावस की, तुम पूरा दिन निकला-निकला
हम बिना तराशे पत्थर हैं, तुम खजुराहो की शिल्प कला।

हम कोने कटे खतों जैसे, तुम हल्दी लगा निमंत्रण हो हम
तिरस्कार का जीवन हैं, तुम जीवन का आकर्षण हो हम
पितृ पक्ष के दिन जैसे, तुम शुभ लगन महूरत हो हम
सबसे हरदम अलग-थलग, तुम सबकी खास जरूरत
हो।

हम जीवन पर नीरस निबंध, तुम प्रेम पत्र पहला-पहला
हम बिना तराशे पत्थर हैं, तुम खजुराहो की शिल्प कला।

हम गुमनाम अन्धेरों में, तुम चर्चा अधर-अधर फैली
हम भूले बिसरे राग हुये, तुम वीणा पर चलती उंगली

हम वही हमेशा दूषित मन, तुम धुला-धुला सा एक दरपन
हम असुरों का यौवन जैसे, तुम देवी का बचपन जैसे।

तुम जेठ दुपहरी घनी छांव, हम पूरा सावन जला-जला
हम बिना तराशे पत्थर हैं, तुम खजुराहो की शिल्प कला।

हम तपन चिता के आस-पास, तुम चन्दन वन से चली पवन
हम व्याकुलता हम अकुलाहट, तुम ओम शान्ति हवन-हवन

तुम फूल टके जुड़े जैसी, हम बिखरे बाल हवाओं के
तुम संयम ठहरी झीलों का, हम तेवर चढ़ी घटाओं के

हम सोच रहे हैं जन्मों से, तुम कैसे मेरी चहेती हो
हम नागफनी का जंगल हैं, तुम केसर फैली खेती हो

तुम सुन्दरता की परिभाषा, उसका भी एक कदम अगला
हम बिना तराशे पत्थर हैं, तुम खजुराहो की शिल्प कला।

—आनन्द सरन
भारतीय मानवविज्ञान सर्वेक्षण
192/1, कौलागढ़ रोड, देहरादून (उत्तरांचल)-248001

13. वेदना के आँसू

देखकर चारु कांत सुकुमार,
प्रकृति मन भी जाता है डोल।
मलिन यह तेरा मुखमंडल,
भेद देता है सारे खोल।

निरखते मन में लज्जा भाव,
नयन बन जाते मन के तीर।
सरासर होकर के उद्विग्न,
घाव करते ज्यों हैं गंभीर।

हृदय में कर पीड़ा को बंद,
सदा क्यों रहते हो चुपचाप।
सतत् निज मन को रखकर शांत,
दु:ख सहते रहते निष्पाप।

अरुण जब हो जाता है अस्त,
धरा भी हो जाती निष्प्राण।
छेड़कर वीणा के दो तार,
गेह में क्यों भरते नव-प्राण।

आह! इस कोलाहल से दूर,
विहंगम मध्य सुमन कुमार।
जलधि ज्यों फैला अपरंपार,
प्रकट करते मन के उद्गार।

प्रकृति बन जाती दर्शक मूक,
धरा भी हो जाती दु:ख मग्न।
हृदय की सुनकर पीड़ा क्रांत,
चक्षु हो जाते हैं जलमग्न।

अश्रु फिर बन जाते मोती,
नयन से झरते बूँद अनेक।
अरे! ज्यों अविरल निर्झर शांत,
प्रवाहित होता है अतिरेक॥

—**राजेश कुमार दुबे**
मध्य गंगा मंडल-3, केंद्रीय जल
आयोग, आकाश दीप,
पन्नालाल पाई, वाराणसी-2 (उ. प्र.)

14. त्रिशंकु

इधर कुछ नई सम्भावनाएँ
उधर कुछ पुरानी जंग लगी जर्जर मान्यताएँ
और मैं त्रिशंकु-सी

इन दोनों के बीच स्वयं को लटकाए रही हूँ
कल सोचा तो था
कि जीवन के प्रत्यक्ष सत्य से टकराकर
इन सभी जर्जर मान्यताओं के लिए
एक दहकता अंगारा बनूँगी
मेरी शक्ति का, अपमानों की धूल भरी भीड़ में
कई बार जनाज़ा निकल चुका है
सच्चाई के आवरण में जब भी देखा
पापों का फुँफकारता सर्प ही मिला मुझे

यों तो प्रत्येक की अपनी कुछ सम्भावनाएँ, मान्यताएँ व सीमाएँ होती हैं

और जीने को लोग यहाँ ज़हर पीकर भी जीते हैं

लेकिन वे सभी 'महादेव' की कोटि में नहीं आ सकते

क्योंकि उनकी मुस्कुराहट में

पुण्य के भेष में पाप की छाया पलती है

यह भी सत्य है कि उनकी जिन्दगी बस इसी तरह

चलती है

उनके लिए यह कभी हो सकता है कि वे
अपनी अजन्म इच्छाओं की अर्थी बनाकर
अतृप्ति के यथार्थ शमशान में
अपनी वेबसी की आग जलाएँ

और इसी तरह से लोगों को आँखों में धूल झोंक जाएँ
इन सबकी जिंदगी मकड़ी के जाले में फंसी
मक्खी की भाँति प्रभावहीन है, परिवेश-हीन है
यों जोखिम के नाम पर मैं सब कुछ करती रही
अब भी सब कुछ करने को तत्पर हूँ

गिरने को जब भी गिरी,
होश आने पर पाया
अपने चारों तरफ कुंठित परिस्थितियों के
कुहासे से भरा खड्ड
और मैं खो गई
तभी कौंध उठी चपला
और मैंने पाई
इधर कुछ नई संभावनाएँ
उधर कुछ पुरानी जंग लगी जर्जर मान्यताएँ
और मैं लटक गई
बीच में त्रिशंकु की भाँति।

—**श्रीमती अनीता रैलन**
परिवीक्षा अधिकारी,
केनरा बैंक, टेगोर गार्डन शाखा,
नई दिल्ली

15. आँसू दिल के मोती

आँसू हैं दिल के मोती, नहीं गिराओ नयन द्वार से।
है बाद हार के जीत यकीनी, न मारो मन कभी हार से॥

यहाँ बिछुड़ता है कोई, दूर किसी से मिलने को,
कैसा यूँ मन भारी करना, कहो अलविदा प्यार से॥

आज अगर जो हुई अमावस, कल पूनम हो जाएगी,
इंतजार खिजां के पीछे, करते लम्हे बहार के॥

दर्द दवा खुद बन जाएगा, कैसा धीरज खोना,
जख्म यकीनी भर जाएगा, लगे किसी तलवार से॥

नहीं भूलना गिरने पर, गिरे हैं फिर से उठने को,
हिम्मत चाहिए उठने को, कुछ लाना नहीं बाजार से॥

आँसू हैं दिल के मोती, नहीं गिराओ नयन द्वार से।
है बाद हार के जीत यकीनी, न मारो मन कभी हार से॥

—जे. के. डागर
उप निदेशक
क्षेत्रीय कार्यालय, कर्मचारी राज्य बीमा निगम,
सैक्टर-16, फरीदाबाद हरियाण

16. विश्व मंच की बानी हिंदी

जानकी ते बतियाती रही, गढ़ लंक में ये हनुमान बनी,
और अरब अफ्रीका गई, ईरान में जा दिनमान बनी,
जैन बनी, कबौं बौद्ध बनी, कबौं प्राकृत व अपभ्रंश बनी,
पालि औ संस्कृत बीच मिली, परमाणु के माप का अंश बनी॥

स्वंयभू' के 'पउमचरिउ' के बीच, 'निशीथि' के 'चूर्णि' की भस्म बनी,

'दाउद' गंग नहाय चली, औ, 'इब्नेबतूता' की रस्म बनी,

'जानम' की दक्खिन दिसि जाय, पुनीत भई हिंदुआनी बनी,

टीपू' व 'सूरी' की खड्ग बनी, पुनि पूरब जाय भवानी बनी।

'खुसरो' की विधा अभिधा बनि, कै प्रतिरूपन केरि पहेली बनी,

नरेश मराठन वेश धर्‌यो रन चंडिका संग सहेली बनी

'मरुभूमि' की गंग बनी–विहरी, राजपूतन–पूत निशानी बनी,
आन में, बान में, जौहर शान में, डूबी–तरी क्षतरानी बनी,
पुनि जाय 'मुहम्मद जायसी' के, 'पद्मावत' की पटरानी बनी,
कविताइ कठिन ह्वै 'केशव' की, पुनि 'मानस' की महरानी बनी।
'सूर' के ग्वारन बीच फिरी, जसुदा–घर' माँ अलवेली बनी,
'नंद-गायन' मांझ चरी–विचरी, औ राधा की भोली सहेली बनी,
कवि' चंद' के 'रासो' से 'रास' लिये, 'जमुना' के कदंबों की बेली बनी,
मनमोहन प्रेम–पगी सी ठगी, ब्रजनारि सी प्यारी–नवेली बनी।
ज्ञान समुद्र कबीर–रहीम का पीती, अगस्त्य हथेली है हिंदी,
मीरा की प्रेम–तरंगिनि–अंग के रंगन संग में खेली है हिंदी,
अनुराग–तड़ाग में फूली–फली, विकसी जग राम–कहानी है हिंदी
देश–प्रदेशन साथ चली, अब विश्व के मंच की बानी है हिंदी,।

—डॉ. सर्वदानंद द्विवेदी
सहा. निदेशक, (राजभाषा)
केंद्रीय उत्पाद एवं सीमा शुल्क,
मंगल पांडेय नगर, मेरठ

17. अब मैंने पहचान लिया है

भागोगे अब दूर कहाँ तक, मंजिल को भी जान लिया है।
मेरी परख बने फिरते थे, अब मैंने पहचान लिया है॥
करो पलायन, उदार मन हो, भोग नहीं पाओगे मुझको,
साथ रहोगे—हाथ गहोगे, रोक नहीं पाओगे मुझको।
मैं विराट, मुझको पाने को, तो विराट ही बनना होगा,
और नहीं तो मैंने सारा जीवन मरुस्थल मान लिया है॥
मेरी परख बने फिरते थे, अब मैंने पहचान लिया है।
भागोगे अब दूर कहाँ तक, मंजिल को भी जान लिया है
मेरी परख बने फिरते थे, अब मैंने पहचान लिया है॥
मेरे हिय के भाव बोध को, मेरे बन कर पहचानोगे,
मूर्ति तुम्हीं हो, पूर्ति तुम्हीं हो, दिल में बस कर ही जानोगे।
सिसक–सिसक कर, तड़प–तड़प कर, अर्पित है सर्वस्व सुनो तो,
मैंने अपने उर का अन्तर, केवल तुमको दान किया है॥
मेरी परख बने फिरते थे, अब मैंने पहचान लिया है।
भागोगे अब दूर कहाँ तक, मंजिल को भी जान लिया है।
मेरी परख बने फिरते थे, अब मैंने पहचान लिया है॥

—वी. अरुणा
केंद्रीय अंतर्देशीय जल परिवहन निगम,
4, फेयरली प्लेस, कोलकाता-700 001

18. साँस-साँस चंदन हो जाए

तेरी मन वीणा को साधूं
गीत, मेरा क्रंदन हो जाए
तेरा तन पारस छूँ लूँ तो
यह काया कंचन हो जाए॥

तेरा नेह अंबु पी करके
तपते मन की तृष्णा बुझा लूँ
यह संसार भटकते, मृग-मानस का
नंदन वन हो जाए॥

मूर्त हुआ मेरा अक्षयश्रम
खड़ा भगीरथ याचक बनकर
पतित पावनी कृपादृष्टि कर
पावन तन-मन-धन हो जाए॥

जब भी तेरे अलक-मेघ को
दिनकर निज कर से छू ले तो
इन्द्रधनुप की आभा से
परिपूरित आलिंगन हो जाए॥

तेरे स्वेदविन्दु का पावस
जब बरसे अंतर कानन में
हर धड़कन उपवन हो जाए
साँस-साँस चंदन हो जाए॥

मंगल मिलन प्रखर प्रज्ञा का
हो संपन्न सजल श्रद्धा से
महारास यह महामिलन का
स्थल वृंदावन हो जाए॥

अर्पण कर निज भाव भूमि को
मेरी शब्द-साधना के हित
हर ''घायल'' मन का सारस्वत
राष्ट्रीय चिंतन हो जाए॥

—दिनेश कुमार सिंह ''घायल''
भारतीय स्टेट बैंक
अकबरपुर,
जिला-अम्बेडकर नगर, (उ. प्र.)

19. राष्ट्र जीवन मंगलमय

लोकतंत्र का हृदय अभय हो,
नहीं किसी को किंचित भय हो,
विश्व भय पर करे जागरण
मातृभूमि की नित प्रति जय हो
राष्ट्र जीवन मंगलमय हो ॥

हटे विषमता समता आवे,
मानव मन की कटुता जाये,
प्रेम भाव हो भरा हृदय में।
हो नवीनता, नवीन लय हो।।

हिंसा भागे, अहिंसा जागे,
राष्ट्र कभी भीख न माँगे,
विश्व गुरु बन फिर से उभरे
भारतीय संस्कृति अक्षय हो
राष्ट्र जीवन मंगलमय हो।

अंधकार हट कर प्रकाश हो
जीवन पथ पर नई आशा हो,
मिले रहे हम कभी न बिछुड़े
कितना भीषण कठिन समय हो
राष्ट्र जीवन मंगलमय हो।।

शिक्षा संस्कृति का विकास हो
दरिद्रता का शीघ्र नाश हो,
आत्मोदय हो, मानवोदय हो
सर्वोदय सब का आशय हो
राष्ट्र जीवन मंगलमय हो।

— प्रेम सागर रैना
बेतार चालक स्पेशल ग्रेड
कर्म.सं.-182873-एल
कार्यालय कार्यपालक निदेशक, क्षेत्र-II
विप्पुल सर्कल, बनीखेत, (हिमाचल प्रदेश)

20. शहर के इन जंगलों में

शहर के इन जँगलों में
कौन कहता, हूँ अकेला,
आज भी है साथ मेरे
मधुर यादों का वो मेला।

शहर के इस धुँधलके ने
जिंदगी आगोश कर ली,
चाँदनी की थपकियों से
जुगनुओं ने आँख खोला।

पत्थरों के इस शहर में
लोग भी पथरा गए हैं,
मैं तुम्हारे द्वार पर हूँ
एक भी पत्थर न बोला।

आज दिनकर ने सजीवन
मुस्करा दिन भर बिखेरा,
आज मैं भी आ रहा हूँ
बादलों से चाँद बोला।

पतझरों की हवाओं में
ढूँढ़ता हूँ बहारों को,
वो कभी के चल चुके हैं
आज छत पर काग बोला।

द्वार पर तुलसी के बिरवे
हो गए फिरसे हरे वे,
झुक रहे निज बोझ से
आ रही फिर मधुर बेला।

—कर्नल सुरेन्द्र सिंह ठाकुर
व. गु. आ. अधिकारी
वरिष्ठ गुणता आश्वासन स्थापना(लघु शस्त्र)
अरमापुर, कानपुर (उ. प्र.)

21. कर्तव्य कवि का

जो दिशा नहीं दे पाएं भूलें भटकों को
उन गीतों को मैं गीत तो नहीं मानूंगा,
जो तन से मिलें किंतु नहीं मिलते मन से,
उन मीतों को मैं मीत तो नहीं मानूंगा।

चोली पायल बिंदिया का गीत पुराना है,
गीतों में गीता का संदेश सुनाना है,
जो बने आचरण श्रेष्ठ यहाँ के जन-जन का
कर्तव्य कवि का नई क्राँति को लाना है।

मंचों की कोरी वाह वाही-वाह वाही को
मैं काव्य सृजन की जीत तो नहीं मानूंगा,
जो दिशा नहीं दे पाएं भूले भटकों को,
उन गीतों को मैं गीत तो नहीं मानूँगा।

हम शब्द-शब्द की पीड़ाओं से परिचित हैं
जिनका नहीं कोई हम तो उन्हें समर्पित हैं,
कितनी मीनारें निगल गई झोपड़ियों को
सुख की सेजों के भोग हमें यूँ वर्जित हैं।

जो भेद-भाव के काँटे बोती आयी हो,
ऐसी दुखदाई रीत तो नहीं मानूँगा,
जो दिशा नहीं दे पाएं भूले भटकों को
उन गीतों को मैं गीत तो नहीं मानूँगा।

—गिरीश चन्द्र "पाड़ी अलीगढ़ी"
बैंक ऑफ इंडिया
गाँधी पार्क के सामने आगरा रोड,
अलीगढ़, उ. प्र.

22. फागुन

तन में, मन में, नील गगन में आग बो गया फागुन
महुए के रस में बेसुध बेहाल हो गया फागुन ॥
चंपा कदम चमेली जूही गंधराज कचनार
इतने रूप-रंग भर मालामाल हो गया फागुन ॥
डगर-डगर करते मनमानी भौंरे बांह पसारे
खिलती कलियों के जी का जंजाल हो गया फागुन ॥
सकुचाई-सी खड़ी नीम निर्वसन डोलती कैसे
गोलमुहर में छिप लज्जा से लाल हो गया फागुन ॥
दंदाई मिरजईखींच ली पतझड़ में नटखट ने
बरगद की वृद्धावस्था का काल हो गया फागुन ॥
डगर-डगर, पनघट-पनघट पर, गांव-गांव, वन-वन में
सबका हृदय जला अगिया बैताल हो गया फागुन ॥
गली-गली गा उठी मधुर रस-सिक्त राग मौसम के
होली चाँचर झूमर चैता चौताल हो गया फागुन ॥

—डा. पन्ना प्रसाद
सहायक निदेशक (रा.भा.)
कर्मचारी राज्य बीमा निगम
सर्वोदय नगर, कानपुर (उ. प्र.)

23. राष्ट्रीय एकता

था जहाँ प्यार उसी मोड़ पे आना होगा,
कोई दीवार खड़ी हो तो गिराना होगा ।
एक गुलदस्ते में हम सब हैं सजे सदियों से,
एक ही खुशबू से माहौल बनाना होगा ।
जिन चरागों की लवे पड़ने लगी हों मध्धम,
उन चरागों में लहू अपना जलाना होगा ।
हों तेरे शब्द मेरे होठों पर मुस्काए हुए,
आइना यूं ही ज़माने को दिखाना होगा।
जिंदगी झूठ है सब हीले बहाने करलो,
मौत एक सच है कलेजे से लगाना होगा ।
खेत खलियान में मानवता जहां उगने लगे,
एक ऐसा भी कोई गाँव बसाना होगा ।

—डॉ. अफरोज़ अहमद
—निदेशक
—नर्मदा नियंत्रण प्राधिकरण
जल संसाधन मंत्रालय, बी.जी. 116
योजना क्रमांक 74 सी, विजय नगर
इंदौर—452010

24. मैं आत्मा हूँ

मैं इस नीले आकाश में
एक आज़ाद पक्षी की तरह
आज़ादी से उड़ना चाहती हूँ
मैं आत्मा हूँ ।
मैं अपनी कल्पनाओं से गहरे समुद्र में
एक आज़ाद मछली की तरह
आज़ादी से तैरना चाहती हूँ
मैं आत्मा हूँ ।
मैं इस मनुष्य रूप देह में
मनुष्य को समझने के लिए
मनुष्य बन कर ही वास करती हूँ
मैं आत्मा हूं ।
शरीर महज एक बंधन है
अन्यथा मैं आज़ाद हूँ ।
मैं आत्मा हूँ ।

—नीलम डेविड
प्रशिक्षण अधिकारी
इंडियन ऑयल कारपोरेशन लि.
ए-1, उद्योग मार्ग, सैक्टर-1
नोएडा-201301

25. समय

बीत गया जो समय पुराना, अब तो वह इतिहास बन गया,
कुछ को पीडा गहन दे गया, कुछ का वह मधुमास बन गया
कुछ की चिंता दुःख का कारण, कुछ के मुख का हास बन गया,
कुछ के जीवन का वरदान बन, आते कल की आस बन गया ॥

लोग कहें कुछ कल की सोचो, मैं कहता क्या आज हो रहा,
कल स्वयं ही संवर जायेगा, यदि आज न जीवन जार रो रहा ।
वर्तमान का किया धरा ही, कल की पूँजी बन जायेगा,
आज अगर सुख से बीता तो, कल स्वयं ही सुख पायेगा ॥

बीत गये का रंज न करना, मत करना कल की अभिलाषा,
बीत गया सो बात गयी, और मत रखना कल से अति आशा ।
बीते कल से शिक्षा ले कर, गढना जीवन की परिभाषा,
सुखी रहोगे, समझ गये यदि, जीवन के उँच-नीच की भाषा ॥

—रूप चन्द्र बड़थ्वाल
सहायक अभियंता, दूरदर्शन केंद्र, मसूरी (उत्तरांचल)

26 "तमसो मा ज्योतिर्गमय"

तुम स्वयं अपने लिए
चक्राकार त्रासदी बुन रहे हो ।
सुखों के मोती छोड़कर
दुखों की सीपियाँ चुन रहे हो ।

नियंता तो इस जगत् में—
अच्छा-बुरा सभी कुछ बनाता है
पर, जिसका जितना बर्तन हो
वह उतना ही ले पाता है ।

घेरती हैं तुम्हें छायाएं
और लिपटते हैं प्रतिबिंब
पर, छाया की काया
और प्रतिबिंब के बिंब को
जिस दिन देखोगे
तो जानोगे
कि छाया के मूल में प्रकाश है
नयी सुबह का,
सुखों का विश्वास है ।

प्रतिबिम्ब तो छलावा है
केवल धोखा है, दिखावा है ।
जो सूर्य की संतान हैं
उनके लिए नित्य नया विहान है ।
प्रतिबिम्ब उनकी ओर कभी नहीं ताकता है
छाया का अंधकार उनसे दूर भागता है ।

उठो! सूर्य की संतान बनो,
छाया छोड़कर प्रकाश की किरणें बुनो!
याद है तुम्हें वह पुराना मंत्र
जो ऋषियों ने दिया था,
केवल ग्रंथों में नहीं लिखा,
उसे जी भर कर जिया था—
"तमसो मा ज्योतिर्गमय" ।

उठो! अँधेरे की चादर उतार फेंको
देखो, बाहर कितना उजाला है ।
सुनहरे प्रकाश की किरणों ने
सब कुछ धो डाला है ।

उठो, और उठकर यह प्रण करो
"हम सूर्य के रथ पर सवार होकर जाएंगे
गीत सुबह के, सुखों के गायेंगे" ।
तब, अँधियारा तुमसे दूर भागेगा,
तुम्हें देखकर,
लोगों में यह विश्वास जागेगा
जीवन यूँ ही जिया जाता है,
नियति-सुन्दरी के हाथों
सुख की सुरा का मदमस्त प्याला
यूँ ही पिया जाता है ।

मैं युगों से तुम्हें पुकार रहा हूं ।
प्रकाश के उस देश में
तुम्हारी राह निहार रहा हूं ।
आओ, उस देश में
जहां अंधियारी रात नहीं होती,
जहां जाकर मनुष्य की उमंग कभी नहीं सोती ।

कृष्ण की वंशी और बुद्ध की तपस्या
उसी देश में तुम्हें बुला रही हैं
और दसों दिशाओं में यह स्वर गुँजा रही हैं
"तमसो मा ज्योतिर्गमय
तमसो मा ज्योतिर्गमय
तमसो मा ज्योतिर्गमय" ।

—विजय कुमार शर्मा
वरिष्ठ प्रबंधक - राजभाषा
पंजाब नैशनल बैंक
प्रसाक्ष्यित अग्रिम प्रभाग
प्र. का., भीकाजी कामा प्लेस,
नई दिल्ली-110066

27. कविता नहीं कुरूक्षेत्र

ये शहर
लिजलिजाहट भरे स्पर्शों
और संबंधों का है
ये शहर/अमावस्या में
रोशनी ढूँढते/अंधों का है।
हो सकता है/ये शहर
कुछ न दे आपको
न सांत्वना/न सहानुभूति
न अपनापन/न मरहम
मगर ज़ख़्म न दे/नमक न दे
यह नहीं हो सकता।

पता नहीं/दौड़ती हैं गाड़ियाँ या सड़कें
भागता है आदमी या उम्र
कटता है वक्त या आदमी स्वयं से
ये सोचने से पहले ही
इस शहर का हर बच्चा/जवान हो जाता है
और जवानी/सोचने के लिए नहीं होती
इसलिए हर कोई
अपने बचपन की ओर भागता है ।

बस्तों के बोझ से
छिल गयी हैं/मासूम हथेलियाँ
बच्चे स्कूलों में नहीं
अब यातनागृहों में जाते हैं
जहाँ 'अ' अनार/ 'आ' से आम नहीं
'अ' से अज्ञात/ 'आ' से आतंकवादी पढ़ाया जाता है।

साँझ ढले/जब लौटता है बच्चा
तो चेहरे पर
खेलने की ललक नहीं/दुबकने की दहशत होती है
'गाँधी' 'गांडीव' हो गया है अब
कलम की जगह
हाथों में आ गयी हैं बंदूकें
अब कविता नहीं/कुरूक्षेत्र लिखा जाता है ।

—राजेश श्रीवास्तव
88-डी, सैक्टर डी 2, डी डी ए फ्लैट्स ,
निकट कोंडली मंडी,
मयूर विहार, दिल्ली—110096

28. घरौंदा

मेरे ड्राईंग रूम के फानूस पर
एक चिड़ियों का जोड़ा
आ बैठता है रोज ही आजकल
मुँह में तिनके दबाए
फानूस के पीछे की खाली जगह पर
बना रहा है इक घोंसला
कर रही हूँ मैं निरंतर विफल
इनके इस प्रयास को
विफलताओं के बावजूद
व्यस्त हैं ये अपने कार्य में
बना रहे हैं शायद इक़ घरौंदा ॥

इत्तफाक से तलाश है हमें भी एक घरोंदे की
घर होने की विवशता को
जानती हूँ इसीलिए बहुत अच्छी तरह
तिनका तिनका संजोकर
नींव डलती है जब अपने घर की
खुशियों के दीप जगमगा उठते हैं
कहीं पास ही

सोचती हूँ चलो बन जाए
इस चिड़िया का घर भी
आस है उसे शायद
नव आगंतुकों की ॥

पर मैं नहीं तो, कोई और
छिन्न भिन्न कर देगा इस घर को
तब कहाँ भटकोगी 'ओ चिड़िया'
नवआगंतुकों के साथ
या फिर तोड़ दोगी अपने अंडों को
अपने ही हाथ ॥

ओ 'नादान चिड़िया'
जा कहीं और कर बसेरा
बसा कहीं सुरक्षित जगह पर
अपना घर

काश मैं तुम्हारी और तुम मेरी
समझ पाती जुबान
होता तब एक सन्तोषजनक समाधान
होता तब एक सुखद, सुदृढ़ 'घरोंदे' का निर्माण ।

—इन्दु मल्होत्रा
भारतीय औद्योगिक निवेश बैंक लि./उ. आं. का.,
''जीवन प्रकाश'' 10वां तल, 25 कस्तूरबा गांधी मार्ग,
नई दिल्ली-110001

29. सूनी चौपाल

सूनी है चौपाल देखो सूनी है चौपाल
समय ने बदली चाल, देखो सूनी है चौपाल।
रोग लगा शहर का जबसे
मातम सा रहता तब से
सुख न मिले कभी अब दुख से
दुख न कहे कभी अब सुख से
सहज सरल ने ओढ़ ली जबसे
भूठ कपरट की शाल
देखो सूनी है चौपाल।
राजनीति बस गई गांव में
शीतलता न मिले छांव में
झांझर बजती नहीं पांव में
परदेशी न रमे गांव में
पूछे ना अब कोई यहां पर
एक दूजे का हाल
देखो सूनी है चौपाल।
युवा नकल करें शहर की
सुध न लेते अपने घर की
मुख न देखे कभी पहर की
बनी कहानी यह घर-घर की
आधे-अधूरे शहरी बनकर
करते रहते मलाल
देखो सूनी है चौपाल।

—श्रीमती आशा झा
भारतीय स्टेट बैंक
मुख्य शाखा दुर्ग (छत्तीसगढ़)

30. सार्थकता

दुःख सालता रहे
तो याद रहता है अतीत और जीवन
पारदर्शी बना रहता है यादों के सहारे
यादें जरूरी नहीं
कोमल अनुभूतियों सी हों
कठोर भी तो हो सकती हैं
विसंगतियां, कुंठाएं, यंत्रणाएं
विषमताएं
और भी न जाने कितना ही कुछ
अपने भीतर समेटे रहती हैं यादें
नुकीली, पथरीली, चुभती हुई
वर्तमान में एक नया
हर बार एक नया सोपान देती हैं
जिस पर पाँव टिका कर
बढ़ा जा सकता है आगे की ओर
एक क्षण रुक कर अतीत में कुछ नया
पुराना ढूँडा जा सकता है
शायद यही जीवन की सार्थकता है।

—डॉ. चरनजीत सिंह
प्रबंधक (पंजाबी) पंजाब एंड सिंध बैंक
21, राजेंद्रा प्लेस, नई दिल्ली

31. पहचान

भीड के बन में भले ही गुमशुदा हूं।
मैं मैं हूं, भले ही पानी केरा बुदबुदा हूं॥
काम, क्रोध, मद, मोह तज, मैं बनूं क्यों वीतरागी।
अपने सुख-दुख से जुडा मैं, दूसरों का हूं सहभागी॥

मैं अपने व्यक्तित्व को क्यों कर नकारूं।
दीनता से परमपिता को क्यों पुकारूं॥

सांसों से मुझे है मोह, व्यक्तित्व पर है गर्व।
अन्याय पर आमर्ष, तो कामरस का पर्व॥

किसी के मानस पटल का गीत, स्मित अधर की रेख हूं मैं।
हृदय पर किसी के लिखा, स्नेह का आलेख हूं मैं॥

अवलंब हूं, किसी थके हारे नयन का दीप हूं मैं।
मोतियों को जन्म दे वो सीप हूं मैं॥

मैं अनेकों में बसा हूं, फिर भी मैं सब से जुदा हूं।
भीड के बन में भले ही गुमशुदा हूं॥

मैं असंभव को संभव बना दूं।
गोलियों के सामने सीना तना दूं॥

सिंह के दांत गिन दूं भैरवी राग गा दूं।
और प्रणय के गीत भी मैं गुनगुना दूं॥

पंचशर के शरों को झेलता हूं।
प्रबंझनों की गति से खेलता हूं॥

तय करूं तो इंद्र का आसन हिला दूं।
इस धरा को मैं गगन से मिला दूं॥

और मुझ पर हैं अनेकों आशीष तेरे।
मैं तुझ से अलग कब हूं ओ ईश मेरे॥

तू इश्क है मेरा मैं तेरी अदा दूं।
भीड के बन में भले ही गुमशुदा हूँ॥

—यशपाल

सहायक श्रम कल्याण आयुक्त
यंत्र अनु० एवं विकास संस्थान
रायपुर रोड, देहरादून (उत्तरांचल)

32. आया सावन

रिमझिंम बरसे बादरी, गगन घटा घनघोर,
आया सावन झूम के, नाच उठे सब मोर।
खिल उठी सारी बगिया, महक उठे सब फूल,
बहे सौरभ-समीर जब, मन हिंडोले झूल।
वदन प्रफुलित उमंग से, चक्षु गगन की ओर,
कल-कल करता जल बहे, नहीं मेघ का छोर।
ताल-तलैया लबालब, सभी देखं हरसाय,
पुलकित विहग, ढोर, तरू, कोयल कूक सुनाय।

—महेन्द्र सिंह शेखावत 'उत्साही'

प्रधान लिपिक राजभाषा अनुभाग
मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय
उत्तर पश्चिम रेलवे, जयपुर (राजस्थान)

33. अश्रु झरते

फिसलन ही फिसलन पाई चढ़ती उँचाई में
भय बढ़ता जाता जितना उतरूं गहराई में

सूरज के सब अश्व तेज थे रुके नहीं पल भी,
रातों का कुरूप चेहरा फिर देखूंगा कल भी
उतरे नहीं कबूतर छत, खिड़की, अंगनाई में।

अंधी नीति सभासद बहरे अनुमोदन करते
अभी दशासन जीवित है ये सोच अश्रु झरते
साँसे घुटती रही अदालत की सुनवाई में।

सुविधाभोगी भाग्य सो रहा चीख नहीं सुनता
मैं निर्वासित दलनायक-सा स्वप्न रहा बुनता
घायल सपने आग पी रहे शरद जुन्हाई में।

सभी यहाँ पर चिंतातुर हैं किससे क्या बोलूँ।
भाव अनूठे शून्य हो गए कैसे रस घोलूँ
जहर घुल गया है लगता शीतल पुरवाई में।

—देवेन्द्र कुमार शुक्ल "सफल"

319/ई. एम/ एफ. जी. के
फील्ड गन फैक्ट्री
कालपी रोड, कानपुर—9 (उ. प्र.)

34. प्रागज्योतिषपुर

पर्वतों के बीच कोई गाँव है।
गुवाहाटी ऐसा उसका नाम है।
प्राकृतिक, रम्य है उपवन यहाँ।
औ' यहाँ बहती नदी का धाम है॥

अस्तित्व एकाकार हो जाता यहाँ।
औ' क्षितिज भी पास लगती है यहाँ।
बरसात औ' तूफाँ भी है आते यहाँ।
मिट्टी की भीगी महक का गाँव है॥

समय के उस छोर को कैसे भूलें।
प्रागज्योतिषपुर ऐसा नाम था।
एक केवल नगर है बटवृक्ष का।
औ' यहाँ पेड़ों के कितने नाम हैं॥

मिहिर की पहली किरण छूती यहाँ।
ब्रहमपुत्र नद भी है बहता यहाँ॥
सब समय के साथ हैं चलते यहाँ।
लोग सारे स्वस्थ लगते हैं यहाँ।
लोग सारे चैन से रहते यहाँ॥

—प्रवीण. एन. बलिया

उप प्रबंधक (हिंदी)
गुवाहाटी रिफाइनरी गुवाहाटी (असम)

35. अंधेरों में दीप

पथ यूँही बनते बिगडते रहेंगे।
राही वही हैं जो चलते रहेंगे॥

राहों के हालात का क्या भरोसा।
राहों के पत्थर बदलते रहेंगे॥

भले दौड-ए-मंजिल में गिर क्यों न जाएं।
गिर-गिर के हम तो संभलते रहेंगे॥

लोगों की नीयत का अब जिक्र कैसा।
जहाँ हुस्न देखा फिसलते रहेंगे॥

उजालों में क्या रौशनी की जरूरत।
अँधेरों में ही दीप जलते रहेंगे॥

—केशव मिश्र

उप प्रबंधक (सुरक्षा)
इंडियन ऑयल कार्पो. लिमि.
एल. पी. जी बॉटलिंग प्लांट
धोताने (बुदरूक), पानेवाडी
मनमाड—243104

36. माँ

ममता से भरी है प्यारी-प्यारी
माँ सब से अलग तू सबसे न्यारी।

आँचल में तेरे जग का सुख है
सहती तू मगर सब के दु:ख है
दिल है तेरा कितना कोमल
बातें हैं तेरी कितनी निर्मल
लगता है जैसे फूलों की क्यारी
माँ सब से अलग तू सब से न्यारी।

पैरों में तेरे जन्नत है ओ माँ
छोड़ के तुझको जाऊं मैं कहाँ
हर रूप में तूने प्यार दिया
सुख सपनों का संसार दिया
तेरे बिन सूनी है दुनिया सारी
माँ सब से अलग तू सब से न्यारी।

गंगा की तरह तू पावन है
आँखों में तेरी क्यों सावन है
लोगों ने किसे कब छोड़ा है
टूटे का ही दिल तोड़ा है
झुकते हैं तेरे आगे सब नर-नारी
माँ सब से अलग तू सबसे न्यारी।

—कलीमउल्लाह खान, 'कलीम असर'

महानगर टेलीफोन निगम लि. मुंबई,
9वीं मंजिल, टेलीफोन हाउस, वीर सावरकर मार्ग
दादर (पश्चिम) मुंबई—400028

37. कवि तुझे क्या हो गया है

कवि तुझे क्या हो गया है,
बोल तू कहाँ खो गया है।

किस अनोखी चाह में,
फँसकर है भूला धर्म अपना
किस अधूरी साध के चलते
है खोया मर्म अपना,
विगत की वे मधुर तानें
क्यों नहीं अब छेड़ पाता,
अर्थ लिप्सा में पड़ा तू
बेसुरे क्यों राग गाता,
लेखनी के जादू को,
तेरे बता क्या हो गया है,
बोल तू कहाँ खो गया है।

भारवि, भवभूति था तू
कबीर, तुलसी, सुर था तू
विरहिणी 'मीरा' से चलकर
'महादेवी' सा नूर था तू
प्रसाद की 'कामायनी' में
जग पुन: तूने रचाया,
पंत सा कोमल बना तू
प्रकृति में सबको रमाया,
तू ही था 'दिनकर' 'निराला'
सूर्य सम था तेज पाया,
तोड़ बस छंदों के बंधन
इक ''महा-छंद'' और लाया,
तूने जगती को दिया सब
जो कभी कोई दे न पाया॥

बोल तू कहाँ खो गया है।
अथ से अति बन क्यों गया है
कवि तुझे क्या हो गया है
कवि तुझे क्या हो गया है।

—वीरेन्द्र सिंह रावत,
राजभाषा अधिकारी, विजया बैंक,
क्षेत्रीय कार्यालय, 97, पार्क स्ट्रीट,
कोलकाता-16

38. आकाश परी

मिस चावला थी कल्पना,
साकार होना था जिसे।
इक बालिका के स्वप्न का,
आकार होना था उसे॥

आतुर सदा उड़ने को थी,
अरमान थे उर में भरे।
देखे खुली आंखों से जो,
वह स्वप्न सब पूरे करे॥

अल्प आयु में ही जिसने,
पायीं सब उपलब्धियां।
गौरव दिया निज देश को,
अर्जित कर ऊँचाइयाँ॥

देह एवं देश की सीमा,
कभी मानी ना थी।
विज्ञान का हस्ताक्षर बन,
संतुष्टि जानी ना थी॥

करनाल से कोलंबिया,
ठहरी कहाँ थी वह कभी।
थी साधनारत वह सतत्,
और टूटता तारा बनी॥

अंतरिक्ष के अध्याय का इक,
कांड होना था उसे।
पिंड एक ऐसा थी वह,
ब्रह्माण्ड होना था जिसे॥

थी स्वामिनी व्यक्तित्व की,
आदर्श होना था जिसे।
बन नायिका नव प्रेरणा का,
बीज बोना था उसे॥

वह परी थी आकाश की,
आकाश ही में रह गई।
हैं अंत सुन स्तब्ध सब,
ऐसी कहानी कह गई॥

—अल्केश त्यागी,
पंजीयन पर्यवेक्षक, भारत के समाचार पत्रों के
पंजीयक का कार्यालय, पश्चिम खण्ड 8,
आर०के०पुरम, नई दिल्ली

39. मनुष्य

मैं लड़ता रहा
अस्तित्व की लड़ाई,
मेरे सामने
मेरा अहम खड़ा था,
मेरा विश्वास
ढाल बनकर
अहम से टकराता रहा,
लेकिन अरे !
यह क्या
मेरा ढाल
चकनाचूर हो गया,
मेरा अहम् जीत गया,
मैं अस्तित्वहीन हो गया।
अब, मैं लड़ रहा हूँ
अहम् की लड़ाई,
मेरे सामने समय खड़ा है,
समय की मार से
अहम् खंडित हो गया,
मैं, मैं हो गया।
अब मैं स्वयं से लड़ रहा हूँ,
मेरे सामने मेरी आत्मा खड़ी है,
आत्मा की आवाज से
मैं थरथरा गया हूँ,

मैं भागने लगा, ठोकर लगी, गिर पड़ा
दो हाथों का सहारा मिला,
आंख उठाकर देखा,
मेरी आत्मा !
मैं, मैं न रहा,
मैं मनुष्य हो गया।

—कमल किशोर बडोला,
क० अनुवादक,
क्षेत्रीय रेशम उत्पादन अनुसंधान केंद्र,
केंद्रीय रेशम बोर्ड, सहसपुर,
देहरादून (उत्तरांचल)

40. स्वर्ग सोपान

आकाश कुसुम यह नहीं
धरती के सीने को चीरो
स्वर्ग के सोपान उभरेंगे यहीं पर
पादपों को पत्तियाँ दो
और हरा जंगलों को
नील रहने दो गगन को
छुप रहा कुहेलिका में
है अनिर्णत भाग्य तेरा
सिंधु की लहरें समेटो
पोंछ माथे का पसीना
और धरा पर उँगलियों से
भाग्य की रेखा उकेरो
दो भुजाएँ हैं
दिशाओं को संभालो
धर हथेली पर अकंपित
एक, मिट्टी का दीया
समय का सूर्य पा लिया
फिर सितारे नभ से उतरेंगे जमीं पर
आकाश कुसुम यह नहीं
धरती के सीने में झाँको
स्वर्ग के सोपान उभरेंगे वहीं पर।

—श्रीलाल प्रसाद,
वरिष्ठ प्रबंधक—राजभाषा,
पंजाब नैशनल बैंक, अंचल कार्यालय,
आर ब्लॉक, चाणक्य प्लेस, पटना-800 001

41. आत्मकथ्य

मेरे
अन्त:स्थलरूपी
मखमली नभ की
अनंत-असीम
कोमल-मूक
माणिक्यमयी
स्नेहिल भावनाओं को
धीमे से झंकृत कर
निश्छल-मासूम शब्दों का
बहुरंगी दिव्य इंद्रधनुष
हृदयाकाश पर जब
लगता है जगमगाने;
मन-प्राण पुनः पुनः
हो उठते हैं पुलकित
तब रिमझिम-झरकर
निर्मल मंदाकिनी-सा
मधुमय संगीत
लगता है झनझनाने,
फिर
सजधज क़र अनिंद्य रूपराशि में
किन्हीं झिलमिल शब्दों की,
मन-मयूर
करने लगता है
ज्योतिर्नृत्य
और दुग्ध धवल
शुभ्र ज्योत्सना-सा
मुसकाता है बनकर वह
अंततः एक
जीवंत कविता!

—सुरेन्द्र कुमार,
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक,
महाप्रबंधक का कार्यालय,
भारत संचार निगम लिमिटेड,
तूतीकोरिन-628003(तमिलनाडु)

42. बसंत

बीता था जो साथ तुम्हारे
वो बसंत सौगात हो गया,
टूट गये बंधन सब मन के
रूप रंग मधुमास हो गया

तेरे अधरों का रस जादू
नयनों की नटखट वो भाषा
गीत बन गये जनम-जनम के
प्रीत बनी जीवन की आशा

मेरे मन आंगन में कोई
चौक प्रीत के नये रच गया
बीता था........

गालों पर गुलाल की लाली
सपनों ने आकाश छू लिया
उड़-उड़ जाता मन पंछी अब
पल में जैसे बरस जी लिया
तन-मन रस भीगा है ऐसा
रोम-रोम सिंगार हो गया
बीता था........

गली-गली सब महक गयी है
क्यों वसंत तुम बिन आता है
अब-जब याद तुम्हारी आए
मन कंचन क्यों हो जाता है

भीग गया कण-कण माट्टी का
प्यार यहाँ त्यौहार हो गया
बीता था........

—गिरीश वर्मा,
केंद्र निदेशक, दूरदर्शन केंद्र,
नवलखा चौराहा, ए वी रोड, इन्दौर (म. प्र.)

43. प्रेम की सरिता

बंद करो अब यह बरबरता
बहने दो अब प्रेम की सरिता।

अपने स्वार्थ की ख़ातिर मानव
बनता रहेगा कब तक दानव।

कब तक बँटती रहेगी धरती
सीमा रेखाएं बिगड़ती बनती।

एड्स, सार्स ने देश न देखा
पार की हर सीमा रेखा।

शांति हेतु हों आविष्कार
सारी दुनिया इक परिवार।

सर्व धर्म समभाव हमारा
मानवता ही धर्म हमारा।

वसुधैव कुटुंबकम हमारा नारा
जाति धर्म पर क्यूँ बँटवारा।

—अहमद "मेराज" गोंडवी,
स. कार्य प्रबंधक,
आयुध निर्माणी, अंबरनाथ (महाराष्ट्र)

44. बचपन

कभी याद आता है
बचपन मुझे अपना
वह दिन वह रात
खिलौना सा सपना

धुंधली सी स्मृति
रह गई आज हृदय में
सोचकर अनायास ही
मन पुलकित हो जाता

न कुछ होश, न चिंता
दुनिया से दूर अपना
कभी याद आता है
बचपन मुझे अपना

—शेखर पिल्लै,
उप प्रबंधक (राजभाषा),
भारतीय स्टेट बैंक, आंचलिक कार्यालय,
सूर्यारावपेट, विजयवाडा-520 002

3767 HA/2004- 4A

45. एक डिजाइनर एवं बरमुडा

मैंने बरमुडा को अब बड़े गौर से देखा है।
इसकी रचना में दर्जी की
उत्तर-आधुनिकता की सोच को भी परखा है।

नया-नया दर्जी हो या शौकिया दर्जीगिरी
करनेवाला
ऐसे बेनाप तथा हृदयविदारक
ड्रेस सिलने से पूर्व
सौ-सौ बार सोचेगा।

बड़ी हिम्मत चाहिए साहब
क्योंकि जब तक आप में
सीनाजोरी तथा
जमाने को ठेंगे पर रखने
का जज्बा न हो
तब तक आप ऐसा नहीं कर पाएंगे।

इसलिए बर्दाश्त करता हूँ
और बहुत कुछ चाहते हुए
भी चूं तक नहीं करता हूँ।

क्योंकि बरमुडा की हंसी उड़ाना
पिछड़ेपन की निशानी है;
आज की उत्तर-आधुनिकता
की महफिल में
छायावाद के
पटाक्षेप की कहानी है।

यह कैदियों जैसी
ढीली-ढाली रचना
उत्तर आधुनिकता की
प्रतिनिधि रचना है,
और नंगेपन को सम्मानीय
स्थान दिलवाने का
नंगा प्रयास होते हुए
भी वंदनीय है।

महाशय
पाजामा या पैंट के साथ
परेशानी यह थी कि
इसमें एक निश्चित
परंपरा और विचारधारा जुड़ी थी
नाप, कटिंग, सिलाई
तथा बनावट को लेकर
दर्जीगिरी की एक या
अधिक विचारधाराएं थीं
मोरी तंग हो या बेलबाटम
इस पर दर्जियों तथा
पहननेवालों में
मतभेद तथा बहसें
होती थीं।

परंतु बाकायदा एक
निश्चित विचार के तहत
कपड़े बनते थे।

उस समय लोग
साहित्यिक रचनाओं में
विचार तलाशते थे।

जैसे हर ऐरा-गैरा
पैंट या पाजामा सिलने का
प्रयास नहीं करता था,
क्योंकि बेनाप चीज
बनाने पर उसकी
खिंचाई हो जाती थी
और विचारहीनता का नाड़ा
ऐन साहित्य के बीच बाजार में
खुल जाने से
पाजामा कमर से टपक कर
गिर भी सकता था
तब आप कुछ भी लिख कर
साहित्य नहीं रच सकते थे
कहानी, कविता, उपन्यास
तथा आलोचना में
बाकायदा विचार परंपरा
आदि रहा करते थे
अब बरमुडा की तूती बोल
रही है
अब वे फालतू नहीं रही।

साहित्य अब
आह्लादिक लीला भाव है।

बरमुडा तो उससे भी
आह्लादकारी है।

एक पैर लम्बा है
तो एक छोटा
यह अब दर्जी की

अयोग्यता का सबूत नहीं
बल्कि परंपरा का अतिक्रमण है।

परंपरा रही है कि
दोनों टांगें बराबर हों
बरमुडा उस परंपरा पर
पदाघात करता है
और उत्तर-आधुनिकता
समाज, विवाह, परिवार
और शैक्षणिक संस्था
सबको जड़बद्ध मानकर
उन पर खुला आंक्रमण करता है

साहित्य की तो बात ही क्या
रचना में यह आक्रमण तथा
परंपरा के अतिक्रमण का भाव
विचार, पात्र, शिल्प
शैली, भाषा
सभी दृष्टियों से उभरकर
सामने आता है।

साथ ही
शारीरिक बनावट तथा
शरीर विज्ञान की
कतिपय विशेषताओं
के चलते
पीछे से तो और भी उभरकर
सामने आता है।

अच्छा इतना सुन चुकने के बाद
बताइए
कि बरमुडा आखिर है क्या
और यह कि
उत्तर-आधुनिकता से
आप समझे क्या?
मैं बताएं देता हूं जनाब
यह वस्त्र विन्यास का
विसंरचनावाद है,
यह दिख कुछ रहा है,
है कुछ और एवं
मजा किसी और का दे रहा है।

आपने बरमुडा समझ लिया
तो समझो कि उत्तर-आधुनिकता
को समझ लिया।

यह झोलेनुमा चड्ढी
जिसे हिंदी साहित्य ने
अपनी परंपरावादी टांगों में
डाला है।

वास्तव में यह न चड्ढी है,
न फुलपैंट, न हाफ पैंट न,
पाजामा-यह न जाने क्या है।
यह जादू है, जादुई यथार्थ है।

उत्तर-आधुनिकता का
इतना बड़ा बहुराष्ट्रीय
शोरूम डालने वाले दर्जी
या डिजाइनर गलत थोड़े ही कहेंगे।

उनकी बात मानकर बरमुडा में
आजकल ''दरिदां'' एवं
''जुलिया क्रिस्तोवा'' के
अंतरपाठ तलाश रहा हूं

मूल पाठ से घबड़ाकर
अंतर पाठ की दिशा में
चल रहा हूं

फिलहाल पाजामें को ही
पहन कर घूम रहा हूं।

उत्तर-आधुनिकता-टच देने के लिए
नाड़ा सामने की ओर लटका लिया है
और कमर से ढीला
बांध रहा हूं

ताकि मौके पर फट से
उतार के बता सकूं
कि प्यारे, उत्तर-आधुनिकता
के दुलारे
नंगे हम भी कम नहीं हैं
क्या करूं मजबूर हूं
कि अवसर ही नहीं
मिल पाता।

—सुभाष चन्द्र राय,
उप मुख्य अधिकारी (राजभाषा),
यू को बैंक, प्रधान कार्यालय,
16 ए, ब्रेबोन रोड़
कोलकाता (प. बंगाल)

46. राजभाषा

मेरे वतन की सरजमीं से,
राष्ट्रमाता को सलाम।
आवाज जो देती वतन की,
राजभाषा को सलाम॥
होती हजारों रीत पूजा,
पाठ मजहब के तमाम॥
जो एकता का गान गाती,
राष्ट्रभाषा को सलाम॥

* * *

बोल चाहे हो अनेकों, राजभाषा एक है,
पंथ चाहे हो अनेकों, भावगाथा एक है॥
देशकी इस सरजमीं पर, प्रांत की भाषा कई
एकता का राग गाती, आम भाषा एक है,
ईस, ईसा और मूसा, ध्येय सबका संस्कृति,
बंदगी में हो अलगता, ज्ञानगाथा एक है॥
एक ही चाहत रही, हर हाल में साथी रहें,
ली कसम हमने सभी ने, कार्यभाषा एक है॥
आ रही ललकार कहती, एकतामय बात हो,
गान 'हमदम' के सभी में, राजभाषा एक है॥

—हर्षद. म. पाठक 'हमदम'
चेजर, ई आई एल, वडोदरा क्षेत्र,
होटल सूर्या पैलेस, सयाजी गंज, बडोदरा-390 005

47. हे षड्ज!

हे षड्ज। तुम्हें प्रणाम
तुम्हीं हो रिष गंधार
मध्यम से पंचम तक
मेरे पंचप्राण
और धैवत से निषादतक
मेरे मोक्षधाम—हे षड्ज—
सृष्टि का हर नियम
आदि से अनादि तक
तुम ले चले—
इस पार से उस पार तक
ज्ञात से अज्ञात तक
सूक्ष्म से विराट तक
तुम चल रहे हो—
जिस तरह आकाश में
समय चलता रहे, बहता रहे
या फिर रुक जाए
इक विराट शून्य में
इस शून्य में भी तुम ही हो
तुम तो अचल हो, तुम अमर हो—
आकाश के अवकाश का
तुम ही अनाहत नाद हो
परा-पश्यंति-मध्यमा-वेखरी
वाणी के आधार हो
तुम ही स्वर-तुम ही व्यंजन
तुम ही वाणी-तुम ही अक्षर
मैं ढूंढती फिरती तुम्हें—
प्रणव के ओंकार में, बीन की झंकार में
तानपुरे की गूंज में, हर हृदय की झील में—
हे षड्ज—तुम्हें प्रणाम—तुम्हें प्रणाम!

—सुश्री बलवंत करंदीकर
विशेष सहायक,
इलाहाबाद बैंक, सोहेल इंजीनियरिंग कम्पांउड
लाल बहादुर शास्त्री मार्ग,
भांडुप शाखा,
मुंबई-400078

48. हम जो बचे रहे

इसे संयोग कहें या कुछ और
हम जीवित हैं,
इस सदी के सारे आक्रमण झेलते हुए
आने वाले समय का स्वागत करने
विपदांए चारों तरफ मोर्चा संभाले
ताकती रहती हमें
बचते रहे कैसे उन सबसे
हमें खुद नहीं मालूम
लोग ढहते गए हमारे आस-पास
पार करते गए उन सबको
थके हारे सदी के मुहारे पर खड़े
लड़खड़ाते पावों से
ताकत नहीं देख सकें जो
छोड़ आए पीछे

चकाचौंध चारों तरफ
आने वाली सदी के स्वागत में
कैसा होगा आने वाला कल
कोई जानता है क्या
रूंधे कंठ से गाए
विदा और स्वागत गीत
एक ही लयसुर में
उन सबके लिए
जो आने वाले हैं या
बचे हैं इस पृथ्वी पर

—इलाशंकर गुहा,
केंद्र निदेशक
आकाशवाणी, सागर (म. प्र.)

49. कहां हो प्रभु

दया, करुणा
प्रेम और आत्मीयता से परे
इस उजड़े मुल्क में
अकेला छोड़कर मुझे
मेरे प्रभु! तुम कहां हो?
मेरा जन्म, अपनी ही भूल नहीं
मेरा जीना, पाप और अधर्म से जुड़ना भी नहीं
है तो सिर्फ, तोड़ने पर ही मुरझाए हैं फूल
तुम्हारे चरण में अर्पण न कर सका
लगता है, पाप ही है यह भी
पाप ही पाप के बंजर जमीं पर
फूल, मुझे ही बोने को कहकर
फूल खिलने तक रुकवाकर
अब मुझे ही क्यों तोड़ने को कहते हो, प्रभु?
द्वेष, ईर्ष्या और प्रलोभन का
निरर्थक मोह और मायाजाल का
क्रोध और क्रूरता का
हत्या और हत्यारे का
मांस और कसाइयों का
कसाईखानों से भरपूर इस नगर में
हे प्रभु! तुम क्यों अदृश्य हुए?
यहां मेरा मन-हृदय को दूषित किये जा रहा है,
प्रेम और दया की जड़ में आग लगा रहा है
कभी क्लेश और संकट के
कभी पीर और पीड़ा के
कभी दुःख और कष्ट की अँगीठी में जलाकर
यहां मुझे कठोर यातना दी जा रही है
और मेरे पैर भी न समाने वाली
कंटीली-संकरी गली से ले जाकर
मेरी लाचारी और थकान के प्रति
मेरा मजाक उड़ाते हैं
उस वक्त मेरी अंतरात्मा तुम्हारा ही स्मरण करती है
कहाँ हैं—तुम्हारी क्षमा के कोमल हाथ
और, तुम कहां हो प्रभु?

—वीरभद्र कार्कीढोली
नेपाली से अनूदित : खड्कराज गिरी,
कनिष्ठ लेखाकार,
वित्त विभाग, इंडियन ऑयल का.लि.
(असम ऑयल डिवीजन), पो. डिगबोई,
जिला : तिनसुकिया (असम)

50. धंसा हुआ एक बाण

संसार का दुःख दर्द,
जब फांस की तरह,
धंस जाता है कवि हृदय में
तब लिखी जाती है,
एक सार्थक कविता।
कवि अवचेतन में भरी हुई हैं,
अगणित कविताएं,
जैसे सागर में पड़े होते हैं,
अपरिमित रत्न,
कविताएं प्रवाहित होती रहती हैं,
कवि मानस सलिला में
लेकिन जब कोई अर्जुन,
संधान करता है अचूक,
बाण गंगा की तरह,
कविताओं का प्रवाह,
बहकर आ जाता है बाहर।
इस प्रवाह में एक-एक शब्द,
कवि के रक्त और मांस-मज्जा,
का स्पर्श पाकर ही,
लेता है आकार,

कागज की छाती पर।
क्रोंच पक्षी को लगा था तीर,
तो मर गया था वह,
निश्चिंत हो गयी थी,
पक्षी की आत्मा।
लेकिन बहेलिए का वह बाण,
तब से फंसा हुआ है, कवि की छाती में,
युगों-युगों से।

—राकेश कुमार
अनुवादक
क्षेत्रीय कार्यालय, कर्मचारी राज्य बीमा निगम
पंचदीप भवन, नंदा नगर,
इंदौर, मध्य प्रदेश

51. परछाइयां

परछाइयां
लंबी होती हैं
सुबह की धूप में
फिर सिकुड़ती हैं
दिशाएं बदलती हैं
ज्यों-ज्यों सूरज चढ़ता है
बढ़ता है
बदलता है अपनी दिशा
सूरज के न होने पर
गुम हो जाती हैं परछाइयां
होती हैं पर दिखती नहीं परछाइयां
आओ
हम और तुम भी सीखें
इन परछाइयों से
परछाइयों सा होना
समय के सूरज के साथ
घटना, बढ़ना, छिपना, गुम हो जाना।

—श्रीमती पूनम
वरिष्ठ लेखा सहायक
प० रेलवे, कोटा-324002

52. अपना-अपना भाग्य

अंतस् में छिपाए,
अनेक रहस्य को,
वह कोठी . . .
बिजली के प्रकाश में,
दुलहन-सी सजी थी।

शाम से ही पार्टी चल रही थी,
रात धीरे-धीरे ढल रही थी,
कोठी के बाहर
पत्तलों के ढेर पर
कुत्ते और बच्चे
समवेत झपट रहे थे,
गिरने से पहले ही
अवशेष चट कर रहे थे,
यह बड़ी प्रतियोगिता थी,
जिसके पास योग्यता थी,
वह पा रहा था,
दूसरों को चिढ़ा रहा था।

दस बरस का घीसू
भारत का भविष्य
पाने को हविष्य,
कुत्तों से डरा,
भूख से अधमरा,
एक और खड़ा,
चुप-चुप देख रहा था,
दृष्टि से भेद रहा था,

कार में बैठी
लैप डॉग पप्पी को,
प्यार से बिस्किट खिलाती
औरत ने उसे घृणा से देखा,
एक बिस्किट उसको फेंका।
थोड़ा-सा खाद्य पाकर
आंतें कुलबुलाने लगी थीं,
शोर मचाने लगी थीं,
बिस्किट उसको भा रहा था,
वह और चाह रहा था।

औरत ने फटकारा . . .

भाग यहां से, और नहीं है,
बाप की जागीर नहीं है
बच्चा रुआंसा हो गया,
खिड़की से सटकर खड़ा हो गया
धीरे से बोला · · ·
आंटी आज से
मैं तेरा कुत्ता हो गया।

—डॉ. सुरेन्द्र कुमार शर्मा,
केंद्रीय विद्यालय, आयुध निर्माणी,
रायपुर, देहरादून-248008

53. रे मन! तुझको कैसे समझाऊँ

सोने की चिड़िया कहां गई
कहां खो गई हरियाली है
होली के रंग हैं फीके क्यों
क्यों बुझी-2 दीवाली है

जो हर मन का डर दूर करे
वो भाई-चारा कहां से लाउं! रे मन · · ·

चहुँ ओर कपट का जाल बुना
मक्कारी का अंधियारा है
इस अंधकार में भटक रहा
ये जन-गण-मन बेचारा है
जो रहा दिखा इसे सही
वो उजियारा कहां से लाउं! रे मन · · ·

कहां गुमे संस्कार हमारे
पूरब की संस्कृति कहां गई
था जिस पर नाज हमें सदियों
वो जननी भक्ति कहां गई
जो अमृत रस भरदे हम में
वो जीवन धारा कहां से लाउं? रे मन · · ·

भाई-बन्धु औ रिश्ते-नाते
सब गम के मारे लगते हैं
महंगाई के जबड़ों में फंसे
हर तरह बेचारे लगते हैं
जो इस दुश्वारी को दूर करे
वे तारनहार कहां से लाउं। रे मन · · ·

वो बिम्ब कहां, उपमान कहां
जो कवि मन को भा जाते थे
वो शब्द कहां, वो भाव कहां
जो जन-मन पर छा जाते थे
मन-प्रमुदित हो गाए जिस पे
वो इकतारा कहां से लाउं। रे मन · · ·

—अशोक झा
प्रारूपकार-II, गुणता आश्वासन नियंत्रणालय (शस्त्र)
जी सी एफ डाकघर, जबलपुर-482 011

54. मौन

मन और मस्तिष्क का अंतर्द्वन्द्व
जीवन का खेल है
मैं प्रयत्नशील था
इसे शब्दों में ढाल पाऊं
पर ऐसा हो न सका
एक प्रश्न मूक बन कर रह गया।

मेरे शब्द खो गए
विचार लाचार हो गए
चन्द स्मृतियां शेष हैं,
तुम कहने के बाद मौन हो
मैं कहने से पहले मौन हूं
अवसर आया पर मौन न टूटा
जब बहुत कहना हो तो,
कुछ नहीं कहा जाता
एक प्रश्न मूक बन कर रह गया।

तुम चाहो तो सारी धरा नाप डालो
उस छोर पर जब तुम थक जाओगे
इस मौन को वहीं खड़ा पाओगे,
सारा विश्व तुम्हारे साथ होगा
मेरा यहां कौन है
अकेला नहीं हूं, मेरे साथ
तुम्हारा दिया मौन है।

—राजन कपूर 'राज'
भारतीय पेट्रोलियम संस्थान
पो. आई. आई. पी., मोहकमपुर,
देहरादून-248005

55. पावन संकल्प

आज तुमसे बात करने का बहुत मन है
आस टूटी-प्यास टूटी,
मौन रहते सांस टूटी,
अब चटकने-सा लगा- विश्वास दर्पण है।
आज · · ·

सोचता था मैं कि शापित यक्ष बन कर जी सकूंगा
मैं तुम्हारी याद को शंकर सरीखा पी सकूंगा।
अप्सरा होतीं न होतीं, तुम सती होती न होतीं
यह दु:सह संत्रास की वंशी अधर-धर पी सकूंगा॥
मान टूटा-ज्ञान टूटा,
प्रीति का अनुमान टूटा,
अब पराजित नाग से अभिमन्यु नंदन है।
आज · · ·

मैं न विश्वामित्र-सा था किन्तु तुम तो मेनका थीं
प्यार करने के सिवा शर्तें हमारी और क्या थीं।
मैं सुनो अनिरुद्ध-सा जन्मा तुम्हारे ही लिए था
फिर प्रतीक्षित तुम हमारे स्नेह वासर की ऊषा थी॥
अब न कोई तब न कोई,
प्रीति का मतलब न कोई,
अब हमारी दृष्टि तब से बहुत पावन है॥
आज · · ·

मैं पराशर-सा यहां हूं नाव लाओ मत्स बाला
मैं इसी में हूं उठाओ हाथ मीरा गरल प्याला।
हर परिस्थिति में मिलन के क्षण बुला लेंगे कसम से
आज हम संकल्प की, पीकर चले हैं मस्त हाला॥
शेष बोलो, क्लेश बोलो,
तुम नहीं तारेश बोलो,

यह वचन ही मन वचन से सृष्टि का धन है॥
आज तुमसे बात करने का बहुत मन है॥

—वलीउल्लाह सिद्दीकी 'तारेश'
मुख्य पर्यवेक्षक,
एच.ए.एल. परिवहन वायुयान प्रभाग,
कानपुर (उ. प्र.)

56. 'क' से कर्जा

दिन भर
चिलचिलाती धूप में
कुदाल चलाने के बाद
नाइलोन की रस्सी-सी
उभर आई नसों पर
हाथ फेर 'घुरहू'
ताख पर रखी
स्लेट और पेंसिल उठा
अपनी थकान को
मुस्कराहट का महावर लगा
जल्दी से
सुमेसर मास्टर के
बैठका में पहुंचा
जहां पहले ही
तिलकू, तपेसर और रमेसर
अपने अतीत क़ो
चूना और खैनी के रूप में
अपनी हथेली पर रगड़ रहे थे
और
घुरहू की हमेशा
देर से आने की आदत से
कुढ़ रहे थे
यानी जल्दी
साक्षर होने की चाहत से
लड़ रहे थे
क्योंकि वे जान गए थे
पढ़ाई करना समझदारी है
उन्नति करने की सवारी है
निरक्षरता अभिशाप है
अंगूठा लगाना पाप है
जो कागज पर अंगूठा लगाता है
अपनी आने वाली सन्तानों को
अंगूठा दिखाता है
जो पढ़ना जानता है
अपने नाम को पहचानता है
बड़ा भाग्यशाली है
पढ़ा-लिखा नागरिक
देश का जागरूक माली है
ऐसे ही नागरिकों से
देश महान होता है

सोना-चांदी से नहीं
नागरिकों से देश धनवान होता है
इन सारी सोचों से अलग
घुरहू स्लेट पर
सपने बुन रहा था
'क' से कर्जा
'ख' से खेत
'स' से सूद और
'ज' से जमींदार लिख रहा था।

—मोहन सिंह कुशवाहा
एफ टी-173, अरमापुर इस्टेट, कानपुर-208009

57. औरत

देखो मेरी ओर कि,
एक औरत हूँ मैं।

रक्त मांस की बेजान पुतली नहीं,
सोच और अनुभव का
जीवंत संसार हूं मैं।
मुस्काराओ मेरे साथ क्योंकि,
मेरी गोद में, देवदूत मुस्कराए हैं।

गुनगुनाओ मेरे साथ कि
प्रकृति का प्रथमगीत मेरे द्वारा जन्मे
शिशु ने गाया है।

सृष्टि का रहस्य सिमटा है,
मेरी कोख में, और
प्रकृति का सौन्दर्य फूटा है मेरी देह से।

मेरी देह गंध, मेरे स्पर्श ओर मेरी
थिरकन ने कला और साहित्य रचा

मेरे कारण बदली इतिहास की धारा
मेरी कामना में बहा रक्त, मानव ने किए युद्ध।
मेरे अस्तित्व को बार-बार,
खण्डित करने लगे,

देखो मेरी ओर कि
ईश्वर की ओर से

विश्व को एक वरदान हूँ मैं
हां एक औरत हूँ मैं

—राजेश सिंघी
वेतन लेखा कार्यालय, (अन्य श्रेणी)
सिगनल कोर, रिज रोड, जबलपुर (म. प्र.)

58. काश!

स्मृति पटल पर,
जब-जब अंकित होते हैं वात्सल्यमयी लम्हे,
तो एक पल के लिए खोकर,
आल्हादित हो उठती है यह काया,
इस आस में,
कि उन पुलकित क्षणों में,
पुनः एक बार,
खोकर/डूबकर
इस ब्रह्मांड का संपूर्ण सुख समेट लूं,
पर काश!
यह संभव हो पाता,
मैं रूठता/रोता, ज़िद करता,
सब मुझे मनाते,
बाँहों में उठाते,
मैं तब भी रूठकर कहता,
ला दो चंदा,
पर यह मुमकिन कहां,
कि लौट आएं,
वे बचपन के पल॥

—चंद्रभान जैन,
वरिष्ठ अधीक्षक (स्थापत्य-अभियांत्रिकी)
भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण (इंजि. सिविल)
(राष्ट्रीय विमानपत्तन प्रभाग)
अहमदाबाद विमान क्षेत्र, अहमदाबाद (गुजरात)

59. वक्त

कुछ होकर कुछ न हो पाने की कसक!
निर्विकार रूप से मौन स्वीकृति
का आदान-प्रदान
और दूर देखती सूनी आंखों के
बीच का बढ़ता फासला—
न जाने किस क्षितिज से
सूर्योदय होता है।
मेरी परिभाषा में,
ठहरा हुआ दिन युगों से लंबा होता है,
क्योंकि ठहरा हुआ दिन कुछ मांगता नहीं,
जबकि युग!

मेरे पास वक्त से
सवालात करने का वक्त न था,
क्योंकि मैं वक्त से आगे
निकलना चाहता था।
इसी उधेड़बुन में कब वक्त निकल गया,
कुछ पता ही न चला।

—राकेश कुमार,
सहायक निदेशक (राभा)
ग्रामीण विकास मंत्रालय, नई दिल्ली

60. धनु इंद्र चमके

धुंध की चादर
फटी तो
घास पर हिम-बिंदु चमके।
रात भर
बरसीं अनवरत
ओस की शीतल बदलियाँ
दु:ख-अँधियारा
भगाकर
पुलक से
भर गयी कलियाँ
भ्रमर के
मधुगान में
नव सुरभि के सुख-सिंधु छलके।
तुहिन में
तन-मन भिगोकर
दूब पुलकित हो गयी है
स्वास्थ्य का वरदान देकर
स्वप्न-सुख में
खो गयी है
यह सुखद आशीष पा
मन-गगन पर
धनु-इन्द्र चमके।

—जयनाथ प्रसाद 'सात्विक'

रा. ले. प. (के.) प्रत्यक्ष कर
कार्यालय महालेखाकार (सम्प्र.) II, उत्तर प्रदेश
इलाहाबाद (उ. प्र.)

61. प्रणय

जाने कब कैसे, सब द्वंद्व खो गए
श्याम-नेत्र पंछी स्वच्छंद हो गए
अंतर्वीणा के स्वर वासंती राग
छिटका कपोलों पे बहुरंगी फाग
आरोहावरोह गीत-छंद हो गए
भावों के उपवन में छाया मधुमास
दिशाओं में घिर आई चंदन सुवास
सांसों के सरगम मधुगंध हो गए
पलकों की पांखों का अनबूझ स्पंदन
लहराया डाली का एकरूप तनमन
क्षण में जीवन के अनुबंध हो गए
उठती घटाओं में श्यामल सी गुंजन
सकुचाई कलियों ने फैलाया दामन
पवन झकोरे मकरंद हो गए।

—शाम लाल मेहता,
प्रबंधक (राजभाषा)
पंजाब नेशनल बैंक, अंचल कार्यालय
पीएनबी भवन, सैक्टर-17बी, चंडीगढ़

62. मुट्ठी भर यथार्थ

अंधेरे कमरे में बैठकर देखते हो रोशनी
दुनिया की/और
समझते हो दुनिया तुम्हारी भी सराबोर है, चिरागों से
स्नेहासिक्त आँचल फैलाया है
कदमों तले उनके/और
अपेक्षा करते हो बयारमय वृक्ष-छत्र की/क्या
भूलते नहीं हो हवाओं के रुख के भूगोल को
जीना चाहते हो डूबकर, स्नेह सागर में,
उठना चाहते हो भाव-ज्वारों के साथ/किन्तु
यथार्थ के थपेड़ों की कार्यशैली से
परिचित भी नहीं हो
बहरहाल, क्या
चाहोगे मृग मरीचिकाओं के
विस्तीर्ण क्षितिज तक जाना/या
मुट्ठी भर यथार्थ को पाना

—अरुण निगम,
मंडल कार्यालय, जीवन प्रकाश
19, महात्मा गांधी मार्ग,
इंदौर-452001

63. कंक्रीट का शहर

कंक्रीट के शहर
कंक्रीट के लोग
कंक्रीट भरा जीवन
सब कुछ कंक्रीट का सा लगता है
रेत के ढेर में तब्दील होते अहसास
ईंटों-सी ठोस बनती भावनाओं की दीवारें
चूने-सा सफेद होता लोगों का लहू
क्या इतना सब कुछ
कंक्रीट की एक इमारत के लिए काफी नहीं?
जिसमें चिना जा रहा है हमें रोज़
चढ़ा पलस्तर-दर-पलस्तर
बनने को कंक्रीट की तरह ठोस
जो ढह न सके भावनाओं के किसी तूफान से
बह न सके आंसुओं के किसी सैलाब में।

बृजेश कुमार त्यागी
राज्य सभा सचिवालय
230 संसदीय सौधं, नई दिल्ली-110001

64. कैक्टस

तुम्हारे जाने के बाद
सूखने लगे हैं—गमले के पौधे
फूलों का रंग फीका हो चला है।
बिन पानी हरे हैं
बस, वे—कैक्टस, जिन्हें
रोपा था मैंने तुम्हारी इच्छा के विरुद्ध !
लगता है
आज भी रखते हैं—बदले की भावना,
ये कैक्टस तुम्हारे प्रति।
एक बार लौट के तो देखो
ताम्री गमले से उखाड़ फेंकूंगा
मेरी आत्मा को चूसने वाले,
तमाम कैक्टसी बिरवों को
यकीन मानो।

—पाण्डेय अखिलेश कुमार अरुण
राजभाषा अधिकारी, यूनाइटेड बैंक ऑफ इंडिया,
ओड़िशा-I क्षेत्रीय कार्यालय, भुवनेश्वर-751014

65. बीता हुआ कल

बीता हुआ डरावना कल
एक बुरा सपना है
आँखें खोलो भूल जाओ
आने वाला कल अपना है।
बीता हुआ कल
प्रतीक है दृढ़ निश्चय का
जो पीठ नहीं दिखाता
लौटकर नहीं आता।
बीता हुआ कल
एक सबक है
जो दिखाता है रास्ता
सुनहरे कल का।
बीता हुआ कल
जवानी है उस बूढ़े की
जो पड़ा है घर के किसी कोने में
अवांछित वस्तु की तरह।

—पूनम जालान
बैंक ऑफ इंडिया, जोधपुर शाखा,
जोधपुर (राज०)

66. जो जितना ही गंध लुटाए

इक दिन फुलवारी के फूलों में यह बात चली
कौन बड़ा और कौन छोटा
कौन कली है बहुत भली!
अच्छा सबसे है पलाश,
चिढ़कर चम्पा ने चिल्लाया
सबका राजा अमलतास
गेंदा बोला प्रिय गुलाब हैं
गुलमोहर बोली वह खराब हैं
मगर मोगरा चुप बैठा था
कनेर भी ऐंठा-ऐंठा था।
तभी बाग का माली आया
फूलों को उसने समझाया
बड़ा वही, सबके मन भाए
जो जितना ही गंध लुटाए!

—ओम प्रकाश वर्मा
नर्मदा नियंत्रण प्राधिकरण,
बी.जी. 113, योजना क्रमांक 74 सी,
विजय नगर, इंदौर-452010

67. परहित

आओ मिल कर करें एक रचना
धर्म कोई भी आड़े न आए
नाद झंकृत करें एक ऐसा
रागिनी कोई आड़े न आए
भावना मूर्ति में है किसी की
आस्था क्रूस में है किसी की
पूजते अगन सूरज है कोई
आत्मा ग्रंथ में है किन्हीं की
लेकिन उनमें नहीं है परम तप
चाहे कितनी हम बांग लगाएं
आओ ऐसी करें कल्पना
भावना परहित जाग जाए
आओ मिलकर . . .

—श्रवण प्रसाद नामदेव
छटाई सहायक (वी. सी. आर.),
रेल डाक सेवा, रीवा (म. प्र.)

68. भारत की ललनाएं

समझे न हमें कमजोर, हमारा पड़ोसी देश,
पाँच-पाँच पर भारी पड़ी, वीरांगना कमलेश।

वीरांगना कमलेश, जिसने विश्व को दिखा दिया,
प्राणों की देकर आहुति, भारत का सर ऊँचा उठा दिया।

कम नहीं भारत की ललनाएँ, यह समझ ले संसार,
झाँसी की रानी बन जाती, जब होता खून सवार।

जब होता खून सवार, वो बन जाती हैं महाकाली,
दुश्मन को करती चूर, वार ना जाता खाली।

धन्य-धन्य वह माँ, जन्म दें ऐसी बालाओं को,
नतमस्तक हो करूँ प्रणाम, मैं ऐसी ललनाओं को।

—दिनेश पाठक
अपर पुलिस उप महानिरीक्षक कार्यालय,
ग्रुप केंद्र, के.रि.पु.बल, पल्लीपुरम,
त्रिवेंद्रम, केरल-695316

69. ग़ज़ल

फूल तोड़ें पेड़ काटें कुछ मना है ही नहीं,
इस शहर में जुर्म की कोई सजा है ही नहीं।

चोर हैं या शाह हैं इसका पता कैसे चले,
आपके माथे पे तो ये सब लिखा है ही नहीं।

इन फकीरों का करे ताबीज़ भी कैसे असर,
इन फकीरों के दिलों में तो खुदा है ही नहीं।

ओढ़कर चादर न सोयें तो बताओ क्या करें,
रात लम्बी है औ सूरज का पता है ही नहीं।

दाल रोटी के सिवा कुछ भी न खा पायेगा तू,
छीन कर खाने की तो तुझमें कला है ही नहीं।

—राम अवध विश्वकर्मा
उपमंडल अभियंता (केविल निर्माण),
भारत संचार निगम लि.,
कार्यालय महाप्रबंधक, दूर संचार, जिला ग्वालियर
ग्वालियर (म. प्र.)

70. उठ मनुष्य जाग तू

उठ मनुष्य जाग तू।
कर्म से न भाग तू।
छेड़ दे हर एक पल,
जिंदगी के राग तू।
विचार शक्ति पास है।
प्रहार शक्ति पास है।
फिर तेरी हर सांस में
क्यूं गम भरा निश्वास है।
भर दे राम-रोम में
चैतन्य, शक्ति, आग तू।
उठ मनुष्य जाग तू।
बहार क्या है गा रही।
ये पक्षी क्या सुना रहे।
मनुष्य स्वेद के ये फल,
खेतों में लहलहा रहे।
मदमस्त प्रकृति के संग
नित खेल नया फाग तू।
उठ मनुष्य जाग तू।

नभ का सीना चीर के
धरती पे स्वर्ग को बुला।
मिटा हर एक दुख को
अपने तू दर्द को भुला।
छू ले आसमान पर,
धरा को भी न त्याग तू।
उठ मनुष्य जाग तू।

—आर वी. पान्तावणे
उच्च श्रेणी लिपिक,
पु.के.मं.-III, के.लो.नि.वि.,
तलेगांव, पुणे (महाराष्ट्र)

71. विश्वास बीज अंकुरित कर

समझौते की सीमाओं में,
आशाओं की मिट्टी में,
विश्व बंधुत्व की बगिया में,
प्रेम-पुष्प अंकुरित हो।

सैनिक दल खेतों में,
निशस्त्र निर्भय धरा पूजते,
सीमाओं पर पुष्पों का पहरा,
महक बिखेरते, स्वागत करते।

आयुध शालाओं में हथियार नहीं,
हल और हंसिया हो निर्मित।
श्रमिक पसीना वर्ग भेद धोएं,
राजनीति न हो भ्रमित।

गंगा की लहरों पर,
वीणा फिर हो झंकरित।
पटे धरा वृक्षों से, वृक्ष पक्षियों से।
प्रेम भाव हो अंकुरित॥

—सुनील कुमार चोपड़ा
9 असम राइफल्स
द्वारा—99 सेना डाकघर

72. पत्थर की आवाज़

मूर्तिकार
छेनी को उठा
हथौड़ी को चला
तोड़-फोड़ और
तराश मुझे।
मैं अभी
पत्थर हूं
बेडौल
कुरूप
तेरे हाथों से निखर जाऊंगा।
मूर्तिकार।
न कर सोच विचार,
अपने हाथों का दिखा,
चमत्कार।
मुझ में आकार
बहुत से हैं छिपे,
कोई आकार बना,
मुझ को शाहकार बना,
फूल बना,
मोर बना,
बना मासूम सा बच्चा कोई,
अप्सरा बना या फिर
किसी देवी की मूरत,
कोई भी रूप
बना दे मेरा।
मेरे हर रूप से,
तेरी ही कला झलकेगी।
मैं अगर निखरा,
तो तेरी ही कला निखरेगी।

—एस .पी. जैन
कार्यालय अधीक्षक,
इंडियन आयल कॉरपोरेशन लि.,
उद्योग मार्ग, सैक्टर-1, नोएडा (उ. प्र.)

73. उड़ान

कभी-कभी मन करता है
दूर बहुत दूर मैं जाउँ
दुनिया की इस भीड़भाड़ से
विमुख अकेली हो जाउँ।
छोड़ के घर की चार दिवारी
हरियाली की ओर चलूं
आसमान की छत के नीचे
धरती का बना बिछौना सो जाउँ।
रिश्ते नातों की जकड़न को
तोड़ कर कहीं जाऊँ?
पंख लगाकर पंछी बन कर
दूर गगन में उड़ जाऊँ।
कलकल बहते नदी-झरनों के
संगीत सुरों में खो जाउँ
गहरे समंदर की लहरों में
अपना अस्तित्व तक भूल जाउँ।
जीवन है संघर्ष अगर तो
लड़ कर भी कितना लड़ूँ?
द्वंद्व युद्ध सुख-दुःख का छोड़
शांतिपथ पर चलती रहूँ ..... चलती रहूँ।

—श्रीमती विभा नरहरि शाह,
पंजाब नैशनल बैंक,
महाजन गली, बड़ोदरा (गुजरात)

74. कहां गये तुम

जीवन भर साथ निभाने का वादा कर
पल भर में आँख बचाकर कहाँ गये तुम्हारी!

साल कई बीते
पर बीते ना ये रिश्ते
ऐसी यादों के साथ
छोड़ अकेले हमें
कहाँ गये तुम!

मन भरा है यादों से तुम्हारी
जो मिटाये नहीं मिटते
ओ मेरे प्रिय!
यूँ मिटकर कहाँ गये तुम!

भेद भरी दुनिया में
बीच रास्ते छोड़कर
उड़ गये हो तुम
कहाँ गये तुम!

वेदना ऐसी है हमें
जैसे बिन पानी तीर की
जैसे बिन शशि आकाश की
जैसे बिन जड़ें पेड़ की।

पर जहां भी जाओ तुम
हमारा दिल नहीं भूले तुम्हें
जब तक है जीवन हमारा
हटे नहीं दिल से स्मरण तुम्हारा!

इस धरती पर अधूरे
तुम्हारे सपनों को साकार कर
मिलूँगी मैं तुमसे उस
असीम के दरबार पर॥

—एम. मेरी. क्रिस्टी,
भारी पानी संयंत्र
तूतीकोरन (केरल)

75. सुख और वैभव

सरल आदमी!
सहज जीवन!!
लगती हैं बातें ये कल की
इतिहास बन गई हैं जो
आज के मानव के लिए।

सरल आदमी का
मूल्यांकन होता है मूर्खों में
और जीवन सहज हो
अब किसी को भाता नहीं।

रोमांचक आदमी
रोमांचक जीवन में
दिलचस्पी है सबको।

कोई नहीं पूछता
किसके जीवन में सुख है कितना?
हर कोई ये देखता है
किसके जीवन में वैभव है कितना!!
तैर रहा है वैभव! डूब गया है सुख!!

जो दिखाई दे वही सच
जो न दिखाई दे—है ही नहीं
होड़ लगी है दिखावे की
दौड़ रहे हैं सब
समय और धैर्य कहाँ
सुख की अनुभूति के लिए!

—विक्रम सहानी,
बैंक ऑफ इंडिया,
अहमदाबाद कार्पोरेट बैंकिंग शाखा,
अहमदाबाद (गुजरात)

76. यथार्थ

चेहरों पर झाँकती झुर्रियाँ
दुखभरे नयनों में नीर,
जलता हृदय अंगारों में
जब अपनों से मिले पीर।

वृद्धावस्था की भीषण पीड़ा
परिवारजनों का तिरस्कार,
अपने घर में कुढ़ते हुए
जीवन लगता है धिक्कार।

कल तक जो उंगलियाँ
जिसे पकड़कर चलाती थी,
थककर भी गोद में उसे
रात में जगकर सुलाती थी।

आज कांपती हैं वे उंगलियाँ
नत हो चली वो काया,
अपने ही दूर हो चले
पीढ़ियों के अंतर की माया।

पीढ़ियों के अंतर में तो
बस समझ का ही फेर है,
इस मुकाम तक पहुँचने में तुझे
अभी शायद थोड़ी देर है।

दर्द समझ इन आँसुओं का
वरना फिर पछताएगो,
काल का चक्र तुझे भी,
इस मुकाम पर लाएगा।

—संजय जी. देवरस,
सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया, आंचलिक कार्यालय,
317, एम०जी०रोड, पुणे (महाराष्ट्र)

77. ज्योति पर्व

ज्योति पर्व आता है,
हर वर्ष,
जलते हैं करोड़ों दीप,
छूटते हैं पटाखे बहुत,
पर मन का अंधकार,
होता नहीं दूर।

शायद इसलिए कि,
अंधकार मन का
नष्ट नहीं होता
बाहर के प्रकाश से।

मन का अंधकार
होता उत्पन्न है
लोभ, मोह, कपट,
असंतोष और अज्ञान से।

इसे दूर करने के लिए
पर्याप्त नहीं बिजली और
तेल के दीप,
यह भागता है
सच्चे ज्ञान के
समुचित अनुसरण से।

—तारकेश्वर प्रसाद श्रीवास्तव,
विधि एवं न्याय मंत्रालय (विधायी विभाग),
शास्त्री भवन, नई दिल्ली-110 001

78. आतंक किसी कोख में नहीं पालता

कौन कहता है
भ्रूण हत्या पाप है
चल जाता पता
अगर मां को
पल रहा है
कोख में आतंक
कर देती वो
खुद ही उस
भ्रूण की हत्या
बताओ क्या तुम
ठहरा पाते
उसे दोषी
कह दो उन
वैज्ञानिकों से
किए हैं ईज़ाद
जिन्होंने
भ्रूण जानने के
उपकरण
ईज़ाद करें अब
कोख में
पलने वाले
आतंकवादी भ्रूण
पर कहाँ ..... ?
आतंक किसी
कोख में
नहीं पलता
मां की कोख
तो क्या
मां के साए
से भी दूर
ईर्ष्या -द्वेष की
धरती पर
जहाँ ममता नहीं
घृणा बरसती है

—**संगीता सेठी**
1/242, मुक्ता प्रसाद नगर,
बीकानेर (राज.)

79. कमी ढूंढते रहे

हम उनके नाचने में कमी ढूँढते रहे
वो मेरे आँगने में कमी ढूँढते रहे

चेहरे पे अपने ऐतबार इतना था हमें
हम अपने आईने में कमी ढूँढते रहे

जिस पालने में झूल-झूल कर बड़े हुए
हम अपने पालने में कमी ढूँढते रहे

अपनी कमाई जिनके बीच बाँटता रहा
वो मेरे बाँटने में कमी ढूँढते रहे

बेटी का हाथ थाम लिया बिन दहेज के
सब लोग पाहुने में कमी ढूँढते रहे

वो प्यार के सिखाते रहे हमको मायने
हम उनके मायने में कमी ढूँढते रहे

—**सुधीर साहु,**
राजभाषा अधिकारी,
यूको बैंक, क्षेत्रीय कार्यालय, इंदौर,
380, साकेत नगर, इंदौर-452 018 (म. प्र.)

80. ओ भाषा

ओ भाषा!
मुझे वह अभिव्यक्ति दो
जो फैले, दुनिया के कोने-कोने में
दे सके मूक स्पर्श
किसी विभाषी को।

ओ भाषा!
मेरे शब्दों को वह विस्तार दो
जो जोड़ सके सीमाओं को
तोड़ सके कृत्रिम दीवारों को
पहुँच सके सात समुंदर पार।

ओ भाषा!
मुझे वह शक्ति दो
जहाँ दुर्बलता झांक न सके
सत्य, शिव, सुंदर, निखर आए
मेरी मातृ भूमि पर
परत्व को अपना सके जो
फैला सके संदेश
विश्व बन्धुत्व का ।

—भाष्करानंद त्रिपाठी,
अनुभाग अधिकारी,
महालेखाकार (लेखा एवं लेखा परीक्षा), उत्तरांचल
उत्तरांचल, देहरादून (उत्तरांचल)

81. कर लें होश ठिकाने लोग

किसको चाहें, अपनावें क्यों
खाए, पिए, अघाए लोग
कौन करेगा रखवाली जब
होंगे नहीं सताए लोग।

खेतों, करघों, कारखानों में
जीवन-ज्योति जलाते लोग
उनको लानत और मलामत
देते नहीं अघाते लोग।

किस्मत वाले छल-बल करते
साधु धूनी रमाते योग
लहू जलाते फिर भी शापित
करमजले कुम्हलाए लोग।

सुविधा सगुन सलोने सपने
सुर-सरगम में जीते लोग
सहचर दुखियारे दुर्बल की
ज़िनगी जटिल अकारथ लोग।

बंटवारा दिल का, धड़कन का
हरदम नहीं मनाते लोग
बेगाने, बौड़म, बौराए
कर लें होश ठिकाने लोग।

किसको चाहें अपनावें क्यों
खाएं पिए अघाए लोग
कौन करेगा रखवाली जब
होंगे नहीं सताए लोग।

—श्री नारायण समीर,
केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो, राजभाषा विभाग,
5वां तल, डी विंग, केंद्रीय सदन,
कोर मंगला, बेंगलूर-560034

82. मृत्यु

तुम अटल सत्य हो
जर्जर काया, झूठी माया
सबसे मुक्ति देते हो,
बैर-भाव मिटाते हो
आँसुओं से नहलाकर
फूलों की डोली में बिठाते हो
नरकयातनाओं से मुक्ति देकर
आत्मा को स्वर्ग पहुँचाते हो
दु:खियों के तुम वरदान हो
फिर भी तुम्हारी परछाई से
हम इतना क्यों डरते हैं,
और तड़प-तड़प कर मरते हैं।

—हरिभाऊ गिरपुंजे,
कार्यालयीन सहायक,
अधीक्षक डाकघर कार्यालय,
वर्धा विभाग, वर्धा-442001

83. पोथी

मैं देखने में ललित,
सोचने में विनीत,
सुनने में पसंद,
जानने में ताकत
सब का मिलन हूँ मैं
प्रेरणा या प्रकाश
संस्कार या संदेश
सब कुछ हूँ मैं
जान लो मुझे,
मैं हूँ, अक्षर की माला
अनन्त ज्ञान की आशा
पाठक या पंडित
नौकर या सेनानी
चाहते हैं मुझे
लेते हैं मदद
हाँ! मैं कागज हूँ,

3767 HA/2004—6A

किताब हूँ ग्रंथ हूँ।
सब कुछ हूँ मैं
'पोथी' है मेरा नाम
ना भाषा से परिमित
ना देश से
मगर स्वतंत्र हूँ मैं।
मेरा परिवार पुस्तकागार
हमारा मिलन वहीं पुस्तकालय
इंतजार पाठक का
आपेक्षा शांत की।

—मारपल्लि बालाजी,
पुस्तकालय एवं सूचना सहायक,सिफनेट,
59, एस०एन० चेट्टी स्ट्रीट, रोया पुरम,
चेन्नई-600013

84. समर्पण

अगर तुम बजाओ,
बनूँ साज़ मैं भी
अगर आज गाओ
बनूँ राग मैं भी।

बरसते रहो तुम, यूँ ही मेघ बन कर
तुम चातक बनो मैं, रहूँ स्वाति बन कर
अभी तो घटा में, छुपी चाँदनी है
अभी तो हवा में, बसी रागिनी है

अगर तुम पिलाओ
बनूँ प्यास मैं भी
उन धड़कनों की
बनूँ साँस मैं भी।

अस्तित्व मेरा, निखरने लगा है
ये अब दायरे से, निकलने लगा है
गले चाँद के, चाँदनी मिल रही है
भँवर गुनगुनाएँ, कली खिल रही है

अगर तुम जलाओ
बनूँ दीप मैं भी
जो मोती बनो तुम
बनूँ सीप मैं भी,

कहीं कुछ तो टूटा, हुआ कोई घायल
छुपा चाँद बदली में, होकर के बेकल
ये किसने समेटा, ये किसने संजोया
मधुर राग छेड़ा, बजी किसकी पायल

अगर गुनगुनाओ
रचूँ गीत मैं भी
अगर मुस्कराओ
बनूँ मीत मैं भी।

हमारी कहानी, तुम्हारी कहानी
नहीं आज की है, सदियों पुरानी
हम आते रहे हैं, हम आते रहेंगे
ये जन्मों का बंधन, निभाते रहेंगे

करो तुम प्रतिज्ञा
शपथ ले लूँ मैं भी
करो तुम समर्पण
समर्पित होउँ मैं भी।

—बिमला गुप्ता,
व० ले० परीक्षक, महालेखाकार,
जम्मू (जम्मू-कश्मीर)

85. सांझ एक गाँव की

मकई के दूध भरे
कच्चे सुट्टों से
छिनक-छिनक
छिटकती
सौंधी गंध
बाजरे के खेतों को
फरफराती
अल्हड़ हवा
चक्कर घिन्नी खेलती है
अरहर के साथ
तभी
उतर आता है

परिंदों का झुंड
खेतों की मेड़ों पर
कराह उठती है
मचान
और
गूँजने लगता है
गूफ़ना
आदिवासी बाला के हाथ
धानी चुनर
उतार के
जोगिया रूप धारती
सन की छनकती पायल
भेजती है संदेशा
पिया के नाम
हवा की
हथेली थाम
धीरे-धीरे
उतरने लगती है
सांझ
अमराई पर।
हेरने लगते हैं ठौर
बंदर, बगुले—और
कौओं की पांत
उड़ जाती है
घौंसलों की ओर
घिर आती सांझ
बज उठते झांझ
ताशे और ढोल
ठौर-ठौर गूँजते
गीतों के बोल।

—डॉ. चन्द्र कुमार वरठे,
सहा. केंद्र निदेशक,
दूरदर्शन केंद्र, राजकोट (गुजरात)

86. पक्षी की जिज्ञासा

परख आसमान, मर्म को पहचान
यह कैसी आजादी और कैसी उड़ान।

विष उगलती चिमनियाँ,
मृत होती धमनियाँ,
अभिशाप बना बरदान,

परख आसमान, मर्म को पहचान,
यह कैसी आजादी और कैसी उड़ान।

न बाग रहे, न अमराई
सुरंगे, बारूदी छाई,
जिन्दगी है हैरान

परख आसमान, मर्म को पहचान
यह कैसी आजादी और कैसी उड़ान।

काग कहे, कैसा अबका आंगन,
बिखरता नहीं है, अब माखन,
मयूर नृत्य बिन, कैसा सावन

परख आसमान, मर्म को पहचान,
यह कैसी आजादी और कैसी उड़ान।

झरने, झीलें, तालाब सूख गए, नदियां हुईं वीरान,
बूंद-बूंद को धरती तरसे, खाली है खलियान

परख आसमान, मर्म को पहचान
यह कैसी आजादी और कैसी उड़ान।

अंतिम इच्छा में, हम अपनी टेर सुनाते,
सुन ये इंसान, मतकर नादानी ये नादान,
चलने दे यह मालिक का संविधान,

परख आसमान, मर्म को पहचान
यह कैसी आजादी और कैसी उड़ान।

—सुरेश मिश्र,
इन्स्ट्रूमेंट विभाग, नेपा लिमिटेड,
नेपानगर, जिला खंडवा (म. प्र.)

87. सत्य समय का

तुम चिल्ला नहीं सकते
कोहराम मचा नहीं सकते
तो निश्चित है
तुम सोए हुओं को
जगा नहीं सकते।

लगता है
तुम रोते तो हो
लेकिन चुपके-चुपके
वह भी रात को
परन्तु वह रोना
तुम से
तुम तक ही
रहता है
या अधिक से अधिक
उस अभागे कपड़े तक
जिसे तुम भिगोते हो।

वह रोना
नहीं पहुँच पाता
उस बहरी और
सोयी हुई जमात तक
जिसके हाथों
सौंप दिया है तुमने
अपने भाग्य के
निर्णय को।

वह जमात
यदा-कदा
जागती तो है
लेकिन अपने ही पक्ष में
चंद निर्णय लेकर
फिर सो जाती है
और तुम हर बार
प्रतीक्षारत
लाईन में
वहीं खड़े रह जाते हो
जहाँ खड़े थे।

—बलबीर संधू,
महालेखाकार (ले. एव. हक), पंजाब
चंडीगढ़

88. पहाड़ शांत है

समतल की गरमी
हिमतल की सरदी
हिमालय की शृंखला
प्रकृति की सुंदरता
डगशाई की छावनी
बडोग के सुरंग
चैयल के चिनार
कसौली का दृश्य
बंदरघाटी की ऊँचाई
कुल्लू की टोपी
शैलमालाओं पर बसे गाँव
अंधेरे में घरों से आती रोशनी
खेलती है आँखमिचौनी
लाती है उमंग
दिलाती है स्मृति
किन्नर की मस्ती
दूसरी ओर—
सैलानियों की गाड़ी
आते ही देख
दौड़ते हैं पीछे
बहाते हैं श्रमश्रु
ढोते हैं बोझ
ले जाते हैं
मीलों की ऊँचाई
दहला देता है दिल
शैलों पर ढोते बोझ
पूंछने पर
देते उत्तर
यही हमारी जीविका के हैं साधन
यही है हमारी जिंदगी
फिर भी
है पहाड़ शांत।

—डॉ. रामचन्द्र राय,
विश्व भारती, शांति निकेतन,
पश्चिम बंगाल

89. शब्द साथी हैं

शब्द
आते हैं
जाते हैं
वे
बनते हैं
मिटते हैं
मैं उन्हें
ढालना चाहता हूँ
अपने बनाए सांचे में।
हर बार
पकड़ने को उत्सुक
और उद्धत
सजाने
सपनों के बनाए
महलों में।

जब भी—
खुलती है आँख
मन की
रंगायित ऊर्जा में
वे
थामे मिलते हैं
मेरा हाथ।
कभी मैं जाता हूँ
तो
कभी वे आते हैं
शब्द साथी हैं
नीरवता के,
मेरे होने के।

—डॉ. देवेन्द्र तिवारी,
हिंदी अनुवादक,
चमेरा चरण-II, करियां
एन. एच. पी. सी. लि.
चंबा (हि. प्र.)

हिंदी ही वह भाषा है, जिसमें दो विभिन्न प्रान्तों के लोग आपस में बातचीत कर सकते हैं। यह भारत में सर्वत्र समझी जाती है, क्योंकि इसका व्याकरण भारत की अधिकांश भाषाओं के समान है और इसका शब्दकोश सबकी सम्मिलित संपत्ति है।

—डॉ. गिर्यसन

90. अभिलाषा

मन की तेरी क्या अभिलाषा है, बोल रे मानव बोल आज तू,
हो गई आज क्या तेरी दशा है! बोल रे मानव बोल आज तू।

न चुप रह, कि इससे ज्यादा, तू न अब सह पाएगा,
टूटा जो सब्र का बाँध तो तेरा सब कुछ उसमें बह जाएगा,
अब बोल कि है अवसर, दिल की गाँठों को खेल आज तू।...

दे वाणी मन की अभिलाषा को, काया दे अपनी इच्छाओं को,
मूर्त्त रूप लेंगी तभी, जब दृढ़ कर लेगा इच्छाओं को,
चल बढ़ आगे सामर्थ्यवान!, है सृष्टि में अनमोल आज तू।

विवेक और पुरुषार्थ के बल पर, क्या-क्या न तू कर जाएगा,
पत्थर-युग से है आज यहां, कल अंतरिक्ष को पाएगा,
बढ़ता जा तीव्र गति से पर, मानव मूल्यों को तोल आज तू।

कर रही प्रतीक्षा सृष्टि आज, ऐसे मानव की दृष्टि की,
जो बन प्रणेता नव-मूल्यों का, सदगुण की करे सुवृष्टि भी,
कर दे विराम हर द्वन्द्व का तू, मन-पावन पट को खोल आज तू।

मन की तेरी क्या अभिलाषा है, बोल रे मानव बोल आज तू,
हो गई आज क्या तेरी दशा है! बोल रे मानव बोल आज तू।

—प्रकाश कुमार श्रीवास्तव

क. हि. अनुवादक,
श्रम मंत्रालय, श्रम शक्ति भवन,
रफी मार्ग, नई दिल्ली-1

राजभाषा संबंधी गतिविधियां

(क) विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकें

हिन्दुस्तान प्रीफेब लिमिटेड, मुख्यालय जंगपुरा, नई दिल्ली-110015

श्री हजारी लाल, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक की अध्यक्षता में विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 69वीं बैठक दिनांक 5 जून, 2004 को अध्यक्ष के कक्ष में आयोजित हुई। सर्वप्रथम सचिव, विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति ने बैठक के अध्यक्ष तथा अन्य आगन्तुकों का स्वागत किया। 13 मार्च, 2004 को आयोजित समिति की बैठक के कार्यवृत्त की पुष्टि एवं समीक्षा की गई। अध्यक्ष महोदय ने कहा कि हिंदी में किए जाने वाले कार्यों की समीक्षा प्रत्येक तिमाही पहले की भांति नियमित रूप से की जाए तथा प्रत्येक हस्ताक्षरकर्ता विभागाध्यक्ष देखें कि हिंदी के कार्यों में निरन्तर प्रगति हो रही है। केंद्रीय हिंदी समिति पैरा 5 (मद सं. 3) सं. रा.भा.सं. के प्रतिवेदनों (पांच) पर राष्ट्रपति महोदय के आदेश पैरा 8 (मद सं. 6) तथा संसदीय प्रश्नावली के मदों के अनुपालन की भी समीक्षा की जाए। अध्यक्ष ने कहा कि ''क'' क्षेत्र में भेजे जाने वाले हिंदी के पत्रों की प्रतिशतता में सुधार किया जाए। यह अपेक्षा भी की गई कि वे ''क'' क्षेत्र से अंग्रेजी में प्राप्त पत्रों के उत्तर भी हिंदी में दें। कार्यालय से भेजे जाने वाले मूल पत्रों की संख्या बहुत कम होती है क्योंकि भेजे जाने वाले अधिकांश पत्रादि पत्रोत्तर की श्रेणी में आते हैं। 5 वर्षों में मूल पत्र हिंदी में 90% से अधिक भेजे जाते रहे हैं। सभी मूल पत्र केवल हिंदी में अथवा द्विभाषी में ही भेजे जाएं। उन्होंने ने कहा कि हर प्रकार के पत्राचार जैसे (1) हिंदी में प्राप्त पत्रों के उत्तर हिंदी में, (2) हिंदी में हस्ताक्षरित पत्रों के उत्तर हिंदी में तथा (3) मूल पत्र हिंदी में आदि 100 प्रतिशत पत्र प्रत्येक तीनों मद हेतु हिंदी में भेजे जाएं। मंत्रालय के पत्र क्रमांक ई-11015/6/98-हिंदी दिनांक 10-11-98 के पैरा 6 के अनुरूप हिंदी ज्ञाता कर्मचारियों द्वारा तो अवश्य ही अपना 50% कार्य हिंदी में करना चाहिए। सभी प्रमुख विभागों के विभागाध्यक्ष प्रवीणता प्राप्त व्यक्तियों द्वारा व्यक्तिशः आदेश 1997 की अनुपालन कार्रवाई प्रत्येक तिमाही सूचित करें। अन्य सभी हिंदी में अधिकतर कार्य करें।

वित्त मंत्रालय, आर्थिक कार्य विभाग (बैंकिंग प्रभाग)

बैंकिंग प्रभाग राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 103वीं बैठक बैंकिंग प्रभाग के संयुक्त सचिव (प्रशा.) श्री अमिताभ वर्मा की अध्यक्षता में 26 जुलाई, 2004 को कोलकाता में हुई। इस बैठक में यूको बैंक के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक श्री वी.पी. शेट्टी, इलाहाबाद बैंक के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक श्री ओ.एन. सिंह और युनाइटेड बैंक आफ इंडिया के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक श्री प्रकाश सिंह, यूको बैंक के कार्यपालक निदेशक श्री बी.के. दत्त, भारतीय रिजर्व बैंक के क्षेत्रीय निदेशक श्री बी.के. शर्मा, महाप्रबंधक श्री ललित श्रीवास्तव, महाप्रबंधक (प्रभारी अधिकारी) डा. राजेश्वर गंगवार, महाप्रबंधक (राजभाषा) श्री आर. डी धुर्वे तथा यूको बैंक के महाप्रबंधक श्री सी.आर. घोष सहित सरकारी क्षेत्र के बैंकों और वित्तीय संस्थाओं के उच्च अधिकारियों ने भाग लिया। गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग की ओर से कोलकाता क्षेत्रीय कार्यालय के उप निदेशक (कार्यान्वयन) श्री जी.डी. केसवानी ने बैठक में भाग लिया।

प्रारम्भ में मेजबान बैंक, यूको बैंक के महाप्रबंधक, श्री सी.आर. घोष ने बैठक में उपस्थित सभी अधिकारियों का स्वागत किया। तत्पश्चात् यूको बैंक के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक श्री वी.पी. शेट्टी ने समिति को संबोधित किया और कहा कि यूको बैंक सरकार की राजभाषा नीति के कार्यान्वयन की गति बढ़ाने के लिए प्रयासरत है। जिस तरह बैंकिंग के अन्य क्षेत्रों में बैंक प्रगति कर रहा है, उसी तरह राजभाषा हिंदी के प्रगामी प्रयोग को भी पूर्ण महत्व प्रदान करते हुए आगे बढ़ रहा है। तदनन्तर, उन्होंने पावरप्वांइट द्वारा प्रस्तुतीकरण के माध्यम से यूको बैंक के विभिन्न क्रियाकलापों के साथ-

साथ राजभाषा हिंदी की प्रगति के बारे में भी प्रकाश डाला।

इलाहाबाद बैंक के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, श्री ओ.एन. सिंह ने समिति को संबोधित करते हुए कहा कि राजभाषा हिंदी का प्रश्न केवल संवैधानिक बाध्यता ही नहीं, बल्कि हमारे गौरव के लिए भी महत्वपूर्ण है। उन्होंने राजभाषा हिंदी को प्रौद्योगिकी से जोड़ने, हिंदी का कार्य निष्ठापूर्वक करने आदि पर भी बल दिया। इसके उपरांत युनाइटेड बैंक ऑफ इंडिया के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, श्री प्रकाश सिंह ने समिति को सम्बोधित करते हुए निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति, रोजमर्रा के कार्य में हिंदी का प्रयोग करने एवं हिंदी को सरल बनाने आदि पर विशेष ध्यान देने का आह्वान किया। भारतीय रिजर्व बैंक के क्षेत्रीय निदेशक, श्री वी.के. शर्मा ने अपने संबोधन में हिंदी को सरल एवं सहज बनाने, दैनिक बैंकिंग कार्यों में हिंदी का अधिक से अधिक प्रयोग करने आदि पर विशेष रूप से बल दिया।

समिति के अध्यक्ष एवं बैंकिंग प्रभाग के संयुक्त सचिव (प्रशा.), श्री अमिताभ वर्मा ने कहा कि हिंदी कठिन भाषा नहीं है बल्कि इसे कठिन बना दिया गया है और प्रशासनिक हिंदी अलग बना दी गई है। उन्होंने कहा कि भाषा संस्कृति एवं लोगों को आपस में जोड़ने का माध्यम है। हाल ही में सरकार ने गरीब किसानों का वित्तपोषण करने के लिए कई ऋण योजनाओं की घोषणा की है। इसे अधिक प्रभावी बनाने के लिए बैंकों द्वारा हिंदी या अन्य भारतीय भाषाओं का अधिक से अधिक प्रयोग करना अनिवार्य है। यह हर्ष एवं गौरव की बात है कि इस समय सरकारी क्षेत्र के सभी बैंक और वित्तीय संस्थाएं भारत सरकार की राजभाषा की प्रगति एवं समृद्धि के पथ पर तेजी से अग्रसर हो रही हैं। आधुनिक युग में बैंकिंग क्षेत्र में आर्थिक परिदृश्य तेजी से बदल रहे हैं तथा बैंकों में अधिकांश कार्य कंप्यूटरों द्वारा किये जा रहे हैं। इस नए परिदृश्य में, समय के साथ-साथ राजभाषा हिंदी को भी तेज गति से आगे बढ़ाना होगा। उन्होंने अपने संबोधन में हिंदी से संबंधित विभिन्न रिपोर्टों में तथ्यपरक एवं वास्तविक आंकड़े दिये जाने, संसदीय राजभाषा समिति को दिये गये आश्वासनों को विधिवत् एवं समय पर पूरा किये जाने तथा वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त किये जाने आदि पर भी बल दिया।

भारतीय रिजर्व बैंक के महाप्रबंधक (प्रभारी अधिकारी) डा. राजेश्वर गंगवार ने अपने भाषण में अन्य बातों के साथ-साथ अनुवाद पर निर्भरता कम करने, मूल रूप से हिंदी में अधिक से अधिक काम करने और कोर बैंकिंग सल्यूशन आदि पर बल दिया।

समिति ने सरकारी क्षेत्र के बैंकों में राजभाषा नीति के प्रभावी कार्यान्वयन एवं हिंदी के प्रगामी प्रयोग, कंप्यूटरों के द्विभाषीकरण एवं द्विभाषी डाटा प्रोसेसिंग आदि के क्षेत्र में डा. राजेश्वर गंगवार के महत्वपूर्ण योगदान की सराहना की और उनके सुखद एवं उज्ज्वल सेवानिवृत्त जीवन की कामना की।

अंत में अध्यक्ष महोदय तथा बैठक की बेहतर व्यवस्था आदि के लिए यूको बैंक (मेजबान बैंक) को धन्यवाद देते हुए बैठक की समाप्ति हुई।

कर्मचारी चयन आयोग मुख्यालय की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक

कर्मचारी चयन आयोग (मु.) की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक दिनांक 10-12-2004 को आयोग की सदस्य श्रीमती प्रतिभा मोहन की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई जिसमें आयोग मुख्यालय के अधिकारियों के साथ-साथ कार्मिक एवं प्रशिक्षण विभाग से श्रीमती संयुक्ता अर्जुना, उप-निदेशक (राजभाषा), केंद्रीय सचिवालय हिंदी परिषद के प्रतिनिधि श्री रमेश चन्द्र जोशी तथा क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय, राजभाषा विभाग के अनुसंधान अधिकारी श्री एस. डी. पाण्डेय ने भाग लिया। समिति के सदस्य-सचिव श्री शैलेश कुमार सिंह, सहायक निदेशक (राजभाषा) ने पिछली बैठक में लिए गए निर्णयों पर की गई अनुवर्ती कार्रवाई की जानकारी दी। अध्यक्ष महोदय ने निदेश दिया कि वार्षिक कार्यक्रम के विभिन्न लक्ष्यों को पूरा करने के लिए ठोस प्रयास किए जाएं। उन्होंने प्रशिक्षित आशुलिपिकों/टंककों को बारी-बारी से हिंदी अनुभाग में तैनात करने तथा क्षेत्रीय कार्यालयों में हिंदी पदों के सृजन के संबंध में अपेक्षित कार्रवाई यथाशीर्घ किए जाने के लिए कार्मिक एवं प्रशिक्षण विभाग को अनुस्मारक भेजने तथा विभिन्न अनुभागों के हिंदी पत्राचार में सुधार लाने के लिए उनके निरीक्षण किए जाने का आदेश दिया। उन्होंने समिति की अगली बैठक फरवरी, 2005 में आयोजित किए जाने का निदेश दिया। तदुपरांत अध्यक्ष महोदया के प्रति धन्यवाद ज्ञापिक करते हुए बैठक की कार्रवाई समाप्त हुई।

(ख) राजभाषा कार्यान्वयन समितियों की बैठकें

दूरदर्शन, हैदराबाद

दिनांक 23-7-2004 को केंद्र के निदेशक श्री डी. प्रसाद राव की अध्यक्षता में राजभाषा की कार्यान्वयन समिति की बैठक आयोजित की गई। सदस्य सचिव पी. गायत्री देवी, हिंदी अधिकारी ने बताया कि कार्यालय में राजभाषा अधिनियम की धारा 3(3) का अनुपालन पूर्ण रूप से किया जा रहा है। हिंदी कार्यशाला का आयोजन सितंबर माह में किया गया। अध्यक्ष महोदय ने संतोष व्यक्त किया और कहा कि सभी अनुभागों को एक नोट भेजा जाए ताकि समय पर ही आदेश तथा अन्य कागजात द्विभाषी रूप में जारी किए जा सकें। हिंदी पत्राचार का प्रतिशत बढ़ाने का प्रयत्न किया जाए। चार-चार निम्न श्रेणी लिपिकों को प्रत्येक सत्र में हिंदी टंकण प्रशिक्षण हेतु नामित किया जा सके। कार्यशाला के लिए न केवल प्रशासन एवं लेखा अनुभाग के कर्मचारी बल्कि इस कार्यशाला में कार्यक्रम एवं अभियांत्रिकी अनुभाग के कर्मचारियों को भी नामित किया जाए और कार्यशाला एवं हिंदी दिवस का आयोजन सितंबर माह के बदले अक्तूबर के पहले सप्ताह में रखा जाए तो ठीक होगा क्योंकि हमारे सभी कर्मचारी सितंबर में पुष्कल, दूरदर्शन स्थापना दिवस, ब्रह्मोत्सव तथा अन्य कार्यक्रमों में व्यस्त होंगे और प्रतियोगिताओं आदि में भाग नहीं ले पायेंगे। कार्यशाला एवं हिंदी दिवस के लिए एक अलग से प्रस्ताव प्रस्तुत करें।

कर्मचारी भविष्य निधि संगठन, उप-क्षेत्रीय कार्यालय, बठिंडा

उप-क्षेत्रीय कार्यालय, बठिंडा की बैठक दिनांक 12-8-2004 को श्री पी.आर. मिश्र, क्षेत्रीय भविष्य निधि आयुक्त एवं प्रभारी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। बैठक में पिछली बैठक के कार्यवृत्तों की पुष्टि की गई। समिति द्वारा विचाराधीन तिमाही प्रगति की समीक्षा दिनांक 31-6-2004 को समाप्त तिमाही में जारी पत्राचार का ब्यौरा प्रस्तुत किया। पिछली तिमाही के मुकाबले पत्राचार में बढ़ोतरी हुई है इस पर हर्ष व्यक्त किया गया। समिति सदस्यों ने सर्वसम्मति से निर्णय लिया कि पत्राचार के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए सभी अधिकारियों/कर्मचारियों द्वारा भरसक प्रयास किए गए और मूल रूप से पत्राचार को बढ़ाने के लिए सभी प्राप्त पत्रों की पावती हिंदी में भेजी जाए। विशेष रूप से निजी सहायक क्षेत्र आयुक्त एवं जन सम्पर्क अधिकारी इस कार्य को पूरा करने के लिए प्रयत्न करें। सर्वसम्मति से निर्णय लिया गया कि धारा 3(3) के अनुपालन को सुनिश्चित करने के लिए हस्ताक्षर करने वाले अधिकारी का दायित्व है कि इसका पूर्ण रूप से पालन हो। जारी 3(3) की अवहेलना को गम्भीरता से लिया जायेगा। अध्यक्ष महोदय ने निर्देश दिया कि भविष्य में हाथ से बनाये जाने वाले चैक केवल हिंदी में ही जारी हों, जिस पर अमल किया गया एवं हाथ से बनाए गए चैक हिंदी में ही जारी किए गए। सभी अंग्रेजी एवं हिंदी के पत्रों की पावती हिंदी में भेजी जाए। सभी अधिकारी एवं कर्मचारी हिंदी में मुद्रित मानिक मसौदों का उपयोग करें। वार्षिक कार्यक्रम के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए सभी अधिकारी एवं कर्मचारीगण कम से कम प्रतिदिन एक पत्र हिंदी में लिखें। टाइप प्रशिक्षण के लिए विभागीय व्यवस्था कायम करके प्रशिक्षण प्रारम्भ किया जाए। सभी कार्यशालाओं का आयोजन समयानुसार किया जाए एवं हाथ से बनाए गए चैक शतप्रतिशत हिंदी में हों। इस संबंध में संबंधित अनुभाग उचित कार्रवाई करें।

आकाशवाणी, मुंबई

हिंदी कार्यान्वयन समिति की बैठक दिनांक 13-7-2004 को श्रीमती साधना भट्ट, केंद्र निदेशक की अध्यक्षता में हुई। दिनांक 31-3-2004 को समाप्त तिमाही की बैठक के कार्यवृत्त को सचिव ने पुष्टि हेतु सभी सदस्यों के समक्ष पढ़कर प्रस्तुत किया। सभी सदस्यों ने इसकी पुष्टि की और कहा कि हर तिमाही के लिए एक कनिष्ठ लिपिक को हिंदी टाइपिंग हेतु नामित किया जाए। इस तरह एक के बाद एक कनिष्ठ लिपिक को विभिन्न तिमाही में हिंदी में टाइपिंग हेतु पैनल तैयार किया जाए। उन्होंने एक और इलेक्ट्रानिक टाइपराइटर जिसमें द्विभाषी टाइपिंग की जा सकती है खरीदने के लिए कहा। अध्यक्ष महोदया ने एक बार फिर हिंदी शब्द संख्या रजिस्टर अवलोकनार्थ हेतु समय पर भेजने हेतु कर्मचारियों जिनमें

कार्यक्रम विभाग भी शामिल है के लिए नोटिस जारी करने का आदेश दिया। कंप्यूटर के द्विभाषीकरण के संबंध में अध्यक्ष महोदया ने जल्द से जल्द हिंदी का सॉफ्टवेअर खरीदने पर जोर दिया।

दक्षिण पूर्व रेलवे

क्षेत्रीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 72वीं बैठक दिनांक 27-8-2004 को आयोजित हुई। बैठक की अध्यक्षता महाप्रबंधक, दक्षिण पूर्व रेलवे एवं पदेन अध्यक्ष, श्री रतन राज भंडारी ने की। उन्होंने सभी अधिकारियों का आह्वान करते हुए कहा कि सरकारी कामकाज में हिंदी को बढ़ावा देना हम सबका सामूहिक दायित्व है। किन्तु धारा 3(3) के बारे में हस्ताक्षर करने वाले अधिकारी को द्विभाषीकरण के लिए उत्तरदायी ठहराया जाएगा। उन्होंने इस बात पर प्रसन्नता व्यक्त की कि संसद सदस्यों के पत्रों के जवाब शतप्रतिशत हिंदी में दिए जाते हैं। उन्होंने सबके विचार मंथन के लिए यह प्रश्न रखा कि हम बोलते और सोचते हिंदी में हैं तो लिखने में भी उसी हिंदी को प्रयोग में लाएं जो हम सोच की प्रक्रिया एवं बोलचाल में लाते हैं। उन्होंने कहा कि 4 मंडलों में से 2 मंडल हिंदी भाषी क्षेत्र में आते हैं, उन्हें अधिकांश काम हिंदी में करना चाहिए। माननीय रेल मंत्री जी के भाषाई प्रेम का उल्लेख करते हुए उन्होंने समिति को सूचित किया कि रेल मंत्री जी फाइल पर टिप्पणी हिंदी में लिखते हैं। अत: सभी विभागाध्यक्ष एवं उनके नियंत्रण में कार्य करने वाले अधिकारी भी हिंदी में टिप्पणियां लिखें। उन्होंने सभी का आह्वान किया कि वे राजभाषा के निर्देशों का स्वेच्छा से पालन करें। वरिष्ठ उप महाप्रबंधक एवं मुख्य राजभाषा अधिकारी श्री असित चतुर्वेदी ने समिति को सूचित किया कि विभिन्न विभागों के 31 टेम्पलेट द्विभाषी रूप में तैयार किए गए हैं। समिति के सदस्य सचिव एवं उप मुख्य राजभाषा अधिकारी (मुख्यालय) ने समिति को सूचित किया कि प्रत्येक राजभाषा सहायक प्रत्येक दिन पूर्वाह्न नोडल अधिकारी से मिलकर हिंदी में कार्य करवा रहे हैं तथा इस प्रयास से विभिन्न विभागों के 15 कर्मचारियों को हिंदी में कार्य करने के लिए सक्षम बनाया गया है। मुख्य राजभाषा अधिकारी ने सभी अधिकारियों का ध्यान हिंदी डिक्टेशन दिए गए आंकड़ों की ओर आकर्षित करते हुए कहा कि हिंदी डिक्टेशन की संख्या को बढ़ाए जाने की आवश्यकता है। उन्होंने समिति के सदस्यों को बताया कि उनके फोल्डर में विभागवार हिंदी टाइपिंग एवं हिंदी आशुलिपि जानने वाले कर्मचारियों की सूची रखी गई है तथा वे इन टाइपिस्टों एवं हिंदी आशुलिपिकों की सेवाओं का हिंदी डिक्टेशन की दृष्टि से उपयोग करें।

आकाशवाणी, कोलकाता

राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठक दिनांक 4-8-2004 की केन्द्र निदेशक श्री असीम रेज की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। केंद्र निदेशक व अध्यक्ष महोदय ने उपस्थित सभी सदस्यों का स्वागत किया। अध्यक्ष महोदय की अनुमति से हिंदी अनुवादक श्रीमती शिखा भट्टाचार्य ने पिछले कार्यवृत्त को पढ़कर सुनाया। बैठक में उपस्थित सभी सदस्यों ने कार्यवृत्त की पुष्टि की। केंद्राध्यक्ष ने कहा कि पिछली तिमाही की तुलना में पत्रों की संख्या में गिरावट आई है। अत: सभी संबंधित अधिकारी कृपया इस बात को सुनिश्चित करें कि आगे से हिंदी पत्राचार की संख्या में वृद्धि हो। धारा 3(3) के अंतर्गत सभी कागजात इसी प्रकार द्विभाषी में ही जारी किए जाएं। केन्द्राध्यक्ष ने हर्ष व्यक्त किया कि जुलाई से नवम्बर, 2004 के प्रशिक्षण हेतु केन्द्र से कुल 07 एवं 10 हिंदी प्रवीण एवं प्राज्ञ प्रशिक्षार्थियों को नामांकित किया गया एवं वे नियमित रूप से प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे हैं। साथ ही उन्होंने यह भी सूचित किया कि सत्र जनवरी—मई, 2004 के हिंदी प्रवीण एवं प्राज्ञ में केन्द्र से कुल 05 प्रशिक्षार्थी उत्तीर्ण घोषित हुए।

पूर्वोत्तर रेलवे

मुख्यालय राजभाषा कार्यान्वयन समिति (मुराकास) की तिमाही बैठक दिनांक 7-7-2004 को मुख्य राजभाषा अधिकारी व मुख्य परिचालन प्रबंधक श्री कुलदीप चतुर्वेदी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। इस बैठक में सभी विभागों व विभागेत्तर कार्यालयों के हिंदी सम्पर्क अधिकारी, उप मुख्य राजभाषा अधिकरी के अलावा मुख्यालय के वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी व राजभाषा अधिकारी उपस्थित थे। मुख्य राजभाषा अधिकारी व मुख्य परिचालन प्रबंधक श्री कुलदीप चतुर्वेदी ने अपने अध्यक्षीय सम्बोधन में राजभाषा संबंधी विभिन्न उपलब्धियों की चर्चा करते हुए सभी से हिंदी में ही कार्य करने का आह्वान किया। उन्होंने सभी सदस्यों को हिंदी के प्रति निगरानी रखने का निदेश दिया ताकि आंकड़ों की सत्यता

(ग) नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों की बैठकें

उदयपुर

15 जुलाई, 2004 को बैठक की अध्यक्षता श्री नरेन्द्र कुमार खेराड़ा, निदेशक, खान सुरक्षा निदेशालय, उदयपुर ने की।

संगोष्ठी में ''राजभाषा में मौलिक लेखन और अनुवाद का महत्व'' विषय पर बोलते हुए श्रीमती विनोद कुमारी अडानिया, सहायक केंद्र निदेशक, आकाशवाणी, उदयपुर ने मनुष्य को संवेदनशील एवं चिन्तनशील प्राणी बताया कि जो अपने बुद्धिकौशल द्वारा दूसरों को अपनी अभिव्यक्ति देता है इस हेतु एक सम्पर्क भाषा की आवश्यकता होती है, आज देश में हिंदी प्रमुखता से यह भूमिका निभा रही है। आज देश में 65 प्रतिशत लोक द्विभाषी हैं जिसमें एक भाषा हिंदी ही है। श्रीमती अडानिया ने प्रसिद्ध भाषाविज्ञ श्री विश्वाथ अय्यर द्वारा प्रतिपादित अनुवाद के आठ विभिन्न चरणों पर प्रकाश डालते हुए बताया कि अनुवाद सारगर्भित एवं सम्प्रेषणीय होना चाहिए इसके लिए विषयवस्तु एवं संदर्भ को समझना एवं भाषा में प्रवीणता जरूरी है। अनुवाद शाब्दिक एवं भावार्थ दोनों ही प्रकार के होते हैं किन्तु कार्यालयिक कामकाज में मिश्रित अनुवाद की महती आवश्यकता है। मिश्रित अनुवाद ही सम्प्रेषणीयता की रीढ़ है।

श्री आर.के. जैन, सहायक निदेशक (राजभाषा), कार्यालय मुख्य आयकर आयुक्त, उदयपुर ने बताया कि अनुवाद में दुनिया को छोटे दायरे में लाकर एकतासूत्र में पिरोने की अद्‌भुत सामर्थ्य है। श्री जैन के अनुसार ''एक भाषा में व्यक्त विचारों को दूसरी भाषा के अर्थ या उसके अनुकूल व्यक्त करना ही अनुवाद है''। चिकित्सा, तकनीकी विधि आदि क्षेत्रों में आज अनुवाद का महत्वपूर्ण स्थान है। दूसरी भाषाओं के शब्दों को देवनागरी में यथावत लिखने की अनुमति राजभाषा देती है। अनुवाद मौलिक लेखन की आत्मा है इस हेतु हिंदी के प्रोत्साहन के लिए मौलिक लेखन के साथ-साथ मौलिक चिन्तन भी महत्वपूर्ण हैं। श्री जैन ने उपस्थित सदस्यों का आह्वान किया कि कार्यालयों में सरकारी कार्य अंग्रेजी में करना मानसिक गुलामी का प्रतीक है इसे दृढ़ इच्छाशक्ति से दूर किया जाना चाहिए। नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के अन्य सदस्य कार्यालयों के प्रतिभागियों ने भी संगोष्ठी में अपने विचार प्रस्तुत किए।

समिति की 09 जनवरी, 2004 को सम्पन्न हुई पिछली बैठक के कार्यवृत्त की सर्व-सम्मति से सभी सदस्यों ने पुष्टि की।

बैठक के अंत में समिति के अध्यक्ष श्री नरेन्द्र कुमार खेराड़ा ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि हम राजभाषा हिंदी का ज्यादा से ज्यादा कार्य कर संविधान के दायित्व को निभाएं तथा वार्षिक कार्यक्रम में दर्शाए गए लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु भरसक प्रयास किए जाएं। साथ ही समिति के सभी सदस्यों से निवेदन किया कि वे अपने-अपने कार्यालयों की प्रगति रिपोर्ट सही तरीके से तथ्यगत आंकड़ों के साथ सही रूप में भरकर भेजें ताकि कार्यों का सही आकलन किया जा सके। कार्यालय में हिंदी की अच्छी प्रगति होते हुए भी यदि हम प्रगति रिपोर्ट को सही रूप में प्रस्तुत नहीं करते हैं तो प्रगति रिपोर्ट की उपादेयता खत्म हो जाती है।

देवास

समिति के अध्यक्ष तथा बैंक नोट मुद्रणालय के उपमहाप्रबंधक एवं विभागाध्यक्ष श्री सुमित सिन्हा ने नराकास की 33वीं बैठक की अध्यक्षता करते हुए कहा कि हमारी समिति में लगभग इक्कतीस कार्यालय हैं जिनके कार्य की प्रकृति अलग-अलग है तथा वहां कार्य करने का वातावरण भी अलग-अलग है, इस दृष्टि से भी देवास नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति का महत्व और भी बढ़ जाता है क्योंकि सब को साथ लेकर चलना एक मुश्किल काम है। लेकिन जब हम समिति के कार्यकलापों तथा उपलब्धियों पर नजर डालते हैं तो संतोष होता है कि आप सबके सहयोग से समिति राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन तथा प्रचार प्रसार में अच्छा काम कर रही है। जिसे देखकर कहा जा सकता है कि देवास नराकास का परस्पर तालमेल बहुत सुंदर है।

प्रतिनिधि श्री सरवाही ने सदस्य कार्यालयों की छह माही राजभाषा प्रगति की समीक्षा करते हुए सदस्यों की शंकाओं का समाधान किया तथा उन्हें राजभाषा नीति के वार्षिक कार्यक्रम के अनुसार सरकारी कामकाज में लक्ष्य के अनुरूप कार्य करने के लिए मार्गदर्शन प्रदान किया।

बरकरार रहे। उन्होंने यह भी आग्रह किया कि विभागेत्तर इकाइयों में बैठकें समय से आयोजित की जाएं तथा उनके कार्यवृत्त तथा अन्य हिंदी संबंधी रिपोर्टें समय से राजभाषा विभाग को प्रेषित की जाएं ताकि सभी रिपोर्टें समय से रेलवे बोर्ड भेजी जा सके। बैठक को संबोधित करते हुए उप मुख्य राजभाषा अधिकारी ने निम्नलिखित मुद्दों पर सभी सदस्यों का ध्यान विशेष रूप से आकृष्ट किया। कम्प्यूटरों के माध्यम से अधिकाधिक कार्य हिंदी में सम्पन्न किए जाएं। रेलवे की वेबसाइट को अब डायनमिक फांट में तैयार कराकर लोड कराया जाए ताकि फांट संबंधी अड़चनों के बिना आम जनता इसका उपयोग सुगमतापूर्वक कर सकें। अन्त में मुख्यालय के राजभाषा अधिकारी श्री ईश्वर चन्द्र मिश्र द्वारा सभी उपस्थित सदस्यों के प्रति आभार व्यक्त करने के साथ बैठक समाप्त हुई।

परमाणु, खनिज अन्वेषण एवं अनुसंधान निदेशालय, पश्चिमी क्षेत्र, जयपुर

दिनांक 28 अगस्त, 2004 को परमाणु, खनिज निदेशालय, पश्चिमी क्षेत्र, जयपुर में सम्पन्न हुई राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 44वीं बैठक श्री अजीत कुमार पांडे की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। बैठक में हिंदी प्रशिक्षण की अद्यतन स्थिति पर विचार विमर्श किया। सदस्य ने जानकारी दी कि हिंदी टाइपिंग प्रशिक्षण के निर्धारित लक्ष्य को पूरा कर लिया गया है। हिंदी प्रशिक्षण (भाषा) में 5 कर्मचारियों का नाम, केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान द्वारा संचालित पत्राचार पाठ्यक्रमों में पंजीकृत हो गया है। हिंदी आशुलिपि प्रशिक्षण में कर्मचारियों को नामांकित किया गया है। इसके अतिरिक्त 3 कार्मिकों ने सी.एम.सी.लि. द्वारा संचालित पांच दिवसीय हिंदी कम्प्यूटर प्रशिक्षण प्राप्त किया। जन संपर्क कार्यक्रम के आयोजन हेतु यह निर्णय लिया गया कि व.ख.नि. क्षेत्र के कुछ वैज्ञानिक-गण किसी चुने हुए विद्यालय में जाकर वहां के छात्रों को परमाणु ऊर्जा के शान्तिमय प्रयोग पर व्याख्यान देंगे। सामान्य विषय पर व्यांख्यान माला हेतु यह निर्णय लिया गया कि निम्नलिखित विषयों पर संबंधित विद्वानों को आमंत्रित कर व्याख्यान आयोजित कराए जाएंगे।

1. प्राकृतिक चिकित्सा द्वारा रोगों का निदान
2. तनाव प्रबंधन में ध्यान व योग के प्रयोग

बैठक में मरु-स्मारिका अंक (III) के प्रकाशन पर भी चर्चा की गई, यह निर्णय लिया गया कि हिंदी पखवाड़े में सभी पुरस्कृत रचनाओं को पत्रिका में प्रकाशित किया जाए व वर्ष भर की समस्त गतिविधियों का संक्षिप्त सार भी मय छाया चित्रों के प्रकाशित किया जाए। अन्त में अध्यक्ष महोदय के धन्यवाद ज्ञापन के साथ बैठक समाप्त की गई।

केंद्रीय उत्पाद शुल्क आयुक्त का कार्यालय, तिरुच्चि

दिनांक 28-7-2004 को श्री मैत्यु जॉन, आयुक्त की अध्यक्षता में मुख्यालय, तिरुच्चि के ''बोर्डस कक्ष'' में संपन्न केन्द्रीय उत्पाद शुल्क आयुक्तालय, तिरुच्चि की 30-8-2004 जो समाप्त तिमाही की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक संपन्न हुई। पिछली राजभाषा कार्यान्वयन समिति बैठक के निर्णयों पर की गई कार्रवाई की समीक्षा की गयी। आयुक्त महोदय ने निदेश दिया कि पत्रों को हस्ताक्षर करने वाले अधिकारी भविष्य में यह सुनिश्चित करें कि वे द्विभाषी में ही हो। उपरोक्त पत्रों की एक प्रति उसे प्रयोग करने के निर्देश सहित संबंधित मंडल के नाम सहित सभी मंडलों को भेजी जाए। सितंबर, 2004 में प्रकाशित होने वाल ''कावेरी धारा'' के 21वें अंक के भीतरी आवरण में ''नागरिक अधिकार पत्र'' का हिंदी रूपांतर प्रकाशित किया जाए। राजभाषा नीति के कार्यान्वयन के लिए राजभाषा विभाग द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम 2004-2005 पर चर्चा हुई। अध्यक्ष महोदय की यह राय थी कि मंडल/मुख्यालय के अनुभागों द्वारा प्रयोगार्थ द्विभाषी बनाए गए सभी पत्र नियमित रूप से प्रयोग किए जाएं ताकि वार्षिक, कार्यक्रम में पत्राचार के संबंध में निर्धारित लक्ष्य को प्राप्त किया जा सकता है।

■

इस अवसर पर वर्ष 2003 के राजभाषा पुरस्कार के विजेता कार्यालियों को श्री सिन्हा तथा सरवाही ने चल वैजयंती प्रदान की । केंद्रीय कार्यालय वर्ग में बैंक नोट मुद्रणालय ने प्रथम तथा आयकर कार्यालय ने द्वितीय और बैंक-बीमा वर्ग में भारतीय जीवन बीमा निगम शाखा क्रमांक 2 ने प्रथम तथा यूनियन बैंक ने द्वितीय पुरस्कार प्राप्त किया। पुरस्कार वितरण करते हुए श्री सिन्हा ने कहा कि केवल बेहतर कार्य ही पुरस्कार का पैमाना नहीं होता। बेहतर काम के अलावा उसकी प्रस्तुति बैठकों में नियमितता एवं रिपोर्ट का सही समय पर प्रेषण भी पुरस्कार के लिए जरूरी है। उन्होंने समिति को प्राप्त अखिल भारतीय इंदिरा गांधी राजभाषा पुरस्कार से प्रेरणा लेकर उसी गौरवशाली परम्परा को दोहराने का आव्हान भी किया। इस अवसर पर सितंबर माह में हिंदी दिवस के अवसर पर मनाए जाने वाले संयुक्त हिंदी पखवाड़े की रूपरेखा तैयार की गई तथा इसके लिए उप समिति का गठन करने के अलावा वार्षिक पत्रिका गांधर्व के प्रकाशन पर भी विचार विमर्श किया गया। बैठक में यह जानकारी भी दी गई कि श्री सिन्हाजी के प्रयासों से हाल ही में बीएनपी की द्विभाषी वेब साइट प्रारंभ हो गयी है जिस पर राजभाषा विषयक प्रगति भी उपलब्ध है। बैठक का संचालन समिति के सदस्य सचिव डॉ. आलोक कुमार रस्तोगी ने किया। बैठक में देवास के सभी केंद्रीय कार्यालयों, बैंक, बीमा कम्पनियों तथा केंद्र सरकार के उपक्रमों के वरिष्ठ अधिकारी बड़ी संख्या में उपस्थित थे।

हासन

समिति की 19वीं बैठक एमसीएफ के उप निदेशक डॉ सी.जी. पाटिल, की अध्यक्षता में 28-07-2004 को आयोजित की गई। श्री सी.एच. बसवराजु, वरिष्ठ प्रशासन अधिकारी, एमसीएफ ने बैठक में उपस्थित सभी सदस्यों का स्वागत किया एवं उन्होंने कहा कि नराकास, हासन नगर में राजभाषा के प्रचार-प्रसार में अहम भूमिका निभा रही है। नराकास, हासन के तत्वाधान में वित्तीय वर्ष के दौरान सदस्य कार्यालयों के अधिकारियों/कर्मचारियों को उनके द्वारा हिंदी में किए गए उत्कृष्ट काम के आधार पर नगद पुरस्कार प्रदान किए जाते हैं। उन्होंने सदस्य कार्यालयों से अपने दैनंदिन कार्यों में अधिक से अधिक राजभाषा का प्रयोग करने की अपील की।

डॉ० सी०जी० पाटिल, उप निदेशक, एम.सी.एफ एवं पदेन अध्यक्ष, नराकास ने वार्षिक पत्रिका "मलनाड़ शांतला" के तीसरे अंक के प्रकाशन के लिए सभी सदस्य कार्यालयों को हार्दिक बधाई दी एवं भविष्य में भी ऐसे ही सक्रिय सहयोग के लिए अपील की। उन्होंने सभी सदस्य कार्यालयों से अनुरोध किया कि पत्रिका के चौथे अंक के प्रकाशन के लिए अभी से कार्रवाई शुरू कर दें। उन्होंने आगे कहा कि नराकास, हासन नगर में राजभाषा के प्रचार-प्रसार में अहम भूमिका निभा रही है। जून 29, 2004 के दौरान आयोजित संयुक्त हिंदी संगोष्ठी की सफलता के लिए सभी सदस्य कार्यालयों की सराहना की गई है।

श्री अजय कुमार श्रीवास्तव (का), सहायक निदेशक, रा.भा.वि., बेंगलूर ने हिंदी के प्रगामी प्रयोग से संबंधित स्थिति की समीक्षा की एवं सभी सदस्यों से अनुरोध किया कि वे राजभाषा नीति के अनुपालन को सुनिश्चित करने हेतु भरसक प्रयास करें। राजभाषा अधिनियम की धारा 3(3) के अंतर्गत सभी संकल्प, सामान्य आदेश, नियम, अधिसूचनाएं, प्रशासनिक एवं अन्य रिपोर्ट द्विभाषी रूप में ही जारी की जानी चाहिए। रा.भा. विभाग के प्रतिनिधि ने कहा कि कुछ कार्यालयों में हिंदी पत्राचार का प्रतिशत बहुत ही कम है। उन्होंने आगे कहा कि इस मद में क व ख क्षेत्रों के साथ-साथ ग क्षेत्र में स्थित केंद्र सरकार के कार्यालयों के साथ होने वाले पत्राचार को भी लिया जाना आवश्यक है। इस संदर्भ में भी श्री जनार्दन राव, केंद्रीय उत्पाद कार्यालयों के सहायक आयुक्त ने बताया कि उन्होंने पत्राचार के लिए क व ख क्षेत्र की राज्य सरकारों के साथ होने वाले पत्राचार के आंकड़े नराकास की माँग के अनुसार दिए हैं जिस पर वरिष्ठ प्रशासन अधिकारी, श्री बसवराजु, एमसीएफ ने अनुरोध किया कि राजभाषा विभाग द्वारा स्पष्टीकरण लिखित रूप में सभी सदस्य कार्यालयों को जारी किया जाए ताकि आनेवाली बैठकों में प्रस्तुत की जाने वाली रिपोर्ट में इस मद को शामिल किया जाए। सदस्यों से अनुरोध किया गया कि हिंदी में मूल पत्राचार जारी करने के लिए निर्धारित लक्ष्य को प्राप्त करने हेतु विशेष प्रयास किये जाए एवं सभी सदस्य कार्यालय राजभाषा कार्यान्वयन की दिशा में हुई प्रगति की जानकारी निर्धारित प्रोफार्मा में बैठक से एक सप्ताह पूर्व सदस्य सचिव के पास अनिवार्य रूप से भेजें। हिंदी, हिंदी टंकण प्रशिक्षण की ओर सभी का ध्यान पुनः आकर्षित किया गया एवं सदस्यों से अनुरोध किया गया कि वे इस संदर्भ मे एम.सी.एफ., हासन में उपलब्ध सुविधा का लाभ उठायें।

जम्मू

समिति की छमाही बैठक 29 जून, 2004 को क्षेत्रीय अनुसंधान प्रयोगशाला, जम्मू के कॉन्फ्रेंस हॉल में सम्पन्न हुई। बैठक की अध्यक्षता प्रयोगशाला के वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं नराकास के अध्यक्ष डॉ. एस.एम. जैन ने की।

बैठक में जम्मू स्थित नराकास सदस्य कार्यालयों के लगभग 80 प्रतिशत से अधिक सदस्य उपस्थित थे जिनमें 75 प्रतिशत कार्यालयों के कार्यालयाध्यक्षों ने भाग लिया।

श्री जैन ने कहा, "कि राष्ट्रभाषा की मातृभाषा अहम् भूमिका होती है साथ ही जन सामान्य में सामाजिक, राजनैतिक एवं वैज्ञानिक चेतना को विकसित करने में स्वदेशी भाषा, हिंदी भाषा ही महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर सकती है। आज वैज्ञानिक दृष्टि से जितने भी राष्ट्र उन्नति के पथ पर अग्रसर हुए हैं उनमें अपने देश की भाषा ही उल्लेखनीय रही है उन्होंने यह भी बताया कि जापान, चीन, जर्मनी, फ्रांस, रूस, अमेरिका, ब्रिटेन आदि देशों में विकास एवं वैज्ञानिक चेतना का मूल कारण यही है कि विज्ञान के क्षेत्र में जो जागृति आयी जिसमें उनकी अपने देश की भाषाएं सर्वाधिक महत्वपूर्ण सिद्ध हुईं। डॉ जैन ने वर्तमान परिस्थितियों को ध्यानाकर्षित करते हुए हिंदी कम्प्यूटर के माध्यम से कार्य निष्पादित करने को उपयोगी बताया साथ ही हिंदी को प्रयोजन मूलक बनाने तथा वैज्ञानिक गतिविधियों को आम जनता तक पहुँचाने में हिंदी ही राष्ट्र की समर्थ भाषा है।" उन्होंने वरि. प्रबंधक हिन्दुस्तान पैट्रोलियम कारपोरेशन, जम्मू अतिरिक्त पुलिस महानिदेशक के.रि.पु. बल बनतालाब जम्मू, दि इण्डिया एश्योरेन्स कम्पनी लिमिटेड, शालामार, जम्मू, इलाहाबाद बैंक, पावर ग्रिड कारपोरेशन, जम्मू तथा पंजाब नेशनल बैंक क्षेत्रीय कार्यालय, जम्मू में इस दौरान इन कार्यालयों में हिंदी की प्रगति की दिशा में राजभाषा सम्मेलन/हिंदी कार्यशालाओं का आयोजन बहुत ही बेहतर तरीके एवं उत्साह के साथ किया गया इसके लिए उनकी प्रशंसा व्यक्त करते हुए सराहना की और आगे भी ऐसे राजभाषा सम्मेलन/कार्यक्रम आयोजित करते रहें। जिससे हिंदी की प्रगति सुनिश्चित् हो सके।

अंगुल

दिनांक 20-08-2004 को नालको, प्रद्रावक एवं विद्युत संकुल, नालकोनगर के मानव संसाधन विकास केन्द्र (प्रशिक्षण संस्थान) में आयोजित की गई। बैठक में कार्यालय निदेशक (प्र. व. वि.) तथा नराकास के अध्यक्ष श्री अशोकरंजन राय ने अध्यक्षता की।

सरकारी प्रतिनिधि के रूप में उप निदेशक (कार्यान्वयन), क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय, (दक्षिण-पश्चिम क्षेत्र) कोचीन से श्री घनश्याम तांती भी पधारे थे।

अपने स्वागत संभाषण और विवरण प्रदान में श्री तराई ने नगर राजभाषा कार्यान्वियन समिति के गठन के उद्देश्य को स्पष्ट किया। अपने अध्यक्षीय अभिभाषण में श्री राय ने कहा कि हिंदी भाषा एक दूसरे से जोड़ने में सहायक होती है। श्री राव ने कहा कि हिंदी में काम करना आसान है। इसलिए सभी कर्मचारी को हिंदी सीखना चाहिए। उप निदेशक (कार्यान्वयन) राजभाषा विभाग ने कहा कि संसार की सारी भाषाओं में हिंदी का एक महत्वपूर्ण स्थान है। संपर्क भाषा के रूप में समस्त भारतीय हिंदी को अपनाना जरूरी है। इस बैठक में अंगुल स्थित केंद्र सरकार के कार्यालय, बैंक, इन्श्योरेन्स कंपनी, सार्वजनिक उपक्रमों के प्रमुख उपस्थित थे। बैठक के अंत में सभी को नालको की तरफ से सहभोज में शामिल किया गया था।

रोहतक

आयकर आयुक्त एवं अध्यक्ष, नगर राजभाषा कार्यान्वियन समिति श्री अशोक कुमार अनेजा जी की अध्यक्षता में आयकर भवन, रोहतक के सभा कक्ष में आयोजित की गई।

पिछली बैठक में लिए गए निर्णयों पर अनुवर्ती कार्रवाई में मूल्यांकन समिति के सचिव श्री अशोक कुमार तनेजा, प्रबंधक (रा०भा०), क्षेत्रीय कार्यालय, सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया, रोहतक ने समिति के समक्ष अधोलिखित शील्ड विजेता कार्यालयों के नामों की घोषणा की :—

केंद्रीय सरकार के कार्यालय

1. आकाशवाणी, रोहतक	प्रथम
2. आयकर आयुक्त कार्यालय, रोहतक	द्वितीय
3. नेहरू युवा केन्द्र, रोहतक	तृतीय

बैंक एवं अन्य सरकार उपक्रम

1. सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया	प्रथम
2. पंजाब नेशनल बैंक	द्वितीय
3. ओरियन्टल बैंक ऑफ कामर्स	तृतीय

आयकर आयुक्त कार्यालय की ओर श्री आयकर अधिकारी श्री डी०एस० नाहर ने अपने विचार रखते हुए उल्लेख किया कि उनका यह व्यक्तिगत प्रयास रहता है कि कार्यालय में अधिक-से-अधिक कार्य हिंदी में हो। वह स्वयं भी अपना अधिकांश कार्य हिंदी में ही करते हैं इसके लिए उन्होंने आदरणीय अध्यक्ष महोदय का भी अधीनस्थ अधिकारियों/कर्मचारियों को हिंदी में कार्य करने हेतु प्रेरित करने के लिए धन्यवाद किया।

बैंक एवं अन्य सरकारी उपक्रमों के वर्ग में प्रथम स्थान के लिए क्षेत्रीय कार्यालय सैन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया, रोहतक के वरिष्ठ क्षेत्रीय प्रबंधक श्री के०पी० मल्होत्रा जी ने अपने उद्‌बोधन में सर्वप्रथम सभी का धन्यवाद किया तथा उल्लेख किया कि सेन्ट्रल बैंक आफ इंडिया का यह प्रयास रहता है कि अधिक-से-अधिक कार्य हिंदी में किया जाए। उन्होंने उल्लेख किया हमारा यह प्रयास सिर्फ रोहतक में ही नहीं है वरन् देश की सभी शाखाओं में यह प्रयास रहता है। उन्होंने हिंदी भाषा को आपस में जोड़ने का एक सूत्र बताते हुए उल्लेख किया बैंक की विभिन्न प्रान्तों में स्थित शाखाओं में कार्य करते उन्होंने महसूस किया कि आपस में जोड़ने का हिंदी भाषा से अधिक अन्य कोई साधन नहीं है। उन्होंने पुनः सभी का धन्यवाद करते हुए सभी सदस्य कार्यालयों को अधिक से अधिक कार्य हिंदी में करने के लिए प्रेरित किया।

राजभाषा विभाग के विशेष प्रतिनिधि श्री जसवंत सिंह जी ने अपने उद्‌बोधन में सर्वप्रथम अध्यक्ष महोदय का एवं उपस्थित सदस्यों का बैठक के समय से आयोजन करवाने के लिए आभार व्यक्त किया तथा हर्ष व्यक्त करते हुए उल्लेख किया कि वह पिछले काफी लम्बे समय से रोहतक में इन बैठकों में आ रहे हैं तथा आज वह महसूस कर रहे हैं कि काफी संख्या में कार्यालय प्रमुख एवं वरिष्ठ अधिकारियों ने इस बैठक में भाग लिया है तथा उपस्थिति भी बहुत अच्छी है। उन्होंने यह भी उल्लेख किया कि वह दो दिनों से रोहतक में कई सदस्यों कार्यालयों में स्वयं गए तथा उनके कार्यालय प्रमुखों को मिल कर उन्हें बैठक में आने एवं रिपोर्ट समय पर भिजवाने के लिए अनुरोध कर चुके हैं। उन्होंने यह भी कहा कि हम सबको मिल कर सभी सदस्य कार्यालयों में हिंदी में कार्य करने का एक ऐसा वातावरण तैयार करना चाहिए जिससे कि इस मंच की जानकारी सभी को मिल सके। उन्होंने सुझाव दिया कि कुछ सदस्यों की एक ऐसी समिति बना देनी चाहिए जो माह में एक बार किसी भी कार्यालय में जाकर उस कार्यालय में राजभाषा नीति के बारे में, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के गठन के बारे में, बैठकों के बारे में, रिपोर्ट भिजवाने के बारे में जानकारी उपलब्ध करवा सकें। इसके लिए उन्होंने अपनी सेवाएं भी देने के लिए आश्वासन दिया।

अन्त में उन्होंनें शील्ड विजेता कार्यालयों को भी बधाई दी तथा उल्लेख किया जिन कार्यालयों को इस बार शील्ड नहीं मिली उन्हें भी निराश नहीं होना चाहिए तथा उन्हें भी इस प्रयास करना चाहिए ताकि अगली बार उन्हें भी शील्ड प्राप्त हो सके।

समिति के अध्यक्ष एवं आयकर आयुक्त, रोहतक श्री अशोक कुमार अनेजा जी ने भी अध्यक्षीय उद्‌बोधन सर्वप्रथम नए कार्यालय प्रमुखों का, श्री के०के० गोयल जी, श्री जसवंत सिंह जी का एवं उपस्थित सदस्यों का बैठक में पधारने पर धन्यवाद व्यक्त किया तथा शील्ड विजेता कार्यालयों को बधाई दी। उन्होंने उल्लेख किया कि वह किसी भी अच्छे कार्य की प्रशंसा करने में नहीं हिचकिचाते हैं जिन्होंने अच्छा कार्य किया उन्हें आज सम्मानित किया गया, यह बहुत ही हर्ष का विषय है परन्तु विचारणीय विषय यह भी है कि कुछ कार्यालय अपनी रिपोर्ट तक नहीं भिजवाते हैं तथा न ही इन बैठकों में नियमित रूप से भाग लेते हैं।

कोलकाता (बैंक)

समिति (बैंक), कोलकाता की 37वीं बैठक दिनांक 27-08-2004 को यूनाइटेड बैंक ऑफ इंडिया के कर्मचारी प्रशिक्षण महाविद्यालय, कोलकाता के सम्मेलन कक्ष में सम्पन्न हुई। बैठक की अध्यक्षता नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (बैंक), कोलकाता के संयोजक बैंक युनाइटेड बैंक ऑफ इंडिया के कार्यपालक निदेशक श्री के.एन. पृथ्वीराज ने की। बैठक के शुभारंभ में श्री मृणाल वैश्य, महाप्रबंधक (प्रणाली एवं नीति), यूनाइटेड बैंक ऑफ इंडिया ने बैठक के अध्यक्ष, आमंत्रित अतिथियों तथा सदस्य कार्यालय के प्रमुखों और राजभाषा अधिकारियों का स्वागत करते हुए कहा कि बैंक में हिंदी का प्रयोग जितना अधिक होगा कारोबार में उतनी वृद्धि होगी और देश की अधिकांश जनता के साथ बैंक अपना व्यवसाय बढ़ाने में समर्थ होगा। इसके पश्चात् उन्होंने बैठक के अध्यक्ष महोदय से बैठक की शुरुआत करने के लिए अनुरोध किया।

अध्यक्ष महोदय ने आमंत्रित अतिथियों, सदस्य कार्यालयों से पधारे कार्यपालकों का स्वागत करते हुए कहा कि इस बैठक का उद्देश्य है भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा जारी राजभाषा के कार्यान्वयन से संबंधित विभिन्न विषयों पर चर्चा करना, पारस्परिक अनुभवों का लाभ उठाना तथा राजभाषा के प्रगामी प्रयोग को आगे बढ़ाना। इस उद्देश्य से सभी सदस्य कार्यालयों का सतत् प्रयत्नशील एवं जागरूक होना जरूरी है।

बैठक में उपस्थित आमंत्रित अतिथि श्री जी.डी. केसवानी, उप निदेशक (कार्यान्वयन), क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय, राजभाषा विभाग, पूर्व क्षेत्र, कोलकाता ने कहा कि समिति की बैठक में कार्यालय प्रधान की उपस्थिति जरूरी है। समितियों के माध्यम से सरकारी निदेशों का अनुपालन सुनिश्चित किया जाता है इसलिए यह परिणाम उन्मुख होना चाहिए। उन्होंने स्पष्ट किया कि शाखा में लगे साइन बोर्ड क्षेत्रीय भाषा, हिंदी और अंग्रेजी में लिखे जाएं। प्रशिक्षण कार्यक्रम में हिंदी और अंग्रेजी की मिली-जुली भाषा में प्रशिक्षण दिए जाए तथा प्रशिक्षण की सामग्री हिंदी में तैयार की जाए।

श्री श्यामलाल सिंह पूर्ति, उप निदेशक (पूर्व), हिंदी शिक्षण योजना ने कहा कि कोलकाता में हिंदी, हिंदी टंकण तथा आशुलिपि के नियमित प्रशिक्षण केंद्र हैं, उन केंद्रों में नियमित प्रशिक्षण चल रहा है। उन्होंने समिति के सदस्यों से प्रशिक्षण के लिए शेष कर्मचारियों को नामित करने के लिए अनुरोध किया।

अंत में संयोजक बैंक के राजभाषा प्रभाग के उप मुख्य अधिकारी श्री साइब पात्र द्वारा धन्यवाद ज्ञापन के साथ बैठक समाप्त हुई।

डिब्रूगढ़ (असम)

24-08-2004 को होटल लिटिल पैलेस, डिब्रूगढ़ में सम्पन्न हुई। बैठक की अध्यक्षता श्री एस.के. तनेजा (आई.टी.एस.) अध्यक्ष, न. रा. का. स., डिब्रूगढ़ एवं महाप्रबंधक दूर-संचार, भारत संचार निगम लिमिटेड, डिब्रूगढ़ ने की।

तिमाही प्रगति रिपोर्ट के विभिन्न मदों पर चर्चा के दौरान श्री बी.एन. प्रसाद उप निदेशक (कार्या.) ने सुझाव दिया कि तिमाही प्रगति रिपोर्ट की प्रति अपने मुख्यालयों के साथ-साथ अध्यक्ष, न.रा.का.स. एवं क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय, गुवाहाटी को भी निश्चित प्रेषित करना है। अधिकारियों और कर्मचारियों को हिंदी का प्रशिक्षण के सम्बन्ध में उन्होंने आग्रह व्यक्त किया कि प्रत्येक कार्यालयों में कार्य साधक ज्ञान प्राप्त करने हेतु शेष अधिकारियों/कर्मचारियों को सरकार द्वारा यथा निर्धारित समय सीमा (दिसम्बर, 2005) के अन्दर हिंदी में प्रशिक्षण सम्पूर्ण करना सुनिश्चित करें।

मुख्य अतिथि श्री बी.एन. प्रसाद, उपनिदेशक (कार्या.) ने अपने भाषण में सभी अधिकारियों और कर्मचारियों को डिब्रूगढ़ नगर स्थित सभी केंद्रीय सरकारी कार्यालयों में हिंदी का वातावरण लाने का आह्वान किया। साथ ही साथ समय पर हिंदी प्रगति रिपोर्ट भेजना, राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक आयोजित करना, हिंदी कार्यशालाओं का आयोजन करना, आदि का सुझाव दिया। इससे संबंधित कठिनाईयों को दूर करने के लिए क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय, गुवाहाटी और हिंदी शिक्षण योजना, डिब्रुगढ़ के हिंदी प्राध्यापक के साथ संपर्क करने को कहा।

श्री सुरेन्द्र कुमार तनेजा, अध्यक्ष, न.रा.का.सं. एवं महा प्रबंधक दूर संचार (भारत संचार निगम लिमिटेड) डिब्रूगढ़ ने अपने भाषण में उपस्थित सदस्यों एवं विशेषकर, मुख्य अतिथि महोदय को बैठक के आयोजन में दिये उचित मार्ग दर्शन के लिए व्यक्तिगत धन्यवाद व्यक्त किया। साथ ही उन्होंने कहा कि अगर कार्यालय प्रमुख चाहे तो सभी कार्यालय में राजभाषा हिंदी का कार्यान्वयन में कोई कठिनाई नहीं है; क्योंकि हिंदी बहुत ही सरल भाषा है। यहां के स्थानीय भाषा असमीयां के साथ हिंदी भाषाओं का बहुत समानताएं हैं। असमीयां भाषी आसानी से हिंदी समझ लेते हैं और बोल भी सकते हैं। थोड़ी कोशिश करने पर कार्यालयीन कार्य भी हिंदी में करने में सक्षम होंगे। आपने आगे की कार्यवाही के लिए सभी कार्यालय प्रमुखों की सहायता की आशा करते हुए राजभाषा हिंदी की प्रगति की उम्मीद के साथ अपना भाषण समाप्त किया।

रायपुर (छ. ग.)

दिनांक 07 जुलाई, 2004 को होटल आदित्य में समिति अध्यक्ष एवं सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया, केंद्रीय कार्यालय, मुंबई के महाप्रबंधक (राजभाषा) श्री घनश्याम गुप्ता की अध्यक्षता में आयोजित की गई। श्री सुनील सरवाही उपनिदेशक (कार्यान्वयन) क्षेत्रीय कार्यान्वयन, कार्यालय, भोपाल बैठक में मुख्य अतिथि थे।

अपने अध्यक्षीय उद्बोदन में श्री घनश्याम गुप्ता, समिति अध्यक्ष ने कहा कि "साथियो मुझे इस बात की हार्दिक प्रसन्नता है कि नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, रायपुर को भारत सरकार, गृह मुत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा तृतीय पुरस्कार प्रदान किया गया है। इस पुरस्कार के लिए हम आपको हार्दिक बधाई देते हैं, क्योंकि यह उपलब्धि समिति के सदस्य के रूप में आपके सक्रीय सहयोग का ही परिणाम है। हम आशा करते हैं कि भविष्य में भी इस समिति को आपका पूर्ण सहयोग एवं रचनात्मक योगदान प्राप्त होता रहेगा और हम इस समिति को मध्य क्षेत्र की ही नहीं अपितु भारत की अन्य समितियों के बीच अग्रणी स्थान दिलाने में सफलता प्राप्त करेंगे। समिति की बैठकों एवं अन्य गतिविधियों से मैं बराबर जुड़ा रहा हूँ। मेरा प्रयास रहा है कि समिति के तत्वाधान में सरकार की राजभाषा नीति की अपेक्षाओं को पूरा किया जाये। मित्रों, भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग ने हमें यह जिम्मेदारी सौंप रखी है कि रायपुर स्थित सभी बैंकों में भारत सरकार की राजभाषा नीति का सही ढंग से पालन हो तथा सभी बैंकों में हिंदी का प्रयोग बढ़े। इसी की समीक्षा करने तथा हिंदी के प्रयोग को बढ़ाने हेतु नई कार्य योजना बनाने के लिए छ: माह में इस बैठक का आयोजन किया जाता है। विभिन्न बैंकों के हिंदी कार्य की समीक्षा के बाद यह बात सामने आई है कि आप सभी महानुभावों के सक्रिय सहयोग और अथक प्रयासों से रायपुर शहर में हिंदी का प्रयोग लगातार बढ़ रहा है। आप सभी अपने-अपने कार्यालयों व शाखाओं में प्रमुख की भुमिका निभा रहे हैं। अत: कार्यालय एवं शाखा प्रमुख होने के नाते हम सबका यह दायित्व है कि हम अपने-अपने बैंकों में राजभाषा नीति को और बेहतर ढंग से लागू कर हिंदी का प्रयोग बढ़ायें, इसके लिए यह जरूरी है कि हम अपने सहकर्मियों को हिंदी में कार्य करने के लिए प्रेरित व प्रोत्साहित करें।

साथियो सभी बैंकों में कम्प्यूटरीकरण हो रहा है, अत: कम्प्यूटर पर हिंदी का काम बढ़ाने के उद्देश्य से शाखा स्तर पर हिंदी साफ्टवेयर लगाना जरूरी है। कुछ बैंकों ने इस दिशा में सराहनीय कार्य किया है। हमारे बैंक ने भी इस बारे में कई महत्वपूर्ण कदम उठाए हैं, अत: सभी बैंकों को चाहिए कि कम्प्यूटर पर हिंदी में काम करने का प्रावाधान कराके कम्प्यूटर पर हिंदी कार्य को बढ़ाएँ।

चूँकि हम 'क' क्षेत्र में कार्यरत हैं अत: हमें अपना शत-प्रतिशत कार्य हिंदी करना चाहिए। हिंदी का प्रयोग संवैधानिक अपेक्षा तो है ही इसके साथ ही समय की माँग को देखते हुए व्यावसायिक दृष्टि से भी हिंदी का प्रयोग आवश्यक है। आज बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ अपने व्यवसाय के लिए हिंदी तथा भारतीय भाषाओं का सहारा ले रही हैं। भारत जैसे देश में व्यवसाय चलाने के लिए केवल अंगेजी भाषा से काम नहीं चल सकता इसके लिए हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषाओं को माध्यम के रूप में अपनाना जरूरी है। बैंकों में भी मार्केटिंग की दृष्टि से यह आवश्यक हो जाता है कि हम ग्राहक की आवश्यकता को देखते हुए उसकी भाषा में ही व्यवहार करें। अत: हमें हिंदी को मन से अपनाकर अधिक से अधिक कार्य हिंदी में करना चाहिए"।

■

कार्यशाला

राष्ट्रीय जन सहयोग एवं बाल विकास संस्थान, नई दिल्ली

संस्थान के अधिकारी/कर्मचारी अपना कामकाज हिंदी में सरलता से कर सके, इसमें उन्हें सहायता देने के लिए समय-समय पर हिंदी कार्यशालाओं का आयोजन किया जाता है। इसी क्रम में संस्थान के संकाय और स्टाफ सदस्यों के लिए 8-9-2004 को हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। यह कार्यशाला संस्थान में 1 से 15 सितम्बर, 2004 तक आयोजित हिंदी पखवाड़े की एक गतिविधि की रूप आयोजित की गई।

इस कार्यशाला का उद्धेश्य संस्थान के संकाय और स्टाफ सदस्यों को उनके कार्य से संबंधित विषयों पर टिप्पण और आलेखन का अभ्यास कराना था। इस कार्यशाला में संस्थान के कुल 12 अधिकारियों/कर्मचारियों ने भाग लिया।

कार्यशाला के विषय को अभ्यास पद्धति द्वारा प्रतिपादित किया गया। सहभागियों को हिंदी टिप्पण तथा आलेखन और शब्दावली आदि से संबंधित सामग्री दी गई। उन्हें उनके विषयों से संबंधित टिप्पण और आलेख का अभ्यास कराया गया। उनकी उत्तर पुस्तिकाओं की जांच की गई और उनकी कठिनाईयों का समाधान किया गया।

सामान्य

इस कार्यशाला का उद्घाटन श्री पवित्र कुमार बरूआ, उप निदेशक (प्रशासन) ने किया उन्होंने आशा प्रकट की कि कार्यशाला सहभागियों के लिए उपयोगी रहेगी तथा इससे संस्थान में हिंदी के कार्य को बढ़ावा मिलेगा। उन्होंने सुझाव दिया कि आगामी हिंदी कार्यशाला संस्थान के गैर हिंदी भाषी *अधिकारियों/कर्मचारियों* के लिए आयोजित की जानी चाहिए। उन्होंने यह सुझाव दिया कि एक कार्यालय ज्ञापन जारी करके कार्यशाला में भाग लेने वाले अधिकारियों/कर्मचारियों की सेवा पुस्तिकाओं में उनकी सहभागिता के संबंध में प्रविष्टि की जाने चाहिए।

मूल्यांकन

सहभागियों ने कार्यशाला की अवधि तथा प्रशिक्षण पद्धति को उपयुक्त माना और उल्लेख किया कि कार्यशाला से प्राप्त जानकारी का इस्तेमाल वे अपने कामकाज में व्यावहारिक रूप से करेंगे।

भारत सरकार, परमाणु ऊर्जा विभाग भारी पानी संयंत्र, तूतीकोरिन, तमिलनाडु

दिनांक 20 एवं 21 अगस्त, 2004 को संयंत्र के अधिकारियों एवं कर्मचारियों के लिए दो पूर्ण दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में विभिन्न अनुभागों से कुल 16 अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित थे।

राभाकास के अध्यक्ष श्री रामा राव ने अपने उद्बोधन में कहा कि राजभाषा हिंदी को सीखना इस युग में बहुत जरूरी है। इसे कार्यालयीन रूप से ही नहीं बल्कि व्यक्तिगत जीवन में भी हम इसका लाभ उठा सकते हैं। उन्होंने यह भी कहा कि कुछ मुद्दों पर अंकों की कमी के कारण हम भारी पानी बोर्ड द्वारा प्रदत्त वर्ष 2003-04 की राजभाषा शील्ड प्राप्त नहीं कर सके। लेकिन भविष्य में हमें शील्ड प्राप्त करने हेतु उन बिंदुओं पर ध्यान देकर उन्हें पूरा करना होगा, जिससे भविष्य में हमें शील्ड प्राप्त करने का अवसर मिल सके।

श्री जी. कल्याणकृष्णन ने अपने उद्घाटन भाषण में बताया कि भारत सरकार अपने कर्मचारियों को राजभाषा हिंदी में प्रशिक्षित करने के लिए विभिन्न कार्यक्रम, प्रशिक्षण एवं प्रोत्साहन योजनाएं चला रही है, जिसका हमें लाभ उठाना चाहिए। उन्होंने यह भी कहा कि हम जितनी अधिक भाषाएं सीखेंगे उतना ही हमारे लिए लाभदायक होगा। उन्होंने यह भी कहा कि परमाणु ऊर्जा विभाग की गतिविधियां, यात्रा भत्ता रियायत, पेंशन, अनुवाद, हिंदी व्याकरण, संरक्षा जागरूकता जैसे अन्य मूल विषयों पर व्याख्यान प्रतिभागियों के लिए बहुत लाभदायक सिद्ध होंगे। उन्होंने प्रतिभागियों से अनुरोध किया कि वे व्याख्यानों का लाभ उठाएं और विभिन्न प्रोत्साहन योजनाओं में भाग लें।

कार्यशाला के दूसरे दिन सत्र के अंत में दिए गए व्याख्यानों के आधार पर प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता आयोजित की गई। प्रश्नोत्तरी कार्यक्रम का संचालन श्री मनोज कुमार शर्मा ने किया। सही जवाब देने वाले प्रतिभागियों को श्री वी.वी. एस. रामा राव द्वारा पुरस्कार प्रदान किए गए साथ ही सभी को प्रतिभागिता प्रमाण-पत्र भी वितरित किए। प्रतिभागियों ने दो दिवसीय कार्यशाला में दिये गये व्याख्यानों पर अपने-अपने विचार फीड बैक में प्रस्तुत किए एवं व्याख्यानों को लाभदायक बताया एवं भविष्य में हिंदी वार्तालाप की भी एक कक्षा आयोजित करने संबंधी सुझाव दिया। धन्यवाद प्रस्ताव के साथ कार्यशाला का समापान हुआ।

कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), ओडिशा, भुवनेश्वर

दिनांक 30-8-2004 से दिनांक 3-9-2004 तक 5 दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया था। इस कार्यशाला में कार्यालय के अधिकारियों और कर्मचारियों ने भाग लिया। कार्यशाला के उद्घाटन करते हुए महालेखाकार श्रीमति अनीता पट्टनायक जी ने कार्यशाला की उपयोगिता पर प्रकाश डालते हुए इससे लाभ उठाने के लिए सलाह दी। कार्यशाला में प्रतिभागियों को संघ सरकार की राजभाषा नीति हिंदी वर्तनी व शुद्ध हिंदी लेखन तथा कार्यालय में हो रहे कार्य सम्बन्धी टिप्पण और प्रारूप लेखन पर प्रशिक्षण दिया गया। कार्यशाला के समापन पर उप महालेखाकार (प्रशासन) श्री अरूण कुमार नन्द ने प्रतिभागियों के साथ उनकी अनुभूति पर चर्चा की और कार्यशाला में प्राप्त राजभाषा ज्ञान को कार्य में प्रयोग करने तथा अभ्यास जारी रखने के लिए आग्रह किया। हिंदी अधिकारी श्री शंकर नायक ने कार्यशाला पर विवरण देते हुए राजभाषा के कार्यान्वयन में कार्यशाला के योगदान पर प्रकाश डाला। उसके बाद उप महालेखाकार (प्रशासन) श्री नन्द ने सभी प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र वितरित किए।

■

देश की सबसे बड़ी संख्या में बोली जाने वाली हिंदी ही राजभाषा की अधिकारिणी है।

—सुभाषचन्द्र बोस

अंग्रेजी का मुक़ाबला केवल हिंदी से ही नहीं, बल्कि सभी प्रान्तीय भाषाओं से है।

—डॉ. राजेन्द्र प्रसाद

हिंदी वह धागा है, जो विभिन्न मातृभाषाओं रूपी फूलों को पिरोकर भारतमाता के लिए सुन्दर हार का सृजन करेगा।

डॉ. ज़ाकिर हुसैन

हिंदी दिवस

महाप्रबंधक दूरसंचार जिला, भोपाल

भोपाल दूरसंचार जिले में 1 से 15 सितंबर, 2004 तक हिंदी पखवाड़ा मनाया गया। हिंदी पखवाड़े के दौरान आयोजित प्रतियोगितओं/कार्यक्रमों में अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। हिंदी पखवाड़े का पुरस्कार वितरण समारोह 14 सितंबर, 2004 को संपन्न हुआ। महाप्रबंधक द्वय ने विजेता दूरसंचार कर्मियों को पुरस्कार वितरित किए तथा अखिल भारतीय बीएसएनएल प्रतियोगिताओं में पदक प्राप्त करने वाले एसएसए के उत्कृष्ट कर्मचारियों को भी सम्मानित किया। इस गरिमामय अवसर पर कार्यक्रम के अध्यक्ष श्री एम.एल. गुप्ता, महाप्रबंधक दूरसंचार जिला भोपाल ने पुरस्कृत कर्मचारियों को बधाई दी और उन्होंने सभी कर्मचारियों से वांछित परिणाम हासिल करने के लिए दक्षता, व्यक्तिगत क्षमता और सम्पूर्ण प्रयासों के साथ संगठित होकर सही दिशा में प्रयास किए जाने की आवश्यकता पर बल दिया। श्री गुप्ता ने साफ-साफ शब्दों में कहा कि वक्त की रफ्तार के साथ हमें भविष्य की चुनौतियों का डटकर मुकाबला करना है और जो भी जिम्मेदारी सौंपी जाय उसे समन्वयकारी दृष्टिकोण से संपन्न करना है। इसके अलावा उन्होंने यह रेखांकित किया किसी भी अधिकारी एवं कर्मचारी अधिक से अधिक पत्राचार एवं फाइलों पर टिप्पणियां हिंदी में लिखें।

नेशनल एल्यूमिनियम कंपनी लिमिटेड, नालको नगर अनगुल

नालको के प्रद्रावक एवं विद्युत संकुल, नालको नगर में दिनांक 14-9-2004 को हिंदी दिवस का आयोजन किया गया। दिनांक 1-9-2004 से 14-9-2004 तक हिंदी पखवाड़े का भी आयोजन किया गया था। इस पखवाड़े के दौरान विभिन्न प्रतियोगिताएं की गई थीं। इसमें हिंदी भाषी कर्मचारी, अहिंदी भाषी कर्मचारी एवं विद्यार्थियों ने भाग लिया था। दिनांक 14-9-2004 को हिंदी दिवस और हिंदी पखवाड़े का पुरस्कार वितरण समारोह मानव संसाधन विकास केंद्र (प्रशिक्षण संस्थान) में सम्मेलन कक्ष में आयोजन किया गया। सभा के प्रारंभ में श्री राम किशन, उप महाप्रबंधक (भा.सं.वि.), सामान्य सेवा में अपने स्वागत संभाषण में हिंदी के महत्व पर प्रकाश डाला। राजभाषा प्रकोष्ठ के प्रबंधक श्री सुदर्शन तराई ने हिंदी दिवस के उद्देश्य और वार्षिक विवरण प्रदान किया। उन्होने अपने वक्तव्य में हिंदी के प्रयोग पर जोर देते हुए राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार पर अपना मत व्यक्त किया। सम्मानित अतिथि श्री राव ने हिंदी को भारत की संपर्क भाषा के रूप में स्वीकारते हुए कश्मीर से कन्याकुमारी तक बोलचाल की भाषा है, कहा। मुख्य अतिथि श्री रथ ने भारत की स्वतंत्र राष्ट्रभाषा न होने के कारण खेद व्यक्त किया और कहा कि इस स्थिति में हम हिंदी दिवस मानाते हैं। विभिन्न प्रतियोगिताओं के सफल प्रतिभागियों ने अतिथियों ने पुरस्कार प्रदान किया।

संसदीय कार्य मंत्रालय

मंत्रालय में हिंदी पखवाड़ा 1 सितंबर से 14 सितम्बर, 2004 तक मनाया गया। पखवाड़े के दौरान विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित की गई। हिंदी पखवाड़े के उद्घाटन पर 1 सितंबर, 2004 को संयुक्त सचिव महोदय की अध्यक्षता में मंत्रालय के सभी अधिकारियों की एक बैठक आयोजित की गई जिसमें सचिव महोदय की हिंदी में अधिक से अधिक कार्य करने के लिए अपील परिचालित की गई। 1-9-2004 से 13-9-2004 तक हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। मंत्रालय के तीन अनुभागों का निरीक्षण किया गया। मंत्रालय के सभी कर्मचारियों से हिंदी में अधिक से अधिक काम करने का संकल्प कराया गया। गृह मंत्री का संदेश मंत्रालय के सचिव महोदय द्वारा पढ़ा गया। हिंदी टिप्पण-आलेखन नगद पुरस्कार योजना, 2003-2004, हिंदी में टिप्पण-आलेखन आशु प्रतियोगिता (पुरस्कार पुस्तकों के रूप में) और टंकण प्रतियोगिता के पुरस्कारों का वितरण हिंदी दिवस के दिन अर्थात् 14-9-2004 को आयोजित हिंदी पखवाड़े के समापन समारोह के अवसर पर किया गया।

क्षेत्रीय कार्यालय (केरल), कर्मचारी राज्य बीमा निगम, तृश्शूर

सरल रूप में सहायक निदेशक (राजभाषा) द्वारा अध्यक्ष एवं क्षेत्रीय निदेशक श्री जोस चेरियान जी और अधिकारी/अधीक्षकों को स्वागत करने के साथ हिंदी दिवस समारोह का दिनांक 14-9-2004 को आयोजित किया। अध्यक्ष महोदय ने अपने भाषण में कहा कि पिछले साल की तुलना में देखें तो 11 अधिकारी/कर्मचारियों को पुरस्कार मिले हैं, संतोष का विषय है। पिछली बार पुरस्कार के लिए केवल एक ही कर्मचारी था। उन्होंने कहा कि छोटे से क्षेत्र गोवा में अधिक कर्मचारी हिंदी में काम कर रहे हैं और मुख्यालय का पुरस्कार अधिक ले रहे हैं। हमारे क्षेत्र में उससे कम कर्मचारी पुरस्कार ले रहे हैं। यह दुख की बात हैं, इसको दूर करने के लिए अधिक प्रयत्न करने के साथ सभी अधिकारी निष्ठा से प्रयत्न करने का अनुरोध है। अगले साल में इस साल में जारी की गयी नई हिंदी दिवस विशेष पुरस्कार योजना का लाभ अधिक लेने के लिए प्रयत्न करने को कहा।

केंद्रीय जल और विद्युत अनुसंधान शाला, पुणे

केंद्रीय जल और विद्युत अनुसंधान शाला , पुणे में 14-9-2004 को हिंदी दिवस के पूर्व 1 सितंबर, 2004 से हिंदी पखवाड़ा मनाया गया। इस अवधि में विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित की गई। इन सभी प्रतियोगिताओं इस अनुसंधान शाला के अधिकारी एवं कर्मचारी ने बड़े उत्साह से हिस्सा लिया। 14 सितंबर 2004 को ''हिंदी दिवस'' का मुख्य समारोह मनाया गया। अनुसंधान शाला के अपर निदेशक डॉ. लक्ष्मीकांत घोष ने अपने भाषण में अनुसंधान शाला के अधिकारियों/कर्मचारियों को कार्यालयीन कामकाज में हिंदी का अधिक से अधिक प्रयोग करने की अपील की। मुख्य अतिथि श्री शंकर भगवंतराय देशमुख ने कहा कि भारत में अनेक प्रांत हैं उनकी अपनी-अपनी बोली भाषाएं हैं परंतु दो भिन्न भाषी व्यक्तियों को आपसी बातचीत में हिंदी का ही सहारा लेना होता है। हिंदी दिवस जैसा समारोह भारत भर में जोश और उत्साह के साथ मनाया जाता है। तकनीकी क्षेत्र में भी आजकल हिंदी भाषा का अधिक से अधिक प्रयोग हो रहा है। उन्होंने आगे कहा कि यह धारणा गलत है कि जो देश अंग्रेजी जानते हैं वे ही तकनीकी क्षेत्र में प्रगति करते हैं। उन्होंने इसके लिए रूस, चीन, जापान का उदाहरण दिया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के करकमलों द्वारा हिंदी गृह पत्रिका ''जलवाणी'' के ग्यारहवें अंक का विमोचन किया। इस गृह पत्रिका में अधिक से अधिक तकनीकी साहित्य को जगह दी गई है।

श्रम एवं रोजगार मंत्रालय, कार्यालय मुख्य श्रमायुक्त (केंद्रीय), नई दिल्ली

1 सितंबर से 30 सितंबर, 2004 तक मुख्य श्रमायुक्त (केंद्रीय) में हिंदी माह आयोजन किया गया। इस दौरान भारत भर में स्थित क्षेत्रीय श्रमायुक्त (केंद्रीय) कार्यालयों में हिंदी के कार्य को सहज व सरल रूप से करने हेतु हिंदी वाक्यांश शब्दावली एवं संदर्भ सामग्री प्रेषित की गई एवं कम्प्यूटरों पर आधार साफ्टवेयर लोड करवाया गया। दो दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन अधिकारियों एवं कर्मचारियों हेतु किया गया, जिसमें अधिकारी वर्ग के 12 एवं कर्मचारी वर्ग के 13 कार्मिकों को प्रशिक्षण दिया गया। कार्यशाला काफी सफल रही। मुख्यालय के सहायक निदेशक (राजभाषा) श्री वेदप्रकाश दुबे द्वारा मुख्यालय के समस्त अनुभागों में प्रेरण, प्रोत्साहन एवं सद्भावना का वातावरण निर्मित करने एवं रोजमर्रा के काम को हिंदी में करते समय होने वाली झिझक दूर करने हेतु अधिकारियों/कर्मचारियों को डेस्क प्रशिक्षण दिया गया। हिंदी माह के दौरान विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। हिंदी दिवस विशेष उद्घाटन बैठक का मुख्य श्रमायुक्त (केंद्रीय) श्री एस.के. मुखोपाध्याय जी की अध्यक्षता में किया गया, जिसमें मुख्यालय के सभी अधिकारियों/कर्मचारियों ने भाग लिया। पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन किया गया, जिसमें मुख्यालय के सभी अधिकारियों/कर्मचारियों की उपस्थिति में प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार प्रदान करके सम्मानित किया गया। हिंदी माह के संकल्पों एवं वार्षिक कार्यान्वयन कार्यक्रम को सम्पूर्ण वर्ष लागू करने हेतु विशेष राजभाषा बैठक का आयोजन किया गया तथा प्रतिदिन हिंदी में एक शब्द बोर्ड लिया गया। मुख्य श्रमायुक्त (केंद्रीय) कार्यालय राजभाषा हिंदी के प्रचार एंव प्रसार हेतु प्रतिबद्ध है तथा भविष्य में भी इसी प्रकार हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार हेतु सरकार की नीतियों का अनुपालन सुनिश्चित करता रहेगा। आपके बहुमूल्य सुझाव हमारा मार्गदर्शन करते रहेंगे।

गोवा शिपयार्ड लिमिटेड

गोवा शिपयार्ड लिमिटेड में 8 सितंबर, 2004 को हिंदी सप्ताह की शुरुआत हुई। उस दिन राजभाषा शपथ ली गई एवं एक समापन प्रकृति का काम करने वाले लिपिक वर्गीय स्टाफ के लिए तीन दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आरंभ हुआ। तत्पश्चात् अधिकारियों के लिए भी एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला आरंभ हुई। हिंदी सप्ताह का मुख्य समारोह दिनांक 14 सितंबर, 2004 को मनाया गया। मुख्य अतिथि श्री एन.एस. रन्धावा, उप महानिदेशक पुलिस थे। अध्यक्षता कमां. एस. के. मुत्रेजा, स्था. अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक ने की। श्री राजेश परिंडा, जन संपर्क अधिकारी ने हिंदी दिवस के अवसर पर प्राप्त माननीय रक्षा मंत्री के संदेश को पढ़कर सुनाया। कमां. एच.सी. गांधी, महाप्रबंधक (का. एवं प्रशा.), श्री लॉरेन्स डिसोजा, डॉ. चन्द्रलेखा डिसोजा ने हिंदी की प्रगति को आगे बढ़ाने हेतु अपने भाषण में बल दिया। मुख्य अतिथि श्री रन्धावा जी ने गोवा शिपयार्ड में संपन्न हिंदी की गतिविधियों पर अपनी खुशी जाहिर की। साथ ही उन्होंने सुझाव दिया कि हिंदी की और तरक्की में कोई कमी न रह जाए। सप्ताह भर चली अनेक प्रतियोगिताओं के 15 पुरस्कार सह प्रमाणपत्र मुख्य अतिथि के करकमलों द्वारा प्रदान किए गए। इस अवसर पर हिंदी शिक्षण योजना की विभिन्न हिंदी परीक्षाएं उत्तीर्ण करने पर 33 अधिकारियों/कर्मचारियों को प्रमाणपत्र भी दिए गए।

भारतीय कृषि सांख्यिकी अनुसंधान संस्थान, पूसा, नई दिल्ली

01 सितम्बर से 30 सितम्बर, 2004 तक हिंदी चेतनामास का आयोजन किया गया जिसका समापन समारोह 01 अक्तूबर, 2004 को हुआ। इस अवसर पर जाने-माने कवि श्री बालस्वरूप राही मुख्य अतिथि थे।

चेतनामास के दौरान संस्थान में विभिन्न प्रतियोगिताएं एवं कार्यक्रम आयोजित किए गए। इसके कुछ मुख्य आकर्षण थे—काव्य पाठ, अन्ताक्षरी, वाद-विवाद, निबंध लेखन, प्रश्न-मंच इत्यादि जिनमें संस्थान के अधिकारियों, कर्मचारियों एवं छात्रों ने उत्साहपूर्वक बढ़-चढ़कर भाग लिया। 14 सितम्बर, 2004 को हिंदी दिवस का आयोजन भी किया गया। इस अवसर पर डा. दरोग़ा सिंह स्मृति व्याख्यानमाला का आयोजन हुआ। यह वैज्ञानिक व्याख्यान, कृषि वैज्ञानिक चयन मंडल के अध्यक्ष, डॉ. अमर सिंह फरौदा ने कृषि में सांख्यिकी का महत्व विषय पर दिया। इन कार्यक्रमों के अतिरिक्त संस्थान में इस वर्ष से वैज्ञानिकों, तकनीकी कर्मियों तथा छात्रों के लिए एक शोध-पत्र पोस्टर-प्रदर्शन प्रतियोगिता भी आरम्भ की गई। चेतनामास के दौरान हुई सभी प्रतियोगिताओं के सफल प्रतियोगियों को इस अवसर पर श्री राही जी के कर-कमलों द्वारा पुरस्कृत किया गया।

मुख्य अतिथि का स्वागत करते हुए संस्थान के निदेशक प्रो. सुखदेव शर्मा ने बताया कि भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् में और संभवतः भारत सरकार के समस्त सरकारी कार्यालयों में यह संस्थान एकमात्र ऐसा संस्थान है जहां गत एक वर्ष से समस्त प्रशासनिक कार्य हिंदी में अथवा द्विभाषी हो रहा है। यही नहीं संस्थान की वेबसाइट अंग्रेजी के साथ-साथ हिंदी में भी जारी की गई है और साथ ही इण्टरनेट पर ''हिंदी सेवा लिंक'' भी संस्थान ने सर्वप्रथम जारी कर कर्मियों को हिंदी में काम करते समय आने वाली कठिनाइयों को दूर करने की दिशा में एक ठोस कदम उठाया है। इस सेवा लिंक में दैनिक कार्यों में उपयोग में आने वाले शब्द, टिप्पणियां, प्रपत्र, परिषद् के अनुसंधान संस्थानों की सूची इत्यादि हैं।

मुख्य अतिथि ने अपने संबोधन में संस्थान के हिंदी कार्यों की भूरि-भूरि प्रशंसा की और समस्त प्रशासनिक कार्य हिंदी में करने की सराहना करते हुए उन्होंने इच्छा व्यक्त की कि इसका समुचित प्रचार-प्रसार होना चाहिए जिससे कि अन्य कार्यालय भी इस संस्थान से प्रेरणा ले सकें। अन्त में उन्होंने अपनी भावपूर्ण कवितायें सुना कर श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया।

भारी पानी संयंत्र, तूतीकोरिन

दिनांक 9-9-2004 को हिंदी सप्ताह समारोह के तहत हिंदी दिवस समारोह का आयोजन किया गया। समारोह के मुख्य अतिथि, तूतीकोरिन जिला पुलिस अधीक्षक श्री संदीप राय राठौड़ थे।

भारी पानी कर्मचारी संघ के महा सचिव श्री मणिआचारी ने अपने उद्बोधन में कहा कि आजकल संविधान में इसी बात पर चर्चा चल रही है कि शिक्षा का माध्यम किस भाषा में हो। उन्होंने कहा कि आजकल तमिलनाडु में हिंदी विरोध

की भावना घट रही है इसलिए हमें इसके प्रचार-प्रसार में सहयोग मिलेगा। श्री वी.वी.एस. रामा राव ने कहा कि संयंत्र में हिंदी के कार्य में बढ़ोतरी हो रही है एवं राजभाषा शील्ड प्राप्त करने हेतु पिछले वर्ष की तुलना में हमने 30 अंकों की बढोतरी की है और आगे भी हिंदी के प्रचार-प्रसार को बढ़ाने में हम निर्धारित नियमों एवं नीतियों पर चलते रहेंगे। मुख्य महाप्रबंधक महोदय ने अपनी अध्यक्षीय उद्बोधन में कहा कि हिंदी बहुत सरल भाषा है। इसको एक बार अपनाकर तो देखिए वह कितनी सरल एवं सहज भाषा है। यह जल्दी से सीखी एवं समझी जा सकती है। उन्होंने यह भी कहा कि संयंत्र में हिंदी का क्रियान्वयन नियमानुसार नीतियों का पालन करते हुए हो रहा है।

इस समारोह के मुख्य अतिथि पुलिस अधीक्षक श्री संदीप राय राठौड़ ने कहा विभिन्नता में एकता लाने में हिंदी का विशेष योगदान है। उन्होंने तमिल सीखने का अपना अनुभव भी बताया। उन्होंने यह भी कहा कि सब भारतीय भाषाओं का मूल संस्कृत है एवं तमिल उससे भी प्राचीन भाषा है। हिंदी सभी को जोड़ने वाली भाषा है। अंत में उन्होंने यह भी कहा कि अगर हिंदी दिवस दक्षिण तमिलनाडु में इस उत्साह से मनाया जा सकता है तो हमारा लक्ष्य जल्दी ही पूर्ण होगा।

भारी पानी संयंत्र, तूतीकोरिन का त्रैमाषिक वार्षिक गृहपत्रिका 'मुक्तक धारा' के आठवें अंक का लोकार्पण मुख्य अतिथि द्वारा किया गया। हिंदी सप्ताह के दौरान आयोजित विभिन्न हिंदी प्रतियोगिताओं के विजेताओं को नकद पुरस्कार मुख्य अतिथि द्वारा प्रदान किए गए। अंत में, श्रीमती श्यामलता कुमारी, कनिष्ठ हिंदी अनुवादक द्वारा धन्यवाद ज्ञापन के बाद, समारोह राष्ट्रगान के साथ संपन्न हुआ। कार्यक्रम का संचालन श्रीमती भाग्यती एवं श्रीमती विद्याश्री ने किया।

महालेखाकार (ले. प.) का कार्यालय मणिपुर, इम्फाल

01 सितम्बर, 2003 से 15 सितम्बर, 2003 तक हिंदी पखवाड़े का एकत्र आयोजन किया गया है।

आयोजन का उद्घाटन करते हुए श्री एल. हंसिंग, उप-महालेखाकार (ले. व हक.) ने उपस्थित अधिकारियों व कर्मचारियों को संबोधित करते हुए कहा है कि हिंदी के राष्ट्रभाषा होने के नाते सभी अधिकारियों व कर्मचारियों को अधिकाधिक कार्यालयी कार्य हिंदी में करना चाहिए। उद्घाटन समारोह में सभापति के रूप में आमंत्रित श्री एल.हंसिंग, उप-महालेखाकार (ले. व हक.) ने उपस्थित अधिकारियों व कर्मचारियों से पखवाड़े को सफल बनाने का आह्वान करते हुए प्रभावशाली भाषण दिया।

हिंदी पखवाड़े के दौरान प्रतिदिन हिंदी गीत प्रतियोगिता, हिंदी निबंध प्रतियोगिता, हिंदी भाषण, हिंदी पत्राचार प्रतियोगिता तथा शब्दार्थ जैसी कविता पाठ प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं। प्रत्येक प्रतियोगिता में प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किया गया है।

दिनांक 15-09-2003 को हिंदी पखवाड़े का समापन समारोह आयोजित किया गया। इस समारोह के मुख्य अतिथि महोदय श्री क्ष. योगिन्द्रजीत सिंह, वरिष्ठ लेखा-परीक्षा अधिकारी (प्रशा.) ने हिंदी पखवाड़े के सफल आयोजन हेतु समस्त अधिकारियों व कर्मचारियों को बधाई दी। समारोह के अध्यक्ष महोदय श्री एल. हंसिंग, उप-महालेखाकार (ले. व हक.) ने अधिकारियों व कर्मचारियों द्वारा हिंदी पखवाड़े के दौरान दर्शाए गए जोश व उत्साह को पूरे वर्ष बनाए रखने का अनुरोध किया।

क्षेत्रीय कार्यालय, क.रा.बी. निगम, फरीदाबाद

01 सितम्बर से 15 सितम्बर, 2004 तक राजभाषा पखवाड़ा हर्षोल्लास के साथ बनाया गया।

राजभाषा पखवाड़े के समापन पर 15 सितंबर, 2004 को क्षेत्रीय कार्यालय के सभाकक्ष में भव्य हिंदी दिवस समारोह का आयोजन हुआ। समारोह की अध्यक्षता श्री जी.सी. चोपड़ा, निदेशक (वित्त एवं प्रशासन), राष्ट्रीय विद्युत प्रशिक्षण प्रतिष्ठान, फरीदाबाद ने मुख्य अतिथि के रूप में की। श्री जी.सी. चोपड़ा, मुख्य अतिथि ने अध्यक्षीय भाषण में अपने अमूल्य विचारों से समारोह में उपस्थित जनों का ज्ञानवर्धन किया और उन्होंने कंप्यूटर क्रांति में राजभाषा की उल्लेखनीय प्रगति को भी रेखांकित करते हुए भविष्य में भी कंप्यूटर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करते रहने का आश्वासन दिया। उन्होंने अपने कर कमलों से अपने प्रतिष्ठान से कंप्यूटर

प्रशिक्षण प्राप्त 21 कर्मचारियों को प्रमाण-पत्र तथा पखवाड़े के दौरान आयोजित प्रत्येक प्रतियोगिता में प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले कर्मचारी को क्रमशः 1000/-, 800/- व 600/- रु. का पुरस्कार प्रमाण-पत्र सहित प्रदान किया। पांच कर्मचारियों वाले विजयी अंताक्षरी समूह को भी 3,000/- रु. से पुरस्कृत किया। इसके अतिरिक्त अंत: अनुभागीय राजभाषा चल शील्ड प्रतियोगिता के अंतर्गत अपना सर्वाधिक कार्य हिंदी में करने पर उन्होंने लेखा शाखा को अपने कर कमलों से उक्त शील्ड देकर सम्मानित किया।

श्री ए. चोक्कलिंगम, क्षेत्रीय निदेशक ने भी अपने संक्षिप्त भाषण में राजभाषा के प्रचार प्रसार में तीव्रता लाने के लिए उपस्थित जनों का आह्वान किया और हिंदी प्रतियोगिताओं में बढ़-चढ़कर भाग लेने के लिए प्रेरित किया।

स्टील अथॉरिटी ऑफ इण्डिया लिमिटेड शाखा विक्रय कार्यालय भुवनेश्वर

सेल, शाखा विक्रय कार्यालय ने कई सालों से अन्य कार्यों के साथ-साथ राजभाषा हिंदी में भी उल्लेखनीय कार्य किया है। *शाखा में* दि. 01-09-04 से 14-09-04 तक राजभाषा पखवाड़ा मनाने के अवसर पर हर साल की भाँति विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित हुईं।

दि. 01-09-04 में श्री ए.सी. बेहेरा, शाखा प्रबन्धक ने सभी कार्मिकों को बधाई देने के साथ-साथ हिंदी में पत्राचार, नोटिंग, रजिस्टर पर लेख आदि कार्य करके राजभाषा के लिए निर्धारित लक्ष्य हासिल करने के लिए सभी को प्रेरणा दी। पखवाड़ा पर आयोजित होने वाली प्रत्येक प्रतियोगिता में अधिक से अधिक संख्या में योगदान करने के लिए भी उन्होंने सभी को आग्रह किया।

दि. 14-09-04 हिंदी दिवस के पावन अवसर पर एक भव्य समारोह का आयोजन हुआ शाखा प्रबन्धक महोदय ने हिंदी दिवस की महत्ता पर प्रकाश डाला, सभी को बधाई दी। श्री जगन्नाथ रथ, मुख्य विपणन ने यह कहा कि केंद्रीय सरकार के प्रतिष्ठान के नाते राजभाषा नियम अधिनियम का अनुपालन करना हम सब का सांविधिक तथा नैतिक दायित्व बनता है। श्रीमती प्रमोदिनी देबी, ने राजभाषा प्रोत्साहन योजना पर सम्यक् प्रकाश डाला एवं इसी से अधिक से अधिक लाभ उठाने के लिए सभी कार्मिकों को अनुरोध किया।

उसी दिन प्रथम, द्वितीय, तृतीय स्थान प्राप्त कर्मचारियों को पुरस्कार एवं अन्य सभी प्रतिभागियों को सान्त्वना पुरस्कार प्रदान किया गया।

कर्मचारी चयन आयोग (मुख्यालय)

दिनांक 1 सितम्बर से 14 सितम्बर, 2004 के दौरान हिंदी पखवाड़े का आयोजन किया गया। इसके अंतर्गत दिनांक 1 और 2 सितम्बर, 2004 को अधिकारियों के लिए एक विशेष हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें राजभाषा नीति एवं सरकारी कामकाज में हिंदी के प्रयोग तथा हिंदी में टिप्पण एवं प्रारूप लेखन तथा पत्राचार विषयों में व्यावहारिक प्रशिक्षण प्रदान किया गया। इन्हीं विषयों पर आयोग के सहायक एवं उच्च श्रेणी लिपिकों के लिए भी एक पृथक कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें आयोग (मुख्यालय) के सभी अनुभागों के कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। इस दौरान विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया।

प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कृत करने के साथ-साथ सदस्य महोदय द्वारा शुरु की गई विशेष पहल की भी उन्होंने सराहना की। सहायक निदेशक (रा.भा.) श्री शैलेश कुमार सिंह ने हिंदी दिवस के अवसर पर माननीय गृह मंत्री के संदेश का वाचन करके इस कार्यक्रम की शुरुआत की। तत्पश्चात् उप-सचिव श्री भानु चटर्जी ने राजभाषा नीति एवं सरकारी कामकाज में हिंदी के प्रयोग पर सम्पन्न हुई अधिकारियों के लिए विशेष हिंदी कार्यशाला पर अपने विचार प्रकट करते हुए कहा कि इससे जहां एक ओर राजभाषा नीति एवं संवैधानिक पहलुओं की सम्यक् जानकारी प्राप्त हुई है, वहीं हमारे कामकाज में राजभाषा हिंदी के प्रयोग की स्थिति को भी समझने एवं परखने का अवसर मिला है जिससे सरकारी कामकाज में हिंदी का प्रयोग बढ़ाने में मदद मिलेगी। टिप्पण-प्रारूप लेखन तथा हिंदी पत्राचार विषय पर सम्पन्न हुई विशेष हिंदी कार्यशाला के संबंध में अवर सचिव श्रीमती गंगा वैद्यनाथन की यह धारणा रही कि सरलतापूर्वक फाइलों पर टिप्पणियां लिखने तथा हिंदी में पत्राचार करने के बारे में कार्यशाला से काफी जानकारी प्राप्त हुई। उन्होंने समय-समय पर ऐसी कार्यशालाएं आयोजित किए जाने पर भी जोर दिया।

अध्यक्ष महोदय ने अपने कर कमलों से हिंदी में सर्वोत्कृष्ट कार्य करने वाले उप-क्षेत्रीय कार्यालय रायपुर तथा आयोग (मु.) के अनुसंधान एवं विश्लेषण अनुभाग को शील्ड एवं प्रमाण-पत्र प्रदान कर पुरस्कृत किया और साथ ही नकद पुरस्कार योजना के अंतर्गत वर्ष 2003-2004 के दौरान सरकारी कामकाज मूल रूप से हिंदी में करने वाले 6 कर्मचारियों एवं हिंदी पखवाड़े के दौरान आयोजित किए गए विविध प्रतियोगिताओं के विजेता अधिकारियों/कर्मचारियों को प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय पुरस्कारों से सम्मानित किया।

अपने अध्यक्षीय संबोधन में अध्यक्ष महोदय ने कहा कि हिंदी दिवस हमें यह याद दिलाता है कि संविधान की मंशा के अनुरूप सरकारी कामकाज में हमें निरंतर हिंदी का प्रयोग बढ़ाना है। उन्होंने आशा व्यक्त की कि आयोग के सभी कार्यालय एवं अनुभाग अपने दैनिक कामकाज में हिंदी का प्रयोग निरंतर बढ़ाएंगे। अंत में निदेशक महोदय ने इस अवसर पर अध्यक्ष महोदय एवं सदस्य महोदय के प्रति उनके मार्गदर्शन के लिए आभार व्यक्त किया और यह आशा व्यक्त की कि सभी अधिकारी/कर्मचारी पूरे मनोयोग से अपने कामकाज में हिंदी का प्रयोग करेंगे।

संघ शासित क्षेत्र, लक्षद्वीप प्रशासन

हिंदी दिवस का पखवाड़ा 01-09-2004 से शुरू होकर 15-09-2004 को समाप्त हुआ। 01-09-2004 से शुरू करके सप्ताह पखवाड़ा और 15-09-2004 को हिंदी दिवस मनाया गया। इस पखवाड़े में सरकारी अधिकारियों व पंचायत प्रतिनिधियों ने बड़े उत्साह के साथ भाग लिया। इस समारोह का उद्घाटान करते हुए श्री जार्ज जेकब, सचिव (भुगतान और लेखा) ने "**राजभाषा हिंदी को लोकप्रिय बनाने के उपाय**" विषय पर प्रकाश डाला। सब अधिकारियों और पंचायत प्रतिनिधियों तथा कर्मचारियों ने इस विषय पर अपने व्याख्यान दिये। इस विषय पर, इस प्रशासन का यह उद्देश्य था कि सरकारी कामकाज हिंदी में करने के लिए आदर्श वातावरण तैयार करना तथा हिंदी के प्रयोग को सतत् रूप से लक्षद्वीप प्रशासन के सभी कार्यालय कम से कम एक सप्ताह तक अपना समस्त कार्य राजभाषा हिंदी में करना। लक्षद्वीप प्रशासन के सभी उच्चाधिकारियों से यह अपेक्षा की गई कि वे अपना दैनिक कार्य स्वयं हिंदी में करके अपने अधीनस्थ कर्मचारियों के समक्ष उदाहरण प्रस्तुत करें तथा उन्हें भी अपना दैनिक कार्य स्वयं हिंदी में करने के लिए प्रोत्साहित करें। इसके अतिरिक्त कार्यालयों/विभागों की उच्चस्तरीय बैठकों में चर्चाओं में हिंदी के प्रयोग को कैसे आगे बढ़ाया जाये अंत में, इस अवसर पर आयोजित निबंध प्रतियोगिता एवं वाक प्रतियोगिता के विजेताओं का अभिनन्दन किया और उन्हें पुरस्कार से सम्मानित किया।

क्षेत्रीय कार्यालय, कर्मचारी राज्य बीमा निगम, सर्वोदय नगर, कानपुर

21-09-04 को हिंदी दिवस समारोह का आयोजन किया गया। समारोह की रूपरेखा एवं राजभाषा की संवैधानिक स्थिति की चर्चा करते हुए डा. पन्ना प्रसाद, स.नि. (राजभाषा) ने हिंदी दिवस को भारतीय भाषाओं के सम्मान-दिवस के रूप में बनाए जाने का सुझाव दिया। उन्होंने कहा, अंग्रेजी को अकेले हिंदी के बल पर नहीं हटाया जा सकता, इसके लिए सभी भाषाओं का सहयोग जरूरी है। हमें हिंदी और तमिल दोनों भाषाओं के प्रति समान महत्व रखना होगा। यदि तमिल को शास्त्रीय भाषा का दर्जा दिया जाता है तो हमें स्वाभाविक रूप से आनंदित होना चाहिए।

मुख्य अतिथि पं. सिद्धेश्वर अवस्थी जी ने कहा, हिंदी का प्रयोग केवल संवैधानिक आवश्यकता नहीं है बल्कि यह हमारी आस्था से जुड़ा है। हिंदी का प्रयोग देशभक्ति का प्रदर्शन है। विदेशों में हमें अपनी ही भाषा का प्रयोग करना चाहिए। उन्होंने पूर्व प्रधानमंत्री द्वारा संयुक्त राष्ट्र संघ में हिंदी में व्याख्यान देने के गरिमामय प्रयास की सराहना की।

केनरा बैंक अंचल कार्यालय, लखनऊ

दिनांक 15 सितम्बर, 2004 को हिंदी दिवस समारोह का आयोजन किया गया जिसके मुख्य अतिथि वरिष्ठ साहित्यकार एवं पंडित दीन दयाल उपाध्याय सम्मान से सम्मानित प्रो. सूर्य प्रसाद दीक्षित, पूर्व हिंदी विभागाध्यक्ष लखनऊ विश्वविद्यालय रहे। बैंक के महाप्रबंधक श्री के. रंगराया ने समारोह की अध्यक्षता की। इस अवसर पर अपने अध्यक्षीय संबोधन में श्री के. रंगराया ने कर्मचारियों को हिंदी दिवस की शुभकामनाएं देते हुए हिंदी को मन से अपनाने की अपील की। उन्होंने बताया कि बैंक के लखनऊ अंचल को "क" क्षेत्र में राजभाषा कार्यान्वयन के लिए

प्रथम पुरस्कार मिला है। अतएव हमारी जिम्मेदारी राजभाषा कार्यान्वयन के प्रति इससे ओर बढ़ जाती है।

मुख्य अतिथि प्रो. दीक्षित ने उपस्थितजनों को संबोधित करते हुए कहा कि हिंदी दिवस सही मायने में एक चेतना दिवस है। उन्होंने बताया कि हिंदी आज हर क्षेत्र में अपना प्रभुत्व कायम कर रही है चाहे वह विपणन का क्षेत्र हो, चाहे अन्य कोई व्यवसाय। श्री दीक्षित ने कहा कि यह हर्ष की बात है कि केनरा बैंक ने हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए कई नवोन्मेषी कदम उठाएं हैं और राजभाषा हिंदी के प्रयोग में अग्रणी बना हुआ है। श्री दीक्षित ने कहा कि हमें अपनी संस्कृति और अस्मिता की रक्षा के लिए हिंदी अपनानी ही होगी।

बैंक द्वारा सितंबर माह हिंदी माह के रूप में मनाया गया तथा विभिन्न हिंदी प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं। इस अवसर पर मुख्य अतिथि प्रो. दीक्षित ने हिंदी माह में आयोजित प्रतियोगिताओं के विजेता कर्मचारियों को पुरस्कार प्रदान किए। बैंक के महाप्रबंधक श्री के. रंगराया ने प्रधान कार्यालय द्वारा प्रयोजित राजभाषा अक्षय योजना और कर्मचारियों के लिए "राजभाषा पुरस्कार योजना" के विजेता कर्मचारियों को प्रशस्तिपत्र तथा पुरस्कार वितरित किए।

बैंक ऑफ महाराष्ट्र केंद्रीय कार्यालय, पुणे

दिनांक 16 सितम्बर, 2004 को हिंदी दिवस समारोह का भव्य आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता बैंक के अध्यक्ष व प्रबधं निदेशक श्री सुकमल चंद्र बसु जी ने की। इस कार्यक्रम में अखिल भारतीय स्तर पर चलाई जा रही आंतरिक राजभाषा शील्ड प्रतियोगिता के अंतर्गत केंद्रीय कार्यालय के विभागों तथा हिंदी दिवस के दौरान केंद्रीय कार्यालय में आयोजित हिंदी प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किए गए। साथ ही, बैंक में 25 वर्षों की सुदीर्घ सेवा संपन्न करने वाले अधिकारी/कर्मचारियों को रजत जयंती शील्ड भी प्रदान की गई। रजत जयंती शील्ड वितरण समारोह का सूत्र संचालन इस वर्ष के सर्वश्रेष्ठ प्रतियोगी तथा कार्मिक विभाग के वरिष्ठ प्रबंधक श्री प्रमोद दातार ने किया।

अपने अध्यक्षीय भाषण में बैंक ऑफ महाराष्ट्र के अध्यक्ष व प्रबंध निदेशक श्री सुकमल चंद्र बसु ने कहा कि बैंक आगामी प्रशिक्षण कार्यक्रमों में अपने अधिकारियों व कर्मचारियों को प्रशिक्षित करते समय हिंदी माध्यम का अधिकाधिक उपयोग सुनिश्चित करेगा। साथ ही, उन्होंने कहा कि सूचना प्रोद्योगिकी में हिंदी का उत्तरोत्तर प्रयोग किए जाने की संभावनाएं तलाशी जाएंगी। आज आवश्यकता स्वदेशी होने की है। चूंकि हमारी संस्था ग्राहकोन्मुख संस्था है और हमारा प्रमुख ग्राहक आधार कोई विदेशी नहीं, भारतीय है, इसलिए जितना अधिक हम हिंदी का प्रयोग सुनिश्चित करेंगे एक तरह से अपनी प्रगति सुनिश्चित करेंगे। पुरस्कार विजेताओं का हार्दिक अभिनंदन करते हुए उन्होंने सभी कर्मचारियों का आहवान् किया कि वे अपने अधिकाधिक कामकाज में हिंदी का प्रयोग सुनिश्चित करें।

स्टील अथॉरिटी ऑफ इंडिया लिमिटेड शाखा विक्रय कार्यालय एक्जीविशन रोड, पटना

दिनांक 6-09-2004 से 10-09-2004 को शाखा विक्रय कार्यालय, पटना में हिंदी पखवाड़ा मनाया गया। इस बीच एक कार्यशाला एवं विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। इस वर्ष कर्मचारियों के बच्चों के लिए भी निबंध प्रतियोगिता आयोजित की गई।

हिंदी पखवाड़ा का उद्घाटन शाखा प्रबंधक सह राजभाषा कार्यान्वयन समिति के अध्यक्ष श्री एन. अरविन्द ने किया इन्होंने अपने उद्घाटन भाषण में कहा कि हमारा पटना कार्यालय पिछले दो वर्ष से तृतीय पुरस्कार प्राप्त कर रहा है अत: अब हमें प्रथम स्थान पाने के लिए प्रयास करना होगा, यह तभी संभव हो सकेगा जब हम सभी स्वेच्छा से अपना-अपना काम अधिकाधिक हिंदी में करने का प्रयास करें।

उद्घाटन के उपरान्त हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसका संचालन श्रीमती साँत्वना झा, उप प्रबंधक (प्र.)-सह-नामित हिंदी अधिकारी द्वारा किया गया। कार्यशाला का विषय था "कार्यालय में पत्राचार" इसका आयोजन दो सत्र में किया गया पहले सत्र में पत्राचार कैसे करें इसका प्रशिक्षण दिया गया। दूसरे सत्र में अभ्यास कराया गया।

इस दौरान विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया यथा हिंदी लेखन प्रतियोगिता, हिंदी निबंध प्रतियोगिता,

श्रुतिलेख व कविता पाठ। उपरोक्त सभी प्रतियोगिताओं के लिए प्रथम, द्वितीय, तृतीय तथा सांत्वना पुरस्कार प्रदान किया गया। प्रतियोगिताओं एवं कविता पाठ में कर्मचारियों ने बड़े उत्साह के साथ भाग लिया।

केंद्रीय खारा जलजीव पालन अनुसंधान संस्थान, चेन्नई

संस्थान में 15 सितंबर 2004 को हिंदी दिवस समारोह का आयोजन किया गया। इस समारोह में प्रो. डॉ. निर्मला मौर्य, अध्यक्ष, उच्च शिक्षा और शोध संस्थान, दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, चेन्नई मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थीं तथा समारोह की अध्यक्षता संस्थान के निदेशक डॉ. पी. रविचन्द्रन जी ने की।

प्रो. मौर्य जी ने संपर्क भाषा के महत्व पर प्रकाश डालते हुए यह बताया कि किसी भी बहुभाषी देश में संपर्क भाषा वह कड़ी है जो एक-दूसरों को जोड़ती है। अन्यथा काफी समस्याओं का सामना करना पड़ता है। वैसे तो सभी भाषाएं प्रमुख हैं परन्तु भारत में संपर्क भाषा के रूप में हिंदी का महत्व स्वयं ही उद्घाटित है। संस्थानों को चाहिए कि वे हिंदी में कार्य करने वाले अधिकारियों व कर्मचारियों को प्रोत्साहित करें। डॉ. रविचन्द्रन जी ने अपने अध्यक्षीय भाषण में यह बताया कि हिंदी भाषा का प्रयोग बढ़ाने के लिए सरकार हर संभव प्रयास कर रही है तथा हमें भी चाहिए कि संस्थान में हिंदी का ज्यादा से ज्यादा प्रयोग करें। परंतु इसके लिए हमें अधिक प्रयत्न करने की आवश्यकता है चूंकि हमारा संस्थान ''ग'' क्षेत्र के अन्तर्गत आता है।

इस अवसर पर हिंदी में भाषण तथा गायन प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया तथा प्रत्येक प्रतियोगिता के विजेताओं को प्रथम, द्वितीय, तृतीय तथा सांत्वना पुरस्कार प्रदान किए गए। इसके साथ ही अन्य सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन भी किया गया। समारोह के दौरान संस्थान के हिंदी प्रकाशनों की प्रदर्शनी भी लगाई गई।

सीमा सड़क संगठन की अधीनस्थ यूनिट पूर्वी भंडार प्रभाग (ग्रेफ)

1 सितम्बर से 14 सितम्बर, 2004 तक हिंदी दिवस/पखवाड़े का आयोजन बड़े उत्साह से किया गया। इस कार्यक्रम का उद्घाटन यूनिट कमान अधिकारी ले० कर्नल ए० एस० कन्धारी ने किया। उन्होंने अपने सम्बोधन में बताया कि हमारा देश बहुभाषी है जिसमें हिंदी देश के अधिकांश क्षेत्रों में बोली जाती है। यह सम्पर्क भाषा है और देश को एक सूत्र में आबद्ध करने का काम करती है। उन्होंने सभी अधिकारियों/कर्मचारियों से अपील की कि वे अपना कार्यालयीन कार्य अधिक से अधिक हिंदी में करें। इसका व्यापक प्रयोग बढ़ाने के लिए आवश्यक है कि सरल और आसान शब्दों का प्रयोग किया जाए ताकि सभी को समझने में कठिनाई का अनुभव न हो।

इस दौरान हिंदी से संबंधित विभिन्न प्रतियोगिताएं जैसे हिंदी टिप्पण व आलेखन, हिंदी टंकण, निबंध तथा वाद विवाद प्रतियोगिता आयोजित की गई जिसमें कर्मचारियों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। सफल प्रतियोगियों को कमान अधिकारी की अध्यक्षता में आयोजित किए गए समारोह के दौरान नकद पुरस्कार एवं प्रमाण-पत्र प्रदान किए गए।

आकाशवाणी : इलाहाबाद

14 सितम्बर, 2004 को हिंदी दिवस का आयोजन किया गया। आकाशवाणी महानिदेशालय से प्राप्त महानिदेशक महोदय श्री ब्रजेश्वर सिंह की हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में जारी अपील को केंद्र निदेशक महोदय ने सभागार में उपस्थित कार्यालय के अधिकारियों/कर्मचारियों के समक्ष पढ़कर सुनाया। इस अवसर पर राजभाषा हिंदी की दशा एवं दिशा विषय पर हिंदी संगोष्ठी का आयोजन किया गया। वक्ताओं ने आशा व्यक्त की कि सूचना प्रौदयोगिकी के इस युग में कार्यालयों में काम करने के संसाधनों एवं वातावरण के कारण उपस्थित चुनौतियों का सफलतापूर्वक सामना करते हुए कार्यालयों में हिंदी कार्यान्वयन आगे बढ़ेगा साथ ही साथ भूमंडलीकरण के कारण भी हिंदी का प्रचार-प्रसार अधिकाधिक होगा।

15 सितंबर, 2004 को पखवारे का समापन दिवस था। इस दिन दो घंटे की एक हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में श्री कामेश्वर प्रसाद शर्मा, सहायक निदेशक (राजभाषा), आयकर विभाग ने बदलते परिवेश एवं संसाधनों के कारण राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन के समक्ष चुनौतियाँ विषय पर सारगर्भित व्याख्यान दिया। कार्यशाला के उपरांत हिंदी पखवारे के दौरान आयोजित विभिन्न

प्रतियोगिताओं के विजेता प्रतिभागियों को केंद्र निदेशक एवं केंद्र अभियंता ने प्रमाण-पत्र एवं नकद पुरस्कार प्रदान कर सम्मानित किया। केंद्र निदेशक ने राजभाषा के महत्व पर प्रकाश डाला एवं हिंदी में कार्य करने के लिए कर्मचारियों से अपेक्षा की कि वे अपना अधिकाधिक सरकारी कामकाज हिंदी में ही करें। अंत में केंद्र अभियंता ने भी हिंदी में कार्य करने के लिए सभी से आग्रह किया और पखवाड़े के आयोजनों में बढ़-चढ़कर भाग लेने के लिए सभी के प्रति आभार प्रकट किया।

परमाणु ऊर्जा विभाग, भारी पानी संयंत्र तालचेर, जिला : अनगुल (उड़ीसा)

संयंत्र के अधिकारियों/कर्मचारियों में सरकारी कामकाज में राजभाषा हिंदी के प्रति जागरुकता बढ़ाने के उद्देश्य की पूर्ति की दिशा में हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में दिनांक 10-9-2004 एवं 14-9-2004 को विभिन्न हिंदी प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया जिनमें भारी पानी संयंत्र तालचेर, क्रय और भंडार निदेशालय तथा केन्द्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल (भापासं तालचेर) के कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया :.

दिनांक 10-9-2004 को हिंदीभाषी तथा अहिंदीभाषी दोनों वर्गों के कर्मचारियों हेतु आयोजित की गई हिंदी निबन्ध लेखन प्रतियोगिता में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान पाने वाले हिंदीभाषी तथा अहिंदीभाषी दोनों वर्गों के प्रतियोगियों को नकद पुरस्कार क्रमश: रु. 100/-, रु. 75/- एवं रु. 50/- तथा प्रमाण-पत्र संयंत्र के महाप्रबंधक, आदरणीय श्री पी.आर. महान्ति जी के कर कमलों से दिया गया।

महाप्रबंधक, श्री पी.आर. महान्ति जी ने उपस्थित जनों को संबोधित कर उनमें राजभाषा हिंदी के प्रति जागरुकता का संचार किया तथा यह उद्गार व्यक्त किया कि इस संयंत्र के सभी अधिकारी एवं कर्मचारीगण अपना अधिकतम सरकारी कामकाज राजभाषा हिंदी में करने का संकल्प लें तभी भारत सरकार की राजभाषा नीति का सुचारू रूप से अनुपालन सुनिश्चित किया जा सकेगा। उन्होंने सभी अधिकारी एवं कर्मचारीगण से अनुरोध किया कि सर्वप्रथम वे अपने हस्ताक्षर हिंदी में करें तथा छुट्टी का आवेदन पत्र हिंदी में भरें।

ग्रामीण विकास मंत्रालय, कृषि भवन, नई दिल्ली

ग्रामीण विकास मंत्रालय में 1 सितम्बर से 14 सितम्बर, 2004 तक हिंदी पखवाड़ा मनाया गया, जिसमें कई प्रतियोगिताएं आयोजित की गई। 14 सितंबर को इस पखवाड़े का समापन समारोह संपन्न हुआ। इस अवसर पर माननीय ग्रामीण विकास मंत्री डा. रघुवंश प्रसाद सिंह ने विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को नकद पुरस्कार और प्रशस्ति-पत्र प्रदान किए। अपने उद्बोधन में उन्होंने विजेताओं को बधाई देते हुए सभी अधिकारियों और कर्मचारियों का आह्वान किया कि वे अपना अधिकाधिक कार्य हिंदी में करें। उन्होंने बताया कि हिंदी एक संपन्न और व्यापक जनाधार वाली भाषा है। इसके पास शब्दों की विशाल संपदा है और बोलने वाले लोगों की संख्या की दृष्टि से भी यह भाषा दुनिया की दूसरी भाषाओं में सबसे आगे है। आज दुनिया भर में 110 करोड़ से ज्यादा लोग हिंदी बोलते हैं तथा लगभग 135 विश्वविद्यालयों में हिंदी पढ़ाई जाती है। यह भाषा लिखने और बोलने में सरल है और इसमें हर प्रकार के भावों को व्यक्त करने की क्षमता है। उन्होंने कहा कि देश की अधिकांश जनता हिंदी समझती है हमारे मंत्रालय के कार्यक्रमों का उद्देश्य भी इन्हीं लोगों के जीवन को खुशहाल बनाना है इसलिए हमारा प्रयास होना चाहिए कि हम अपने कामकाज में अधिक से अधिक हिंदी का प्रयोग करें तथा ऐसे सरल शब्दों का इस्तेमाल करें जो सबकी समझ में आ जाएं।

अपने स्वागत भाषण में सचिव, ग्रामीण विकास ने कहा कि हिंदी पखवाड़े के आयोजन का उद्देश्य अधिकारियों और कर्मचारियों को कामकाज में राजभाषा हिंदी के प्रयोग के प्रति सजग बनाना तथा हिंदी में सोचने और लिखने का वातावरण तैयार कर कामकाज में उसके प्रयोग को बढ़ावा देना है। उन्होंने आशा व्यक्त की है कि इस तरह के प्रयासों से इस दिशा में निश्चित रूप से प्रगति होगी।

मुख्यालय, मुख्य अभियन्ता, सेवक परियोजना द्वारा 99 सेना डाकघर

दिनांक 01 सितम्बर से 14 सितम्बर, 2004 तक हिंदी दिवस/पखवाड़े का आयोजन किया गया। हिंदी

दिवस/पखवाड़े का उद्घाटन परियोजना के मुख्य अभियन्ता महोदय, ब्रिगेडियर एस. नरसिम्हन ने दिनांक 01 सितम्बर, 2004 को 11.30 बजे दीप जलाकर किया। इस दौरान तीन दिवसीय हिंदी कार्यशाला, हिंदी तथा अहिंदी भाषी कर्मचारियों के लिए हिंदी से संबंधित हिंदी निबंध, हिंदी नोटिंग/ड्राफ्टिंग, हिंदी टंकण तथा हिंदी में अधिक काम प्रतियोगिताओं का अलग-अलग आयोजन किया गया। इन प्रतियोगिताओं के दोनों ग्रुप में प्रथम, द्वितीय, तृतीय तथा सांत्वना पुरस्कार के पात्र प्रतियोगियों को समापन समारोह के दौरान 14 सितम्बर, 2004 को ब्रिगेडियर एस. नरसिम्हन, मुख्य अभियंता, सेवक परियोजना ने नकद पुरस्कार एवं प्रमाण-पत्र प्रदान किए। इस अवसर पर मुख्य अभियंता महोदय ने कहा कि ''हिंदी पखवाड़ा के दौरान विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित करने का उद्देश्य हिंदी में काम को बढ़ाना है। हिंदी में सरकारी काम करने की लगन को पूरे साल बनाए रखें तभी इस प्रकार के आयोजनों को सफल माना जा सकेगा।''

बैंक नोट मुद्रणालय, देवास

उज्जैन वृत्त के आयकर आयुक्त एवं नराकास उज्जैन के अध्यक्ष श्री मुकेश कुमार ने देवास नरकास के तत्वावधान में आयोजित संयुक्त हिंदी पखवाड़े के समापन समारोह के मुख्य अतिथि ने कहा कि भाषाएं संचार का माध्यम है। इसके द्वारा संवाद तभी मायने रखता है जब सामने वाला भी उसी भाषा को समझता हो। इस दृष्टि से हिंदी सबसे ज्यादा समझी जाने वाली भाषा है, इसीलिए इसे राजभाषा का दर्जा दिया गया है। हमारी राजभाषा साहित्यिक तथा सांस्कृतिक रूप से समृद्ध है। लेकिन वर्तमान स्थिति को देखते हुए यह समय की मांग है कि हिंदी को वैज्ञानिक तथा प्रौद्योगिक रूप से समृद्ध बनाया जाए ताकि प्रतिस्पर्धा के दौर में उच्च अध्ययन के लिए अन्य भाषाओं पर निर्भर न रहना पड़े तथा रोजगार के अधिक से अधिक अवसर उपलब्ध हो सकें।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए बैंक नोट मुद्रणालय के उप महाप्रबंधक एवं विभागाध्यक्ष श्री सुमित सिन्हा ने देवास नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की उपलब्धियों का उल्लेख करते हुए इसे देश की विशिष्ट समितियों में से एक बताया। तथा इसकी विशिष्टता को बरकरार रखने के लिए सतत् प्रयत्नशील और सक्रिय रहने का आह्वान किया। उन्होंने हिंदी पखवाड़े के सफल आयोजन और आकर्षक समापन समारोह के लिए पखवाड़ा आयोजन उप समिति को बधाई देते हुए कहा कि समिति संसाधनों तथा कम समय में शहर के इतने सारे कार्यालयों को एक साथ एक मंच पर उपस्थित करने का प्रशंसनीय कार्य किया तथा अपने प्रयासों को सार्थक रूप प्रदान कर इस आयोजन को सफल और गरिमामय बनाया। उन्होंने हिंदी पखवाड़े के विजेताओं को बधाई देते हुए सभी प्रतियोगियों के इसी परंपरा को लगातार आगे बनाए रखने तथा सरकारी कामकाज में राजभाषा के सफल कार्यान्वयन का अनुरोध भी किया। इसके साथ ही उन्होंने यह आशा भी व्यक्त की कि नराकास के सदस्य और कर्मचारी इसी सक्रियता से भविष्य में भी राजभाषा के प्रचार-प्रसार में अपना योगदान प्रदान करते हुए समिति द्वारा आयोजित कार्यक्रमों में भाग लेकर इसकी शान बढ़ाते रहेंगे।

इस अवसर पर सांस्कृतिक कार्यक्रम भी आयोजित किया गया तथा दुर्लभ पी-नट कैक्टस के मनोहारी पुष्प के मुखपृष्ठ से सुसज्जित नराकास की पत्रिका गांधर्व के नौवें अंक का विमोचन भी किया गया।

दूरदर्शन केन्द्र, नागपुर

1 सितम्बर से 14 सितम्बर, 2004 तक हिंदी पखवाड़ा मनाया गया। अपने अध्यक्षीय भाषण में उन्होंने भाषायी द्वेष को दूर करने तथा एकजुट होकर राजभाषा हिंदी की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए निष्ठापूर्वक कार्य करने की प्रेरणा दी। उन्होंने इस अवसर पर प्रसार भारती के मुख्य कार्यकारी माननीय श्री के. एस. सरमा द्वारा प्रेषित अपील को पढ़कर सुनाया। अधिकारियों/कर्मचारियों को हिंदी में कार्य करने के लिए प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से पखवाड़े के दौरान हिन्दी की विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया था। 14 सितम्बर को ''हिंदी दिवस'' समारोह के साथ ही पखवाड़े का समापन किया गया। इस अवसर पर केंद्र के निदेशक श्री सतीश साने ने विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को नकद पुरस्कार तथा प्रशस्ति-पत्र प्रदान किये। हिंदी दिवस के अवसर पर दूरदर्शन के महानिदेशक द्वारा भेजी गई अपील को पढ़ते हुए उन्होंने इस बात पर प्रसन्नता व्यक्त की कि उनके कार्यकाल में पिछले दो वर्षों में नागपुर दूरदर्शन में हिंदी के कार्य में काफी विकास हुआ है। उन्होंने

दूरदर्शन के स्टाफ से यह अनुरोध किया कि वे अपने उत्साह को कायम रखते हुए आने वाले समय में हिंदी के लिए और अधिक कार्य करें। साथ ही उन्होंने केंद्र में हिंदी साहित्यकारों की अच्छी-2 किताबें खरीदने के लिए भी कहा।

भारत डायनामिक्स लिमिटेड, कंचनबाग, हैदराबाद

हिंदी मासोत्सव का उद्घाटन अधिशासी निदेशक (कार्मिक एवं प्रशासन) तथा राजभाषा कार्यान्वयन समिति के अध्यक्ष श्री जी. रंजीत नारायण द्वारा किया गया।

उन्होने अपने भाषण में कहा, "इन प्रतियोगिताओं का उद्देश्य हम सभी को हिंदी भाषा के इस्तेमाल में आत्मनिर्भर बनाना है। हम प्रयोग करते रहेंगे तो भाषा विकसित होगी, बढ़ेगी अधिनियम और नियम हमें रास्ता बताते हैं ; सरकारी आदेश हमें प्रेरणा देते हैं लेकिन जब तक हम खुद आत्मविश्वास से सोचते नहीं तब तक हम भाषा के मामले में दूसरों पर निर्भर रहेंगे । जर्मनी, चीन, जापान आदि के उदाहरणों से हम प्रेरणा लें। आपने पढ़ा होगा कि अॅथेन्स में ऑलिम्पिक्स के समाचार देने के लिए गये हमारे देश के एक कैमरामैन के कैमरे की लेन्स फूट गयी थी। वह नयी लेन्स खरीदने निकला लेकिन शहर भर में कहीं पर अंग्रेजी बोलने वाला नहीं मिला। किसी भी दुकान पर अंग्रेजी नाम पट्ट नहीं था। अंततोगत्वा एक पुलिस वाले की मेहरबानी से टूटी फूटी अंग्रेजी की मदद से उसे एक दुकान मिल गयी। इन बातों से स्पष्ट होता है कि अंग्रेजी केवल इंग्लैंड और अमेरिका के कुछ हिस्से में समझी जाती है। सभी देश अपने आत्म गौरव को भाषा के माध्यम से ज़िन्दा रख़ते हैं। हमें भी अपना गौरव हिंदी के प्रयोग से जीवित रखना और बढ़ाना है।"

इस अवसर पर गीत-गायन प्रतियोगिता भी रखी गयी, जिसमें देश-भक्ति गीत, भजन, गज़ल तथा गीत प्रस्तुत किये गये । इसके अतिरिक्त भाषण प्रतियोगिता, कविता पाठ प्रतियोगिता, लघु-कथा लेखन प्रतियोगिता तथा हिंदी फिल्मी अंताक्षरी का भी आयोजन किया ।

क्षेत्रीय कार्यालय कर्मचारी राज्य बीमा निगम "पंचदीप भवन" नन्दानगर, इन्दौर (म.प्र.)

क्षेत्रीय कार्यालय द्वारा 1 सितम्बर से 14 सितम्बर, 2004 तक हिंदी पखवाड़े का आयोजन किया गया। 1 सितम्बर को राजभाषा शाखा द्वारा हिंदी पुस्तक प्रदर्शनी लगायी गयी। प्रदर्शनी का उद्घाटन हिंदी के शीर्षस्थ गीतकार श्री चन्द्रसेन विराट ने किया।

पुस्तकों को देखने में अधिकारियों/कर्मचारियों ने गहरी रुचि दिखाई, जिसका यह सुखद परिणाम सामने आया है कि पुस्तकें जारी करवाने वालों की संख्या में वृद्धि आयी है। इसी अवसर पर कार्यालय के सभागार में एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसमें बोलते हुए मुख्य अतिथि श्री चन्द्रसेन विराट ने कहा कि हिंदी की विशेषताओं को देखते हुए अब यह लगता है कि मंत्रों को भी हिंदी में सृजा जाए उन्होंने इस बात पर ज़ोर डाला कि सभी कार्य हिंदी में किए जाएं। अध्यक्षता कार्यकारी क्षेत्रीय निदेशक श्री जालिमसिंह अहिरवाल ने की। इस अवसर पर श्री एस. मुखर्जी उपनिदेशक (वित्त) का अभिनन्दन किया गया। श्री मुखर्जी ने हिंदी की प्रबोध व प्रवीण परीक्षाएं हाल में ही उत्तीर्ण की हैं।

मुख्यालय द्वारा अनुमोदित टिप्पण हिंदी आलेखन, निबंध, वाक् एवं अन्ताक्षरी प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। इन प्रतियोगिताओं में बड़ी संख्या में प्रतिभागियों ने भाग लिया। दिनांक 14 सितम्बर, 2004 को हिंदी दिवस समारोह मनाया गया।

मुख्य अतिथि के रूप में सुविख्यात इतिहासविद् एवं साहित्यकार डॉ० शरद पगारे ने राजभाषा के अनेक ऐतिहासिक सन्दर्भों से श्रोताओं को परिचित करवाया। अपने विद्वतापूर्ण उद्बोधन में डॉ० पगारे ने कहा कि बदलते वैश्विक परिदृश्य में हिंदी का विकास बहुत संभव है क्योंकि बहुराष्ट्रीय कम्पंनियाँ अपने विज्ञापनों आदि के लिए हिंदी का चुनाव कर रही हैं। विलगेट्स हिंदी में सॉफ्टवेयर तैयार कर रहा है जो हिंदी के विकास में सहायता प्रदान करेगा।

अध्यक्षीय उद्बोधन में क्षेत्रीय निदेशक श्री के. एन. गोविन्दन ने हिंदी में काम-काज करने का आवाहन किया

तथा गरिमामय भाषा के प्रयोग पर बल दिया। सहायक निदेशक राजभाषा श्री धर्मेन्द्रकुमार गुप्त ने क्षे. का. इन्दौर की राजभाषा संबंधी प्रगति पर प्रकाश डाला। कार्यालय की गृह पत्रिका "मालव ज्योति" के 9वें अंक का विमोचन अतिथियों ने किया। मुख्य अतिथि के कर कमलों से विजेता प्रतिभागियों को पुरस्कार प्रदान किए गए। कार्यक्रम का संचालन अनुवादक श्री राकेश शर्मा व सतीशचन्द्र चड्ढा ने किया। आभार सहायक निदेशक (राजभाषा) श्री धर्मेन्द्रकुमार गुप्त ने माना।

आयकर विभाग, पटियाला

1-09-2004 से 15-09-2004 तक हिंदी पखवाड़ा मनाया गया। इस दौरान प्रभार स्तर पर हिंदी प्रतियोगिताओं का आयोजन करवाया गया,जिसमें विभाग के अधिकारियों/ कर्मचारियों ने भाग लिया।

दिनांक 17-09-2004 को हिंदी दिवस एवं पुरस्कार वितरण समारोह करवाया गया।

श्रीमती प्रौमिला भारद्वाज, आयकर आयुक्त पटियाला ने प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार वितरित किए। वर्ष 2003-2004 के लिए आयोजित हिंदी नोटिंग एवं ड्राफ्टिंग प्रतियोगिता के विजेताओं को भी नकद पुरस्कार दिए गए। आयकर आयुक्त, ने सभी विजेताओं को मुबारकबाद दी एवं कहा कि आयकर विभाग, पटियाला ने "ख" क्षेत्र में वर्ष 2003-2004 के दौरान हिंदी में अच्छा काम किया है, इसके लिए आप सब लोग बधाई के पात्र हैं। उन्होंने उपस्थित अधिकारियों एवं सदस्यों से अपील की कि चाहे हिंदी में काम करने में कुछ कठिनाईयां आती भी हैं तो उनकी ओर ध्यान दिए बिना आगे बढ़ते जाना है। हिंदी हमारी मातृभाषा होने के साथ-साथ देश के बहुसंख्यक लोगों की भाषा है क्योंकि यह सबसे अधिक बोली और समझी जाती है। हिंदी ने सारे देश को एक सूत्र में बांध रखा है। हमें हिंदी में काम इसलिए नहीं करना चाहिए कि हमें प्रतियोगिताओं में भाग लेना है बल्कि इसलिए कि यह हमारी अपनी भाषा है। उन्होंने इस समारोह से जुड़े सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को कार्यक्रम को साकार रूप देने के लिए धन्यवाद दिया।

श्री दयाशंकर, आयकर आयुक्त अपील, पटियाला ने कहा कि हमें हिंदी की बजाय अंग्रेजी में कम संप्रेषित करते हैं। हमें गर्व महसूस करना चाहिए कि हमारे संविधान ने राष्ट्र को एक भाषा दी है, जो हिंदी/राजभाषा है। प्रत्येक विभाग में एक हिंदी इकाई अधिकारियों/कर्मचारियों की सहायता के लिए कार्यरत है। विभाग की हिंदी यूनिट के सदस्य बधाई के पात्र हैं, जो राजभाषा के कार्यान्वयन में जुटे हुए हैं।

स्टील अथॉरिटी ऑफ इंडिया लि०, पूर्वी क्षेत्र, कोलकाता

क्षेत्रीय कार्यालय को राजभाषा कार्यान्वयन समिति के अनुसार दिनांक 8-9-2004 से 21-9-2004 की अवधि को राजभाषा रूप में मनाया गया। इस कार्यालय में विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित की गई।

राजभाषा सृजनात्मक लेखन प्रतियोगिता 8-9-2004 को 18 कर्मियों ने भाग लिया, जिन्हें एक तस्वीर दिखा कर उसके बारे में लिखने के लिए कहा गया। दूसरे दौर में अपने किसी यात्रा वृतान्त को लिखने के लिए कहा गया। अहिंदी भाषी कर्मियों ने अपने ज्ञान के मुताबिक दोनों विवरणों में उद्गार बक्त किए। इसके अतिरिक्त मूक अभिनय, अंताक्षरी, हिंदी नोटिंग/ड्राफ्टिंग तथा वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

हिंदी दिवस एवं हिंदी पुस्तक मेले का आयोजन किया गया। हिंदी की विभिन्न पुस्तकें/पत्र/पत्रिकाएं प्रदर्शित की गईं।

पुरस्कार वितरण के उपरान्त क्षे.प्र./एफ. पी. ने कहा, जिस उत्साह से आपने इनमें भाग लिया है उसी उत्साह से अपनी सीट का काम भी हिंदी में करते रहें। मु.का. प्र. ने हिंदी में इतना अच्छा स्वागत भाषण दिया है, यह सराहनीय है और राजभाषा पखवाड़ा का ऐसा सुन्दर आयोजन सराहनीय है। ■

इंदिरा गांधी राजभाषा पुरस्कार एवं ज्ञान विज्ञान मौलिक पुस्तक लेखन पुरस्कार समारोह

14 सितम्बर, 2004 को हिंदी दिवस के अवसर पर नई दिल्ली के विज्ञान भवन में आयोजित समारोह में गृह मंत्री, श्री शिवराज वि. पाटील ने समारोह के अध्यक्ष, माननीय श्री मानिकराव गावित, गृह राज्य मंत्री और माननीय श्री श्रीप्रकाश जायसवाल, गृह राज्य मंत्री की उपस्थिति में राजभाषा नीति के कार्यान्वयन में उत्कृष्ट एवं सराहनीय कार्य करने के लिए भारत सरकार के मंत्रालयों, विभागों, उपक्रमों, वित्तीय संस्थाओं को **वर्ष 2002-2003 के लिए इंदिरा गांधी राजभाषा पुरस्कार प्रदान किये। इस अवसर पर वर्ष 2001-2002 के लिए राष्ट्रीय ज्ञान विज्ञान मौलिक पुस्तक लेखन पुरस्कार भी प्रदान किए गए।** श्री पाटील ने राजभाषा विभाग द्वारा लगाई गई पत्र-पत्रिका प्रदर्शनी का अवलोकन किया। इस प्रदर्शनी में केंद्र सरकार के कार्यालयों/बैंकों/उपक्रमों आदि द्वारा प्रकाशित चयनित पत्रिकाओं तथा राजभाषा विभाग द्वारा "ज्ञान विज्ञान" मौलिक पुस्तक लेखन योजना के तहत राजभाषा विभाग द्वारा पुरस्कृत पुस्तकें तथा राजभाषा विभाग के प्रकाशनों को अवलनोकनार्थ रखा गया था।

इंदिरा गांधी पुरस्कार योजना के अंतर्गत केंद्र सरकार के 300 से अधिक स्टाफ वाले मंत्रालयों/विभागों में **खाद्य और सार्वजनिक वितरण विभाग, रेलवे मंत्रालय (रेलवे बोर्ड) तथा भारत के नियंत्रक-महालेखा परीक्षक के कार्यालय** को वर्ष 2002-2003 के लिए क्रमशः प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय पुरस्कार दिए गए। केंद्र सरकार के 300 से कम स्टाफ वाले मंत्रालयों/विभागों में **सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, पर्यटन विभाग तथा वस्त्र मंत्रालय** को वर्ष 2002-2003 के लिए क्रमशः प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय पुरस्कार दिए गए।

हिंदी में मौलिक पुस्तक-लेखन के लिए **श्री महेंद्र पांडेय** को उनकी पुस्तक "तापमान में वृद्धि और जलवायु परिवर्तन" के लिए 20 हजार रुपए का प्रथम पुरस्कार, **श्री विमल कुमार श्रीवास्तव** को उनकी पुस्तक "आधुनिक हवाई अड्डे और उनकी निर्माण योजना" के लिए 16 हजार रुपए का द्वितीय पुरस्कार और **डा० शिवाकान्त बाजपेयी** को उनकी पुस्तक "प्रारंभिक बौद्ध धर्म-संघ एवं समाज" के लिए 10 हजार रुपए का तृतीय पुरस्कार प्रदान किया गया।

राष्ट्रीय ज्ञान-विज्ञान मौलिक पुस्तक लेखन योजना के अंतर्गत **सुश्री नीलम पटेल व श्री टी०बी०एस० राजपूत** को उनकी पुस्तक "ड्रिप सिंचाई के सिद्धांत एवं कार्यान्वयन" के लिए पचास हजार रुपए की पुरस्कार राशि प्रदान की गई और **श्री सुरेश कांत, डॉ० सुरेंद्र कटारिया, डॉ० सुभाष गौड़, श्री जे० वसु व सुश्री जे० सुरंजना, डॉ० राजीव शर्मा, श्री सुबह सिंह यादव** तथा **श्री सत्यवीर सिंह** को भी उनकी पुस्तकों के लिए दस-दस हजार रुपए के पुरस्कारों से सम्मानित किया गया।

इस समारोह में संसद सदस्य एवं केंद्रीय सरकार के मंत्रालयों, विभागों, कार्यालयों, उपक्रमों तथा राष्ट्रीयकृत बैंकों और नगर राजभाषा कार्यान्वन समितियों के वरिष्ठ अधिकारी और राजभाषा अधिकारी उपस्थित थे।

प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए श्री पाटील ने कहा कि भाषा मानव जीवन की एक महत्वपूर्ण इकाई है जिसके माध्यम से मनुष्य अपने भावों व विचारों को अभिव्यक्त करता है। यदि अकेला शब्द **भाषा** ही मानव जीवन में इतना मूल्यवान और महत्वपूर्ण है तो उसके साथ **राज** शब्द जुड़ जाने पर **राजभाषा** के रूप में इसका महत्व और भी बढ़ जाता है, क्योंकि तब यह देश की जनता और जनता के द्वारा चुनी गई सरकार के बीच संवाद का एक महत्वपूर्ण माध्यम बन जाती है। उन्होंने स्वतंत्रता संग्राम के दौरान स्वराज्य, स्वदेशी और स्वभाषा के महत्व पर भी प्रकाश डाला। श्री पाटील ने यह भी कहा कि भारत जैसे विशाल व बहुभाषी लोकतंत्र में राजकाज की भाषा आम जनता की भाषा होनी चाहिए। यह दायित्व हिंदी बखूबी निभाती रही है। मौलिक चिंतन अपनी भाषा में ही संभव है। इसलिए, हमें अपनी भाषाओं को व्यवहार में लाना होगा, जिससे कि हम विज्ञान व प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में नए कीर्तिमान स्थापित कर सकें और इसका लाभ पहुंचा सकें।

इस अवसर पर गृह राज्य मंत्री श्री मानिक राव गावित जी ने कन्नड़, मलयालम, तमिल और तेलुगु भाषाओं के माध्यम से लीला हिंदी प्रबोध, प्रवीण एवं प्राज्ञ पाठ्यक्रम का वर्ल्ड वाइल्ड वेब पर लोकार्पण किया। श्री गावित ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि राजभाषा हिंदी का प्रयोग तथा इसका प्रचार-प्रसार हम सभी की जिम्मेदारी है। इस कार्य को विभागों और दफ्तरों में अनुवादकों तक ही सीमित नहीं करना चाहिए। हमारे कई अधिकारी और कर्मचारी अच्छी हिंदी बोल लेते हैं और अपना सरकारी कामकाज हिंदी में कर सकते हैं। इससे हिंदी का प्रयोग निश्चित रूप से बढ़ेगा।

राजभाषा विभाग के सचिव श्री अनुपम दासगुप्ता ने विशिष्ट अतिथियों का स्वागत करते हुए विभाग की विभिन्न उपलब्धियों और भावी योजनाओं का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया। राजभाषा विभाग के प्रमुख कार्यकलापों का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा कि विभाग का यह प्रयत्न है कि राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार को प्रेरणा, प्रोत्साहन, स्वतः-स्फूर्त सहयोग और आधुनिक तंत्र-ज्ञान के चार सशक्त पहियों पर गतिमान रखा जाए।

इस अवसर पर गांधर्व महाविद्यालय के कलाकारों ने विभिन्न भारतीय भाषाओं के गीत प्रस्तुत करके विविधता में एकता का परिचय दिया।

क्षेत्रीय अनुसंधान प्रयोगशाला, जोरहाट (असम) को प्रथम राजभाषा पुरस्कार

भारत सरकार, राजभाषा विभाग द्वारा केंद्रीय सरकार के कार्यालयों, प्रतिष्ठानों, बैंकों आदि में राजभाषा हिंदी का प्रगामी प्रयोग को बढ़ावा देने एवं मूल्यांकन करने के उद्देश्य से जोरहाट में पूर्व स्थापित नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की दिनांक 19-8-04 को ओ. एन. जी. सी. चिनामारा के सभा हॉल में आयोजित 13वीं बैठक में वर्ष 2003-04 के लिए जोरहाट में उत्कृष्ट राजभाषा कार्यान्वयन हेतु लगातार दूसरी बार क्षेत्रीय अनुसंधान प्रयोगशाला, जोरहाट को प्रथम पुरस्कार से सम्मानित किया गया। बैठक में जोरहाट स्थित सभी केंद्रीय कार्यालय के प्रधान/प्रतिनिधि उपस्थित थे। बैठक ओ. एन. जी. सी., जोरहाट के बेसिन मैनेजर श्री बी मजुमदार की अध्यक्षता में संपन्न हुआ।

बैंक ऑफ महाराष्ट्र को प्राप्त "इंदिरा गांधी राजभाषा पुरस्कार"

भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा विज्ञान भवन, नई दिल्ली में हिंदी दिवस समारोह के अवसर पर बैंक ऑफ महाराष्ट्र को राजभाषा के क्षेत्र में बेहतर कार्य निष्पादन के लिए "इंदिरा गांधी राजभाषा पुरस्कार" प्रदान किया गया। गृह मंत्री श्री शिवराज पाटील के हाथों बैंक ऑफ महाराष्ट्र के महाप्रबंधक (कार्मिक) श्री ए० के० भूमकर ने शील्ड ग्रहण की।

दूरदर्शन केन्द्र : राज कोट पुरस्कार वित्तरण समारोह

केंद्र में आयोजित विभिन्न गतिविधियों के साथ-साथ हिंदी पखवाड़ा समापन एवं पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन दिनांक 28 सितम्बर, 2004 को स्टुडियो—परिसर में किया गया, कार्यक्रम के मुख्य अतिथि के रूप में केंद्रीय विद्यालय राजकोट के प्राचार्य श्री जी. के. रामटेके तथा मुख्य वक्ता के रूप में धर्मेन्द्रसिंह कॉलेज राजकोट के प्राचार्य डा. सर्वदमन वोरा को आमंत्रित किया गया था, कार्यक्रम की अध्यक्षता केंद्र नियामक श्री अरविन्द मर्चन्ट ने की।

सहायक केंद्र निदेशक डा० चन्द्रकुमार वरठे ने हिंदी पखवाड़े के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं की जानकारी दी। तत्पश्चात् सभी विजेता प्रतियोगियों को नकद पुरस्कार एवं प्रमाणपत्र प्रदान किये गये।

मुख्य वक्ता डॉ० सर्वदमन वोरा ने हिंदी के विकास के साथ-साथ उसके लोकपरक स्वरूप का सुबोध एवं सरल भाषा में विवेचन करते हुए कहा कि हिंदी को अगर किसी ने अपना योगदान दिया है तो वह है अहिंदी भाषियों ने/महात्मा गांधीजी की मातृभाषा गुजराती थी, लेकिन उन्होंने हिंदी को प्रतिष्ठित करने में अपना सक्रिय योगदान दिया, इतना ही नहीं कितने ही अन्य अहिंदी भाषा-भाषी लोग हैं, जिन्होंने हिंदी के प्रसार-प्रचार में अपना सार्थक योगदान दिया है।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री जे. के. रामटेके ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि हिंदी में अधिक से अधिक कार्य करना तभी संभव होगा, जब हम हिंदी को अपने दैनंदिन जीवन में उपयोग में लायेंगे।

इस अवसर पर सहायक केंद्र निदेशक डॉ० चंद्रकुमार वरठे का भी अभिनन्दन किया गया, तथा उन्हें जयपुर (दूरदर्शन केंद्र) तबादले पर भावभिनी विदाई भी दी गयी।

कार्यक्रम का संचालन डॉ० शैलेश टेवाणी ने किया। इस अवसर पर उपस्थित सभी कर्मचारियों ने कार्यक्रम को सफल बनाया। ■

संयुक्त उत्तर एवं दिल्ली क्षेत्र राजभाषा सम्मेलन, चंडीगढ़

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय के उत्तर क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय गाजियाबाद तथा दिल्ली द्वारा दिनांक 29-30 नवम्बर 2004 को चंडीगढ़ में संयुक्त क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन का आयोजन किया गया। इस सम्मेलन की अध्यक्षता सचिव, रा. भा. विभाग श्री बालेश्वर राय ने की और पुरस्कार वितरण माननीय गृह राज्य मंत्री श्री माणिकराव गावीत के करकमलों से संपन्न हुआ। सम्मेलन का मुख्य स्वर था सहभागिता, भागीदारी और प्रौद्योगिकीय आधुनिकीकरण द्वारा राजभाषा का कार्यान्वयन। विषय के अनुरूप इस अवसर पर कंप्यूटर प्रदर्शनी का भी आयोजन किया गया था। सम्मेलन का आकर्षण विशेष रहा राजभाषा विभाग द्वारा लगाई गई पुस्तक, पत्र-पत्रिका प्रदर्शनी। इस प्रदर्शनी में दोनों दिन बड़ी संख्या में प्रतिभागियों ने शिरकत की।

दिनांक 29 नवम्बर, 2004 को सम्मेलन दो सत्रों में संपन्न हुआ। प्रथम सत्र में राजभाषा विभाग में निदेशक (नीति) श्री बृजमोहन सिंह नेगी द्वारा संघ की राजभाषा नीति व कार्यान्वयन पर प्रकाश डाला गया। उनहोंने 14 सितम्बर, 1949 को संविधान सभी द्वारा हिंदी को राजभाषा के रूप में अंगीकार किए जाने से लेकर 12-10-2004 को तमिल को देश की पौराणिक भाषा घोषित किएं जाने तक के घटनाक्रम का विश्लेषणात्मक रोचक और ज्ञानवर्धक वर्जन किया। दूसरे सत्र में डॉ० सुरेन्द्र कुमार शर्मा, सलाहकार, आयुष विभाग, स्वास्थय मंत्रालय द्वारा आयुर्वेद की वैज्ञानिकता पर हिंदी में व्याख्यान दिया गया। उन्होंने सिद्ध किया कि आयुर्वेद में पूर्णत: वैज्ञानिक पद्धति पर आधारित चिकित्सा पद्धति मोजूद है और यह आवश्यक नहीं कि हम पश्चिमी विचारकों द्वारा निर्धारित मानदंडों के अनुसार ही विज्ञान की कसौटी पर अपने ज्ञान को परखें। प्रथम दिवस के मुख्य अतिथि के रूप में पधारे डॉ० पवन कुमार, निदेशक केंद्रीय वैज्ञानिक उपकरण संगठन ने अपने अभिभाषण में कहा कि आज हम सूचना प्रौद्योगिकी के दौर में हैं और राजभाषा को भी तेजी से उन्नतिशील प्रौद्योगिकी के साथ कदम मिलाकर चलना है। उन्होंने इस संबंध में प्रसन्नता व्यक्त की कि काफी केंद्रीय कार्यालयों की वेबसाइटें-हिंदी में भी हैं तथा तकनीकी संस्थानों और वैज्ञानिक संस्थाओं के वैज्ञानिक भी अब शोधपत्र हिंदी में प्रस्तुत कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि अनुसंधान तभी सार्थक होगा जबकि उसे जन-जन तक पहुंचाया जाएगा और यह राजभाषा हिंदी के माध्यम से ही संभव है।

समारोह के अध्यक्ष सचिव, राजभाषा विभाग श्री बालेश्वर राय ने अपने सारगर्भित उद्बोधन में कहा कि राजभाषा किसी भी देश की पहचान होती है और उसकी संस्कृति का वाहक होती हैं। हमारी क्षेत्रीय भाषाओं में देश के विभिन्न भागों की संस्कृति समाहित है और राजभाषा उन सभी संस्कृतियों का संगम है। उन्होंने वैज्ञानिकों को आह्वाहान किया कि वे अपना मौलिक शोध हिंदी में करें। संपर्क भाषा के रूप में हिंदी की अनिवार्यता पर जोर देते हुए उन्होंने कहा कि भाषा को सरल, सुबोध और सुगम रखने से वह अधिक स्वीकार्य होगी।

द्वितीय सत्र में श्री राजेन्द्र प्रसाद शर्मा, वैज्ञानिक रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन ने परखनली में प्रजनन जैसे गूढ़ विषय को राजभाषा हिंदी के माध्यम से मंत्रमुगध श्रोताओं के समक्ष रक्षा। उन्होंने यह बताया कि कोई भी विषय प्रौद्योगिकीय अथवा तकनीकी रूप से कितना भी गूढ़ क्यों न हो उसे हिंदी में प्रस्तुत किया जा सकता है। इसके बाद भारत सरकार के संस्थान सी-डेक पुणे के प्रतिनिधि ने राजभाषा विभाग के द्विभाषी साफ्टवेयरों की विस्तृत जानकारी दी। उन्होंने लीला प्रबोध-प्रवीण तथा प्राज्ञ साफ्टवेयर के द्वारा तमिल, तेलुगु, मलयालम तथा कन्नड़, भाषा के माध्यम से स्वयं हिंदी शिक्षण की सुविधा से प्रतिभागियों का परिचय कराया। इसी तरह "मंत्र राजभाषा" नामक साफ्टवेयर के द्वारा प्रशासनिक तथा वित्तीय क्षेत्रों के दस्तावेजों के हिंदी अनुवाद की सुविधा के बारे में परिचय प्रदान किया गया। प्रस्तुती के दौरान बड़ी संख्या में प्रतिभागियों ने कंप्यूटर के विभिन्न प्रकार के प्रयोगों के प्रति रूचि दिखाई।

दिनांक 30-11-2004 को सम्मेलन का दूसरा दिन तकनीकी प्रस्तुतियों तथा पुरस्कार वितरण को समर्पित था। प्रथम सत्र की मुख्य अतिथि श्रीमती बलजीत बैंस, मुख्य आयकर आयुक्त चंडीगढ़ थी। राजभाषा विभाग के निदेशक तकनीकी श्री विनोद कुमार श्रीवास्तव ने हिंदी में तकनीकी सुविधाओं के अलावा प्रशासनिक तथा वित्तीय क्षेत्र में अनुवाद

सुविधा प्रदान करने के लिए "मंत्र राजभाषा" नामक अनुवाद साफ्टवेयर के अनुप्रयोग के बारे में विस्तार से बताया। उन्होंने कहा कि फिलहाल हिंदी शिक्षण साफ्टवेयर से अंग्रेजी के अलावा मलयालम, कन्नड़, तमिल तथा तेलुगु भाषाओं के माध्यम से हिंदी सीखी जा सकती है और इसमें अब शेष भारतीय भाषाओं से हिंदी सीखने की सुविधा पर राजभाषा विभाग और सी-डैक कार्य कर रहे हैं। अब इस साफ्टवेयर में स्पीच-टू-टैक्सट सुविधा भी जुटाई जा रही है।

द्वितीय सत्र में सी-डेक, माइक्रोसॉफ्ट जैसी सुप्रसिद्ध कंपनियों के अलावा, सॉफ्टेक, एस आर जी, नैचुरल टैक्नोलॉजी, शक्ति आफ्सि जैसी कंपनियों ने अपने द्विभाषी उत्पादों का प्रदर्शन किया। माइक्रोसॉफ्ट कंपनी ने अपने प्रस्तुति में बताया कि अब कंप्यूटर कमांड भी हिंदी में तैयार कर दी गई हैं। प्रतिनिधि ने कहा कि खुली अर्थव्यवस्था के इस दौर में हिंदी अतयंत सशक्त और समृद्ध माध्यम के रूप में उभरी है इसलिए माइक्रोसाफ्ट ने सभी कंप्यूटर अनुप्रयोग प्रयोक्ताओं को हिंदी माध्यम से उपलब्ध कराए हैं।

अंत में समारोह के मुख्य अतिथि श्री माणिकराव गावीत, गृह राज्य मंत्री, भारत सरकार ने वर्ष 2003-04 के लिए हिंदी में सर्वश्रेष्ठ कार्य करने के लिए क्षेत्रीय राजभाषा पुरस्कार प्रदान किए। क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय दिल्ली के अधीन केंद्रीय कार्यालयों के लिए प्रथम पुरस्कार केंद्रीय अभिलेख कार्यालय, भा.ति.सी. पुलिस आर. के. पुरम, नई दिल्ली को तथा द्वितीय और तृतीय पुरस्कार क्रमश: संपदा निदेशालय, निर्माण भवन और केंद्रीय उत्पाद एवं सीमा शुल्क, नई दिल्ली को प्रदान किए गए। इसी तरह उपक्रम तथा बैंक श्रेणी में प्रथम पुरस्कार क्रमश: भारतीय जीवन बीमा निगम, मंडल कार्यालय, 11, लक्ष्मी नगर, नई दिल्ली तथा सेंट्रल बैंक आफ इंडिया, क्षेत्रीय कार्यालय बी, चांदनी चौक, नई दिल्ली को प्रदान किए गए। नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति दिल्ली (बैंक) को प्रथम तथा नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, दिल्ली (उपक्रम) को द्वितीय पुरस्कार प्रदान कियां गया। क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय, गाजियाबाद के अधीन "क" क्षेत्र के केंद्रीय कार्यालय श्रेणी में कर्मचारी राज्य बीमा निगम, क्षेत्रीय कार्यालय कानपुर को तथा उपक्रम श्रेणी में भारतीय जीवन बीमा निगम, मंडल कार्यालय, वाराणसी को और बैंक श्रेणी में पंजाब नेशनल बैंक, क्षैत्रिय कार्यालय मंडी को तथा नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति पानीपत (कार्यालय) को प्रथम पुरस्कार प्रदान किए गए। "ख" क्षेत्र के केंद्रीय कार्यालय श्रेणी में कार्यालय मुख्य आयकर आयुक्त चंडीगढ़, उपक्रम श्रेणी में भारत पेट्रोलियम, जम्मू प्रादेशिक कार्यालय जम्मू बैंक श्रेणी में पंजाब एंड सिंध बैंक शाखा कार्यालय, जम्मू तथा नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति जम्मू को प्रथम पुरस्कार प्रदान किए गए।

गृह राज्य मंत्री जी ने अपने आशीर्वचन में सभी विजेताओं को पुरस्कार प्राप्त करने पर शुभकामनाएं दीं तथा सभी प्रतिभागियों का आह्वान किया कि वे अपने कार्यालयों में हिंदी का प्रयोग बढ़ाने के पूरे प्रयास करें। अपने उद्बोधन में श्री गावीत ने कहा कि भाषा मानवीय जीवन की एक महत्वपूर्ण इकाई होती है जिसके माध्यम से मनुष्य अपने भावों व विचारों को अभिव्यक्त करता है, उन्हें दूसरे व्यक्ति तक संप्रेषित करता है। कदाचित् इसी कारण प्राचीन भारतीय आचार्यों ने भाषा को देवीय उपहार माना है। उन्होंने कहा कि यदि अकेले भाषा शब्द ही जीवन में इतना मूल्यवान और महत्वपूर्ण है तो इसके साथ राज जैसा मूल्यवान शब्द जुड़ जाने पर राजभाषा का महत्व और मूल्य निश्चय ही कई गुना बढ़ जाता है। प्रादेशिक स्तर पर अपनी-अपनी राजभाषा का प्रयोग करते हुए हमें राष्ट्रीय स्तर पर संघ की राजभाषा में काम करना है। जनता के सहयोग और सहकार के लिए सरकारी नीतियों और योजनाओं का जनता तक पहुंचना जरूरी है। इसके लिए ऐसी भाषा का प्रयोग करना आवश्यक हो जाता है जो सहज और सर्व-ग्राह्य है और संविधान निर्माताओं ने इसके लिए गहन विचार-विमर्श के बाद हिंदी भाषा को चुना। समारोह के अंत में उन्होंने राजभाषा विभाग के अनुसंधान एकक द्वारा लगाई गई पुस्तक प्रदर्शनी का अवलोकन किया। प्रदर्शनी में भारत सरकार के विभिन्न कार्यालयों, बैंकों, उपक्रमों, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों तथा विभिन्न स्वयं सेवी संस्थाओं द्वारा प्रकाशित हिंदी पत्रिकाओं की विशाल प्रदर्शनी को देखकर मंत्री जी भाव-विह्वल हो उठे। उन्होंने राजभाषा विभाग द्वारा प्रकाशित विभिन्न पत्रिकाओं, प्रकाशनों का भी अवलोकन किया तथा इन्हें अत्यंत उपयोगी बताया।

समारोह के अंत में श्री मदन लाल गुप्त, संयुक्त सचिव ने मुख्य अतिथि महोदय, अध्यक्ष महोदय तथा सभी प्रतिभागियों का धन्यवाद करते हुए सभी केंद्रीय सरकार के कार्यालयों से अनुरोध किया कि वे ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में हिंदी में प्रौद्योगिकीय सुविधाएं उपलब्ध कराएं। उन्होंने शैक्षिक संस्थाओं का आह्वान किया कि वे अपने विद्यार्थियों को हिंदी में कम्प्यूटर सुविधाओं से परिचित कराएं। खुली बाजार व्यवस्था में संप्रेषण के माध्यम के रूप में हिंदी के बढ़ते महत्व पर जोर देते हुए उन्होंने कहा कि निकट भविष्य में हिंदी माध्यम से कंप्यूटर शिक्षित कार्मिकों की कमी पड़ जाएगी। उन्होंने प्रमुख वक्ताओं का धन्यवाद ज्ञापित करते हुए कहा कि उनके व्याख्यानों से सिद्ध होता है कि हिंदी माध्यम से कोई भी तकनीकी कार्य किया जा सकता है। ■

भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग, (हिंदी शिक्षण योजना) आर.के. पुरम, नई दिल्ली

का का. ज्ञा. सं. 15/2/2004-उ.नि. (परीक्षा) 2490
दिनांक 27 अगस्त, 2004

विषय :—जुलाई, 2004 में आयोजित हिंदी टंकण और हिंदी आशुलिपि परीक्षा परिणाम-घोषित तिथि 27-8-2004.

महोदय/महोदया,

हिंदी शिक्षण योजना के अंतर्गत जुलाई, 2004 में आयोजित हिंदी टंकण एवं आशुलिपि परीक्षा के परिणामों की समेकित आंकड़ों सहित एक-एक प्रति हिंदी शिक्षण योजना के उप निदेशकों तथा केंद्रवार परीक्षा परिणामों की एक-एक प्रति संबंधित सर्वकार्यभारी अधिकारियों को भेजी जा रही है।

2. हिंदी टंकण परीक्षा में उन्हीं परीक्षार्थियों को उत्तीर्ण घोषित किया गया है जिन्होंने दोनों प्रश्न पत्रों में 25-25 अंक प्राप्त किए हैं। जो परीक्षार्थी टंकण परीक्षा के किसी एक प्रश्न पत्र में उत्तीर्ण हैं उन्हें केवल अनुत्तीर्ण प्रश्न पत्र में अथवा जिस प्रश्न पत्र में अनुपस्थित रहे, जनवरी, 2005 सत्र की पूरक परीक्षा में बैठने का अवसर दिया जाएगा।

3. टंकण परीक्षा में किसी एक प्रश्न पत्र में अनुत्तीर्ण अथवा अनुपस्थित परीक्षार्थियों को अन्य परीक्षार्थियों की तरह आवेदन पत्र भरना होगा तथा आवेदन पत्र पर अपना पुराना अनुक्रमांक (जुलाई, 2004 में हुई परीक्षा में दिया गया अनुक्रमांक) देना होगा। अनुक्रमांक के साथ सत्र का उल्लेख भी करना होगा, जैसे (अनुक्रमांक 5009 जुलाई, 2004)। इन प्रश्न पत्रों की परीक्षा देने वाले परीक्षार्थियों के आवेदन पत्रों पर फोटो अथवा पहचान पत्र संख्या देना अनिवार्य होगा। उनके आवेदन पत्र तथा नामिनल रोल अलग से इस कार्यालय को भिजवाने का कष्ट करें। जुलाई, 2004 की परीक्षा में पूरक घोषित हुए जो परीक्षार्थी जनवरी, 2005 की पूरक परीक्षा में सम्मिलित नहीं होंगे उन्हें बाद में दोनों प्रश्न पत्रों की परीक्षा देनी होगी। पूरक परीक्षार्थियों के आवेदन पत्रों पर उक्त सारी जानकारी के साथ इसका भी उल्लेख करें कि परीक्षार्थी किस प्रश्न पत्र में पूरक घोषित किया गया था। गलत सूचना होने पर आवेदन पत्र रद्द कर दिया जाएगा।

4. किसी एक प्रश्न पत्र में सम्मिलित होने वाले स्वायत्त संगठनों, निगमों के परीक्षार्थियों का परीक्षा शुल्क रु. 10/- (दस रुपये मात्र) प्रति परीक्षार्थी है। उत्तर पुस्तिकाओं की संवीक्षा परीक्षा परिणाम घोषित होने की तिथि से 60 दिन के अन्दर रु. 5/- (पांच रुपये मात्र) के पोस्टल आर्डर भेजने पर की जा सकती है।

कृपया संबंधित परीक्षार्थियों को परीक्षा परिणाम की सूचना शीघ्र भेजने का कष्ट करें।

भवदीय,

(जी० मणि)
उपनिदेशक (परीक्षा)

भारत सरकार

गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग,
हिंदी शिक्षण योजना
आर. के. पुरम, नई दिल्ली-66

हिंदी टंकण परीक्षा जुलाई, 2004 का परीक्षा परिणाम
परीक्षा परिणाम घोषित करने की तिथि 27-8-2004

नोट :—

1. जिन परीक्षार्थियों ने पूर्णांक 100 अंकों में से 90 या उससे अधिक अंक प्राप्त किए हैं वे नकद पुरस्कार पाने के हकदार होंगे।
2. पुरस्कार पाने के हकदार हैं, बशर्ते कि वे राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली द्वारा विहित अन्य शर्तें पूरी करते हों।
3. राजभाषा विभाग के दिनांक 23-3-1985 के पत्र संख्या-14017/10/79-रा.भा. (घ) के अनुसार हर परीक्षार्थी को टंकण परीक्षा के दोनों प्रश्नपत्रों में अलग-अलग कम से कम 25 अंक प्राप्त करना आवश्यक है। दोनों प्रश्नपत्रों का योग 50 अंक होना चाहिए। जो परीक्षार्थी टंकण परीक्षा में किसी एक पश्नपत्र में अनुत्तीर्ण अथवा अनुपस्थित होंगे, उन्हें पूरक परीक्षार्थी घोषित किया जाएगा। पूरक परीक्षार्थी को केवल अगले सत्र की पूरक परीक्षा में ही सम्मिलित किया जाएगा।
4. प्रथम श्रेणी विशेष प्रवीणता के साथ—80 अंक या उससे अधिक।
   प्रथम श्रेणी—70 से 79 अंक।
   द्वितीय श्रेणी—60 से 69 अंक।
   तृतीय श्रेणी—50 से 59 अंक।
   अनुत्तीर्ण—50 से कम प्राप्त अंक।

हिंदी आशुलिपि परीक्षा जुलाई, 2004 का परीक्षा परिणाम
परीक्षा परिणाम घोषित करने की तिथि 27-8-2004

नोट :—

1. प्रथम प्रश्नपत्र 80 श.प्र.मि. तथा द्वितीय प्रश्नपत्र 100 श.प्र.मि.
2. जिन परीक्षार्थियों ने पूर्णांक 200 अंकों में से 88 प्रतिशत अर्थात् 176 अंक अथवा उससे अधिक अंक प्राप्त किए हैं वे नकद पुरस्कार पाने के हकदार हैं, बशर्ते कि ये राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली द्वारा विहित अन्य शर्तें पूरी करते हों।
3. प्रथम श्रेणी विशेष प्रवीणता के साथ—91 अंक या उससे अधिक अंक प्रत्येक प्रश्नपत्र के लिए
   प्रथम श्रेणी—81 से 90 अंक तक प्रत्येक प्रश्नपत्र।
   द्वितीय श्रेणी—67 से 80 अंक तक प्रत्येक प्रश्नपत्र।
   तृतीय श्रेणी—50 से 66 अंक तक प्रत्येक प्रश्नपत्र।
   अनुत्तीर्ण—50 से कम अंक प्रत्येक प्रश्नपत्र में प्राप्त करने पर
4. जो परीक्षार्थी यदि किसी एक भी प्रश्न पत्र (80 शब्द प्रति मिनट अथवा 100 शब्द प्रति मिनट की गति) से उत्तीर्ण होता है तो वह उत्तीर्ण माना जाएगा।

हिंदी शिक्षण योजना
राजभाषा विभाग

जुलाई, 2004 में आयोजित हिंदी टाइपलेखन परीक्षा का क्षेत्रवार समेकित विवरण

क्षेत्र	पंजीकृत	सम्मिलित	सम्मिलित%	उत्तीर्ण	उत्तीर्ण %	अनुत्तीर्ण	पूरक
पूर्व	355	264	74	136	51	63	65
पश्चिम	367	305	83	181	59	45	79
उत्तर	706	590	83	357	60	80	153
दक्षिण	249	168	67	125	74	21	22
मध्य	153	116	75	83	75	15	13
कुल योग :	**1830**	**1443**	**78**	**887**	**61**	**224**	**332**

हिंदी शिक्षण योजना
राजभाषा विभाग

जुलाई, 2004 में आयोजित हिंदी टाइपलेखन परीक्षा का स्थितिवार समेकित विवरण

स्थिति	पंजीकृत	सम्मिलित	सम्मिलित%	उत्तीर्ण	उत्तीर्ण %	अनुत्तीर्ण	पूरक
नियमित	1288	1028	79.81	689	67.02	145	194
प्राइवेट	290	235	81.03	114	48.51	31	90
पत्राचार	252	180	71.43	84	46.67	48	48

हिंदी शिक्षण योजना
राजभाषा विभाग

जुलाई, 2004 में आयोजित हिंदी इलैक्ट्रॉनिक टाइपलेखन परीक्षा का-क्षेत्रवार समेकित विवरण

क्षेत्र	पंजीकृत	सम्मिलित	सम्मिलित%	उत्तीर्ण	उत्तीर्ण %	अनुत्तीर्ण	पूरक
पश्चिम	32	23	71	17	73	2	4
मध्य	24	20	83	9	45	1	10
कुल योग :	**56**	**43**	**76**	**26**	**60**	**3**	**14**

हिंदी शिक्षण योजना
राजभाषा विभाग

जुलाई, 2004 में आयोजित हिंदी इलैक्ट्रॉनिक टाइपलेखन परीक्षा का स्थितिवार समेकित विवरण

स्थिति	पंजीकृत	सम्मिलित	सम्मिलित%	उत्तीर्ण	उत्तीर्ण %	अनुत्तीर्ण	पूरक
नियमित	56	43	76.79	26	60.47	3	14
प्राइवेट	0	0	0	0	0	0	0
पत्राचार	0	0	0	0	0	0	0

हिंदी शिक्षण योजना
राजभाषा विभाग

जुलाई, 2004 में आयोजित हिंदी कम्प्यूटर टाइपलेखन परीक्षा का क्षेत्रवार समेकित विवरण

क्षेत्र	पंजीकृत	सम्मिलित	सम्मिलित%	उत्तीर्ण	उत्तीर्ण %	अनुत्तीर्ण	पूरक
पूर्व	41	26	63	16	61	6	4
पश्चिम	218	158	72	106	67	13	39
उत्तर	215	184	85	112	60	26	46
दक्षिण	207	123	59	92	74	16	15
मध्य	89	76	85	63	82	3	10
कुल योग :	**770**	**567**	**73**	**389**	**68**	**64**	**114**

हिंदी शिक्षण योजना
राजभाषा विभाग

जुलाई, 2004 में आयोजित हिंदी कम्प्यूटर टाइपलेखन परीक्षा का स्थितिवार समेकित विवरण

क्षेत्र	पंजीकृत	सम्मिलित	सम्मिलित%	उत्तीर्ण	उत्तीर्ण %	अनुत्तीर्ण	पूरक
नियमित	413	345	83.54	261	75.65	31	53
प्राइवेट	280	160	57.14	88	55.00	27	45
पत्राचार	77	62	80.52	40	64.52	6	16

प्रथम दस स्थान प्राप्त करने वाले परीक्षार्थियों का विवरण

जुलाई, 2004 हिंदी टाइपलेखन (मैन्यु/इलै/कम्प्यू) परीक्षा

सं.	अनुक्रमांक	परीक्षार्थी का नाम श्री/श्रीमती/कुमारी	कार्यालय का पता .	स्थिति	क्षेत्र	प्राप्तांक	गति
1	2	3	4	5	6		7
1.	78	दीपेंद्र सिंह शाह	इंजीनियर्स इंडिया लिमिटेड, भीकाजी कामा प्लेस, नई दिल्ली	नियमित	उत्तर	100	56.8
2.	5030	मानसी मिलिन्द आंबे	युनाइटेड इंडिया इंश्योरेंस कम्पनी लिमिटेड, चर्चगेट, मुंबई	नियमित	पश्चिम	100	50.8
3.	210	हंसराज निर्मल	प्रतिभूति विभाग, भारतीय स्टेट बैंक, मुख्य शाखा, नई दिल्ली	नियमित	उत्तर	100	48.5
4.	839	अजीत सिंह	मुख्यालय, मुख्य अभियंता, दीपक परियोजना, द्वारा 56 ए पी ओ	पत्राचार	उत्तर	100	48.1

1	2	3	4	5	6		7
5.	5033	दक्षा देवेन्द्र पालव	नेशनल इंश्योरेंस कम्पनी लि., सर पी एम रोड, मुंबई	नियमित	पश्चिम	100	45.6
6.	56	जसबीर ओबरॉय	भारतीय विदेश व्यापार संस्थान, कुतुब इंस्टीट्यूशनल एरिया, नई दिल्ली	नियमित	उत्तर	100	44.3
7.	300	अजय कुमार झा	कार्मिक और प्रशिक्षण विभाग, नार्थ ब्लाक, नई दिल्ली	नियमित	उत्तर	100	44.2
8.	182	कुलदीप सिंह	संसद अनुभाग, दूरसंचार विभाग, डाक भवन, नई दिल्ली	नियमित	उत्तर	100	43.5
9.	5327	लीना नायर	केंद्र निदेशक, आकाशवाणी, अहमदाबाद	नियमित	पश्चिम	100	43.0
10.	3396	पी श्वेता	डी एल आर एल, हैदराबाद	नियमित	दक्षिण	100	42.1

हिंदी शिक्षण योजना
राजभाषा विभाग
जुलाई, 2004 में आयोजित हिंदी इलैक्ट्रॉनिक आशुलिपि परीक्षा का क्षेत्रवार समेकित विवरण

क्षेत्र	पंजीकृत	सम्मिलित	सम्मिलित%	उत्तीर्ण	उत्तीर्ण %	अनुत्तीर्ण
पश्चिम	12	9	75	6	66	3
मध्य	3	2	66	0	0	2
कुल योग :	**15**	**11**	**73**	**6**	**54**	**5**

हिंदी शिक्षण योजना
राजभाषा विभाग
जुलाई, 2004 में आयोजित हिंदी आशुलिपि परीक्षा का क्षेत्रवार समेकित विवरण

क्षेत्र	पंजीकृत	सम्मिलित	सम्मिलित%	उत्तीर्ण	उत्तीर्ण %	अनुत्तीर्ण
पूर्व	50	39	78	18	46	21
पश्चिम	51	41	80	11	26	30
उत्तर	155	123	79	69	56	54
दक्षिण	94	66	70	50	75	16
मध्य	26	21	80	20	95	1
कुल योग :	**376**	**290**	**77**	**168**	**57**	**122**

हिंदी शिक्षण योजना
राजभाषा विभाग

जुलाई, 2004 में आयोजित हिंदी कम्प्यूटर आशुलिपि परीक्षा का क्षेत्रवार समेकित विवरण

क्षेत्र	पंजीकृत	सम्मिलित	सम्मिलित%	उत्तीर्ण	उत्तीर्ण %	अनुत्तीर्ण
पूर्व	12	7	58	3	42	4
पश्चिम	58	39	67	29	74	10
उत्तर	76	67	88	44	65	23
दक्षिण	6	4	66	0	0.	4
मध्य	25	19	76	12	63	7
कुल योग :	**177**	**136**	**76**	**88**	**64**	**48**

प्रथम दस स्थान प्राप्त करने वाले परीक्षार्थियों का विवरण
जुलाई, 2004 हिंदी टाइपलेखन (मैन्यु/इलै/कंम्प्यू) परीक्षा

सं.	अनुक्रमांक	परीक्षार्थी का नाम श्री/श्रीमती/कुमारी	कार्यालय का पता	क्षेत्र	प्राप्तांक
1.	3031	शेखर सिंह	आई.एन.एस. गरुड, फैट्स, नेवल बेस, कोचीन	दक्षिण	200
1.	113	इंद्रजीत कौर	संघ लोक सेवा आयोग, शाहजहां रोड, नई दिल्ली	उत्तर	200
1.	124	नीति गुलाटी	केंद्रीय चिड़ियाघर प्राधिकरण, शाहजहां रोड, नई दिल्ली	उत्तर	200
2.	9	संजीव कुमार बेरी	केंद्रीय विद्युत प्राधिकरण, सेवा भवन, नई दिल्ली	उत्तर	200
2.	219	रजनी ग्रोवर	भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण, गुड़गांव रोड, नई दिल्ली	उत्तर	198
2.	123	बलवीर सिंह	प्रवर्तन निदेशालय, लोकनायक भवन, खान मार्किट, नई दिल्ली	उत्तर	198
2.	126	मनोज कुमार रावत	लेजर विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी केंद्र, रक्षा मंत्रालय, दिल्ली	उत्तर	198
3.	3092	एल. वेंकटरमण	सरदार वल्लभभाई पटेल, राष्ट्रीय पुलिस अकादमी, हैदराबाद	दक्षिण	196
3.	61	सपना रुपेश	संचार भवन, दूर संचार विभाग, अशोका रोड, नई दिल्ली	उत्तर	196
3.	122	निर्मला	तटरक्षक मुख्यालय, नई दिल्ली	उत्तर	196

भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग, केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान, 2-ए, पृथ्वीराज रोड, नई दिल्ली का दिनांक 5 नवंबर 2004 का पत्र संख्या 19011/10/2004/के.हि.प्र.सं./उ.नि. (सं.)/851-2351

विषय :— संघ सरकार के मंत्रालयों/विभागों तथा उनके नियंत्रणाधीन संबद्ध तथा अधीनस्थ कार्यालयों तथा सार्वजनिक क्षेत्रों के उपक्रम/निकायों/उद्यमों/अभिकरणों/निगमों तथा राष्ट्रीयकृत बैंकों आदि के दिल्ली, उत्तर प्रदेश, उत्तरांचल, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, पंजाब, बिहार, झारखंड, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, राजस्थान, जम्मू व कश्मीर, चण्डीगढ़ तथा अण्डमान निकोबार द्वीप समूह कार्यालयों के अधिकारियों/कर्मचारियों के लिए संस्थान द्वारा आयोजित गहन हिंदी कार्यशाला की समय-सारणी तथा विवरण—वर्ष 2005.

महोदय,

जैसा कि आपको ज्ञात है कि इस संस्थान द्वारा भारत सरकार के मंत्रालयों/विभागों/उपक्रमों/बैंकों आदि के अधिकारियों तथा कर्मचारियों के लिए गहन हिंदी कार्यशालाओं का आयोजन किया जाता है। उक्त कार्यशालाओं में दिल्ली के साथ उत्तर प्रदेश, उत्तरांचल, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, पंजाब, बिहार, झारखंड, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, राजस्थान, जम्मू व कश्मीर, चण्डीगढ़ तथा अण्डमान निकोबार द्वीप समूह स्थित कार्यालयों के अधिकारी/कर्मचारी भाग लेते हैं।

वर्ष 2005 में आयोजित की जाने वाली हिंदी कार्यशालाओं की समय-सारणी अनुलग्नक-1 में दी जा रही है, ताकि आप पूरे वर्ष का कार्यक्रम प्रतिभागियों की सुविधा को ध्यान में रखकर एक साथ तैयार कर सकें।

सभी मंत्रालयों/विभागों से अनुरोध है कि वे अपने अधिकारियों/कर्मचारियों को यहां दी गई कार्यशालाओं की समय-सारणी के अनुसार नामित कर संस्थान को अग्रेषित करें, जिससे कार्यालयों में हिंदी के प्रगामी प्रयोग को अधिक गतिशील, उपयोगी एवं व्यावहारिक बनाया जा सके।

कार्यशाला का उद्देश्य :—

1. (क) विभिन्न विभागीय अधिकारियों/कर्मचारियों को उनका सरकारी कार्य हिंदी में करने के लिए अभिप्रेरित करना।

   (ख) विभिन्न विभागीय अधिकारियों/कर्मचारियों द्वारा उनके कार्यालयीन काम को हिंदी में करने की झिझक को दूर करना।

   (ग) कार्यालयीन कार्य हिंदी में करने की दक्षता (लेखन कौशल) प्रदान करना।

2. राजभाषा विभाग द्वारा राजभाषा नीति के सफल कार्यान्वयन के लिए सभी कार्यालयों को कहा गया है कि उन सभी अधिकारियों/कर्मचारियों को कार्यालयीन हिंदी का प्रशिक्षण दिया जाए जिन्हें हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान या प्रवीणता प्राप्त है और जिन्हें कार्यशाला में अभी तक प्रशिक्षण नहीं दिया गया है।

3. हिंदी में प्रवीणता प्राप्त उसे कहा जाएगा जिस कर्मचारी ने :—

   क. मैट्रिक परीक्षा या उसके समतुल्य या उससे उच्चतर कोई अन्य परीक्षा हिंदी माध्यम से उत्तीर्ण कर ली है या

   ख. स्नातक परीक्षा में अथवा स्नातक परीक्षा के समतुल्य या उससे उच्चतर किसी अन्य परीक्षा में हिंदी को एक वैकल्पिक विषय के रूप में लिया था या

   ग. यदि वह राजभाषा नियम, 1976 के साथ संलग्न फार्म में यह घोषणा करता है कि उसे हिंदी में प्रवीणता प्राप्त है।

4. हिंदी में कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त उसे कहा जाएगा जिस कर्मचारी ने :—

   क. मैट्रिक परीक्षा या समतुल्य या उससे उच्चतर कोई अन्य परीक्षा हिंदी विषय के साथ उत्तीर्ण की है या

   ख. केंद्रीय सरकार हिंदी शिक्षण योजना के अंतर्गत आयोजित प्राज्ञ अथवा सरकार द्वारा विनिर्दिष्ट किसी विशिष्ट प्रवर्ग के पदों के संबंध में उस योजना के अन्तर्गत निम्नतर परीक्षा उत्तीर्ण की है या

   ग. केंद्रीय सरकार द्वारा उसके निमित्त विनिर्दिष्ट कोई अन्य परीक्षा उत्तीर्ण कर ली है या

   घ. यदि वह राजभाषा नियम, 1976 के साथ संलग्न फार्म में यह घोषणा करता है कि उसने कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कर लिया है तो उसके बारे में यह कहा जाएगा कि उसे हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त है।

5. जो अधिकारी/कर्मचारी गृह मंत्रालय द्वारा आयोजित प्रबोध, प्रवीण, प्राज्ञ पाठ्यक्रमों में प्रशिक्षण ले चुके हैं, परन्तु जिन्हें हिंदी में कार्यालय के कार्य करने में अभी कठिनाई होती है, उन्हें भी इन कार्यशालाओं में भेजा जा सकता है, परन्तु प्राथमिकता उन अधिकारियों/कर्मचारियों को ही दी जाएगी, जिन्होंने अभी तक किसी हिंदी कार्यशाला में प्रशिक्षण प्राप्त नहीं किया है।

6. कार्यशालाओं का समय प्रातः 9.30 बजे से सांय 6.00 बजे तक निर्धारित है।

7. अनुरोध है कि दिल्ली, उत्तर प्रदेश, उत्तरांचल, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, पंजाब, बिहार, झारखंड, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, राजस्थान, जम्मू व कश्मीर, चण्डीगढ़ तथा अण्डमान निकोबार द्वीप समूह स्थित सभी संबद्ध और अधीनस्थ कार्यालयों तथा नियंत्रणाधीन उपक्रमों/निगमों/कंपनियों/अभिकरणों/स्वायत्त संस्थानों आदि के अधिकारियों/कर्मचारियों के नाम, पदनाम और टेलीफोन नं. सहित अधिक से अधिक संख्या में कार्यशालाओं में नामित करके इस संस्थान को तत्काल सूचित करें। प्रवेश प्रथम आओ, प्रथम पाओ के आधार पर दिया जाएगा।

8. यात्रा भत्ता/दैनिक भत्ता आदि जो देय होगा, वह नामित प्रतिभागी के कार्यालय/संगठन द्वारा ही वहन किया जाएगा, इस संस्थान द्वारा नहीं।

9. प्रशिक्षणार्थियों को अपने आवास तथा भोजन की व्यवस्था स्वयं ही करनी होगी।

10. प्रशिक्षण पूरा करने पर प्रत्येक प्रतिभागी को प्रमाण-पत्र तथा कार्यमुक्ति आदेश दिया जाएगा।

11. केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान द्वारा पुष्टि दिए जाने के आधार पर ही प्रतिभागियों को गहन हिंदी कार्यशालाओं में प्रवेश दिया जाएगा।

12. प्रशिक्षण केंद्र का पता :—

    केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान, राजभाषा विभाग,
    गृह मंत्रालय, 2-ए, पृथ्वीराज रोड (जे. एंड के. हाऊस के सामने), राजस्थान भवन के नजदीक, नई दिल्ली-110011.

13. बस रूट—नई दिल्ली रेलवे स्टेशन से—एम-13, 56 (यू.पी.एस.सी. तक), पुरानी दिल्ली रेलवे स्टेशन से 502, अ.रा. बस अड्डे से 501, 502, 533, 621.

14. गहन हिंदी कार्यशालाओं की समय-सारणी के लिए अनुलग्नक-I देखने का कष्ट करें।

(कुसुम वीर)
निदेशक

अनुलग्नक-I

प्रशिक्षण कार्यक्रम-कलैंडर 2005

I—गहन हिंदी कार्यशालाएं

(05) पाँच पूर्ण कार्यदिवस

क्रम संख्या	कार्यशाला	प्रशिक्षण-अवधि
1.	272	07-02-2005—11-02-2005
2.	273	21-02-2005—25-02-2005
3.	274	14-03-2005—18-03-2005
4.	275	04-04-2005—08-04-2005
5.	276	02-05-2005—06-05-2005
6.	277	06-06-2005—10-06-2005
7.	278	20-06-2005—24-06-2005
8.	279	11-07-2005—15-07-2005
9.	280	08-08-2005—12-08-2005
10.	281	22-08-2005—26-08-2005
11.	282	19-09-2005—23-09-2005
12.	283	17-10-2005—21-10-2005
13.	284	07-11-2005—11-11-2005
14.	285	21-11-2005—25-11-2005
15.	286	05-12-2005—09-12-2005

(कुसुम वीर)
निदेशक

भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग, केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान, 2-ए, पृथ्वीराज रोड, नई दिल्ली का दिनांक 5 नवंबर 2004 का पत्र संख्या 19011/12/2004-के.हि.प्र.सं./उ.नि. (सं.)/3853-5353

विषय :— भारत सरकार के विभिन्न संस्थानों के प्रशिक्षकों द्वारा हिंदी माध्यम से प्रशिक्षण देने के संबंध में—पांच पूर्ण कार्य दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन वर्ष—2005.

महोदय/महोदया,

विभिन्न प्रशिक्षण संस्थानों के प्रशिक्षकों द्वारा हिंदी माध्यम से प्रशिक्षण देने के उद्देश्य से उपर्युक्त संदर्भानुसार केंद्रीय प्रशिक्षण संस्थान द्वारा प्रशिक्षकों के लिए चलाए गए प्रशिक्षण कार्यक्रमों में वर्ष 2004 तक कुल 432 प्रशिक्षकों को प्रशिक्षण दिया गया है। चूंकि अभी भी ऐसे संकाय सदस्यों (Faculty Members) की संख्या काफी है, जिन्हें प्रशिक्षण दिया जाना शेष है, अत: 2005 में भी इन प्रशिक्षण कार्यक्रमों को चलाने का निर्णय किया गया है।

वर्ष 1992 से 2004 तक आपके कार्यालय द्वारा केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान, नई दिल्ली को नामन सूची प्रेषित की जाती रही है। कृपया ऐसे संकाय सदस्यों/प्रशिक्षकों के नाम संलग्न प्रपत्र में मांगी गई अन्य सूचनाओं सहित 15 जनवरी, 2005 तक पुन: भिजवाने का कष्ट करें, जिन्हें हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान तो है, लेकिन उन्हें हिंदी में प्रशिक्षण देने में कठिनाई आती है ताकि इस कार्यक्रम में दिए जाने वाले प्रशिक्षण द्वारा उनकी हिंदी भाषा की अभिव्यक्ति को अधिक सशक्त बनाया जा सके।

2. उपरोक्त तथ्यों को ध्यान में रखते हुए वर्ष 2005 में दो अभिमुखी कार्यक्रम आयोजित करने का निश्चय किया गया है। कार्यक्रम **2-ए, पृथ्वीराज रोड (जे०के० हाउस के सामने), नई दिल्ली-110011 स्थित कार्यालय में 9-30 बजे पूर्वाह्न से 6-00 बजे सायं तक (पांच पूर्ण कार्यदिवसीय)** चलाए जाएंगे।

3. अनुरोध है कि जो सहायक निदेशक (राजभाषा)/ हिंदी अधिकारी अब तक उपरोक्त कार्यक्रम में भाग नहीं ले पाए हैं, उनके नाम, पदनाम तथा कार्यालय का पूरा पता टेलीफोन नम्बर सहित **15 जनवरी, 2005 तक भिजवाने का कष्ट करें,** जिससे प्रवेश पाए जाने की पुष्टि और सूचनाएँ आपको तथा संबंधित अधिकारी को यथाशीघ्र भेजी जा सके। आवास, खान-पान, यातायात आदि की व्यवस्था प्रतिभागी/अधिकारी का कार्यालय ही करेगा। **प्रवेश ''प्रथम आएं, प्रथम पाएं'' के आधार पर दिया जाएगा।** अत: अनुरोध है कि कृपया प्रशिक्षण के लिए शेष अधिकारियों की अद्यतन सूची भेजने का कष्ट करें।

भवदीया,

(कुसुमवीर)

निदेशक

प्रपत्र

1. प्रशिक्षक का नाम ....
2. पदनाम ....
3. मातृभाषा ....
4. वर्तमान तैनाती स्थल ....
5. शैक्षिक/तकनीकी अर्हता ....
6. हिंदी का ज्ञान ....

प्रायोजक अधिकारी के हस्ताक्षर

पदनाम

संस्थान/कार्यालय का पूरा पता

....

....

....

टेलीफोन नम्बर : ....

भारत सरकार, गुह मंत्रालय, राजभाषा विभाग, केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान,
2-ए, पृथ्वीराज रोड, नई दिल्ली का दिनांक 5 नवंबर 2004 का

पत्र संख्या 19011/11/2004-के.हि.प्र.सं./उ.नि. (सं.)/3853-5353

विषय :— समस्त मंत्रालय/विभाग/सरकारी उपक्रम/ बैंक/निगम/निकाय/लोक उद्यम/संगठन आदि के प्रबंधक (राजभाषा)/हिंदी अधिकारियों के लिए 5 पूर्ण कार्य दिवसीय अभिमुखी कार्यक्रम का आयोजन वर्ष—2005.

महोदय/महोदया,

भारत सरकार तथा सार्वजनिक क्षेत्रों के सहायक निदेशकों (राजभाषा)/हिंदी अधिकारियों द्वारा भारत सरकार की राजभाषा नीति के सफल कार्यन्वयन में अपनी सफल भूमिका सक्षमतापूर्वक निभाने की दृष्टि से वर्ष 1999 से 2004 तक कुल 29 (उनतीस), अभिमुखी कार्यक्रम चलाए गए हैं। इन कार्यक्रमों के दौरान पाया गया है कि कार्यक्रमों के लिए नामित अनेक अधिकारी प्रशासनिक/व्यक्तिगत या आकस्मिक कारणों से कार्यक्रम में शामिल नहीं हो पाए, लेकिन उन्होंने अपने प्रशिक्षण के लिए प्रशिक्षण की अनिवार्यता स्वीकार करते हुए प्रशिक्षण दिए जाने का अनुरोध किया है। वर्ष 2005 में चलाए जाने वाले अभिमुखी कार्यक्रमों की सूची को अद्यतन बनाने के लिए आपसे अनुरोध है कि कृपया अपने मंत्रालय/अधीनस्थ कार्यालय/बैंक/उपक्रमों/निगमों/निकायों/बीमा कंपनियों/लोक उद्यमों आदि में प्रशिक्षण के लिए शेष सहायक निदेशक (राजभाषा)/हिंदी अधिकारियों, उप/ सहायक प्रबंधक (राजभाषा) को पुन: नामित करने का कष्ट करें।

संबंधित प्रतिभागियों को अपने आवास तथा भोजन की व्यवस्था स्वयं करनी होगी तथा यात्रा भत्ते आदि का भुगतान यदि देय होगा तो आपके कार्यालय/संस्थान द्वारा दिया जाएगा। ये कार्यक्रम **2-ए, पृथ्वीराज रोड (जे०के० हाउस के सामने), नई दिल्ली**-110011 स्थित कार्यालय परिसर में आयोजित किए जाएंगे। जिस अवधि में प्रशिक्षण कार्यक्रम में नामित अधिकारी को प्रवेश दिया जाएगा, उसकी पुष्टि इस कार्यालय द्वारा यथासमय दी जाएगी।

भवदीया,

(कुसुमवीर)
निदेशक

आदेश-अनुदेश

भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग, लोकनायक भवन, खान मार्किट, नई दिल्ली-3 का दिनांक 17 सितम्बर, 2004 का सं० 12021/02/2003-रा०भा० (का०2)

संकल्प

राजभाषा अधिनियम, 1963 की धारा 4 (1) के अधीन संसदीय राजभाषा समिति गठित की गई थी। समिति द्वारा विदेश स्थित भारतीय दूतावासों, उच्चायोगों, कार्यालयों, उपक्रमों, बैंकों आदि में हिंदी के प्रयोग की स्थिति तथा केंद्र सरकार और राज्य सरकारों के कार्यालयों के बीच परस्पर पत्र-व्यवहार में राजभाषा हिंदी के प्रयोग से संबंधित प्रतिवेदन का छठा खण्ड राष्ट्रपति जी को प्रस्तुत किया गया था। राजभाषा अधिनियम, 1963 की धारा 4 (3) के अनुसार इसे लोकसभा के पटल पर तथा राज्यसभा के पटल पर रखा गया था। इसकी प्रतियां भारत सरकार के मंत्रालयों/विभागों तथा राज्यों/संघ राज्यक्षेत्रों की सरकारों को भेजी गई। इस संबंध में राज्यों/संघ राज्यक्षेत्रों की सरकारों एवं विभिन्न मंत्रालयों/विभागों से प्राप्त मत पर विचार करने के बाद समिति द्वारा की गई अधिकांश सिफारिशों को मूल रूप में या कुछ संशोधनों के साथ स्वीकार करने का निर्णय लिया गया है। तदनुसार अधोहस्ताक्षरी को राजभाषा अधिनियम, 1963 की धारा 4 (4) के अधीन समिति के प्रतिवेदन की सिफारिशों पर राष्ट्रपति के निम्नलिखित आदेश सूचित करने का निदेश हुआ है :

11.4 प्रतिवेदन के विभिन्न खण्डों में की गई सिफारिशों पर सरकार द्वारा की गई कार्रवाई के संबंध में सिफारिशें

11.4.1 प्रथम खण्ड

संस्तुति सं० 11.4.1.1 : रक्षा मंत्रालय, रेल मंत्रालय, संचार मंत्रालय तथा अन्य मंत्रालयों/विभागों में शेष बचे कोड, मैनुअलों, प्रक्रिया साहित्य का अनुवाद शीघ्र पूरा किया जाए।

संस्तुति सं० 11.4.1.2 : विधायी विभाग द्वारा प्रिवी काउंसिल, फेडरल कोर्ट व उच्चतम न्यायालय द्वारा दिए गए निर्णयों तथा विधि पुस्तकों के अनुवाद का कार्य शीघ्र पूरा किया जाए।

संस्तुति सं० 11.4.1.3 : अनुवाद प्रशिक्षण, अनुवाद पुनश्चर्या (रिफ्रेशर) प्रशिक्षण व हिंदी अधिकारियों तथा उनसे ऊपर के अधिकारियों की प्रशिक्षण व्यवस्था के संबंध में की गई सिफारिशों को राजभाषा विभाग शीघ्र कार्यान्वित करे।

संस्तुति सं० 11.4.1.4 : मानक शब्दावली के निर्माण, नए शब्दों के मानक पर्याय निश्चित करना, शब्दावलियों की आवधिक पुनरीक्षा, निर्माणाधीन शब्दावलियों के निर्माण कार्य में तेजी लाना, शब्दावली निर्माण के क्षेत्र में मार्गदर्शन देने हेतु उच्च स्तरीय समिति के गठन, मानक शब्दावली का प्रयोग, प्रचार-प्रसार और वितरण, प्राध्यापकों के लिए कार्यशालाओं का आयोजन, अखिल भारतीय शब्दावली की पहचान, शब्दावली आयोग द्वारा प्रकाशित शब्द-संग्रहों का अनुकूलन, अध्यापन में मानक

शब्दावलियों का प्रयोग, कार्यशालाओं में पारिभाषिक शब्दावली की जानकारी देना, वैज्ञानिक तथा तकनीकी विषयों पर हिंदी में पुस्तक लेखन, केंद्र सरकार के कामकाज में मानक शब्दावली का प्रयोग, शब्दावलियों का पर्याप्त संख्या में वितरण, शिक्षा से संबंधित संस्थानों को शब्दावलियों के बारे में विस्तार से सूचना देना, शब्दावली बैंक की स्थापना तथा शिक्षा के क्षेत्र से संबंधित अन्य सिफारिशों पर मानव संसाधन विकास मंत्रालय का शिक्षा विभाग शीघ्र व समुचित कार्रवाई करे।

संस्तुति सं० 11.4.1.5 : उच्च शिक्षा में शिक्षण का माध्यम हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषाओं को बनाए जाने संबंधी सिफारिश पर शिक्षा विभाग, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय और भारतीय कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा विभाग आवश्यक कार्रवाई करे।

संस्तुति सं० 11.4.1.6 : समिति के प्रतिवदेन के पहले खंड के पैरा 14.4.4 तथा पैरा 14.4.7 में क्रमश: राजभाषा अधिनियम, 1963 की धारा 7 में संशोधन किए जाने तथा उच्चतम न्यायालय की कार्रवाइयों के लिए हिंदी के विकल्प की व्यवस्था संबंधी सिफारिशों पर सरकार द्वारा शीघ्र कार्रवाई की जाए।

11.4.2 दूसरा खण्ड

संस्तुति सं० 11.4.2.1 : देवनागरी इलेक्ट्रानिक टाइपराइटरों के अनुसंधान, विकास और निर्माण तथा इस प्रकार के टाइपराइटरों पर उत्पाद शुल्क में विशेष रियायत देने संबंधी सिफारिश पर इलेक्ट्रानिकी विभाग और उद्योग मंत्रालय अविलम्ब समुचित कार्रवाई करे।

संस्तुति सं० 11.4.2.2 : हिंदी टाइपिंग तथा हिंदी आशुलिपि में प्रशिक्षण व्यवस्था को और सुदृढ़ किए जाने संबंधी सिफारिश के परिप्रेक्ष्य में केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान द्वारा विभिन्न क्षेत्रों में प्रशिक्षण के लिए बची कार्मिक तथा वर्तमान प्रशिक्षण व्यवस्थाओं का सर्वेक्षण कराकर शीघ्र रिपोर्ट प्रस्तुत की जाए और तदनुसार प्रशिक्षण व्यवस्था को मजबूत बनाया जाए।

संस्तुति सं० 11.4.2.3 : इलेक्ट्रानिकी यांत्रिकी सुविधाओं में हिंदी के प्रयोग के बारे में इलेक्ट्रानिकी विभाग द्वारा गठित कार्यवृत्त की इलेक्ट्रानिकी विभाग तथा राजभाषा विभाग द्वारा शीघ्र कार्रवाई की जाए।

संस्तुति सं० 11.4.2.4 : इलेक्ट्रानिकी विभाग द्वारा भारतीय भाषाओं के विकास के लिए बनाई गई प्रौद्योगिकी विकास मिशन की योजना को पूरी तरह कार्यान्वित किया जाए।

संस्तुति सं० 11.4.2.5 : कम्प्यूटर साक्षरता कार्यक्रम में हिंदी माध्यम से प्रशिक्षण संबंधी सिफारिश पर शिक्षा विभाग शीघ्र कार्रवाई करे।

संस्तुति सं० 11.4.2.6 : राजभाषा नीति के सुचारू रूप से अनुपालन कराए जाने के लिए राजभाषा विभाग को पूरी तरह सशक्त और साधन सम्पन्न बनाए जाने संबंधी सिफारिश पर राजभाषा विभाग द्वारा शीघ्र कार्रवाई की जाए।

संस्तुति सं० 11.4.2.7 : समिति की टेलीप्रिंटर तथा कम्प्यूटर प्रचालकों को दोनों भाषाओं में काम करने के लिए कुछ विशेष प्रोत्साहन भत्ता दिए जाने संबंधी सिफारिश पर वित्त मंत्रालय फिर से विचार करे।

11.4.3 तीसरा खण्ड

संस्तुति सं० 11.4.3.1 : हिंदी शिक्षण योजना के अंतर्गत देय नकद पुरस्कार राशि तथा एक मुश्त राशि को बढ़ाए जाने संबंधी सिफारिशों पर वित्त मंत्रालय विचार करे।

संस्तुति सं० 11.4.3.2 : हिंदी शिक्षण योजना के पाठ्यक्रमों की समीक्षा व पुनरीक्षण तथा हिंदी के प्रशिक्षण कार्यक्रमों के पुनरीक्षण हेतु गठित पुनरीक्षण समिति की रिपोर्ट पर राजभाषा विभाग शीघ्र कार्रवाई करे।

संस्तुति सं० 11.4.3.3 : समिति की 'ग' क्षेत्रों में नए प्रशिक्षण केंद्र खोलने के प्रतिमानों में ढील दिए जाने तथा हिंदी प्राध्यापकों के नए पद सृजित किए जाने के लिए निर्धारित प्रतिमानों में ढील देने संबंधी सिफारिशों पर राजभाषा विभाग शीघ्र कार्रवाई करे।

संस्तुति सं० 11.4.3.4 : हिंदी शिक्षण का कार्य कर रही स्वयंसेवी संस्थाओं को अनुदान तथा प्रोत्साहन दिए जाने के मानदण्डों की पुनरीक्षा किए जाने के लिए गठित समिति की रिपोर्ट शिक्षा विभाग शीघ्र प्रस्तुत करे और तदनुसार कार्रवाई करे।

संस्तुति सं० 11.4.3.5 : हिंदी शिक्षण के लिए पत्राचार तथा देश के सभी भागों के शिक्षा संस्थानों में हिंदी माध्यम से पठन-पाठन संबंधी सिफारिशों पर शिक्षा विभाग पूरी तथा समुचित कार्रवाई करे।

संस्तुति सं० 11.4.3.6 : राजभाषा विभाग तथा केंद्रीय हिदी प्रशिक्षण संस्थान व इसके उप-संस्थानों के सुदृढ़ीकरण संबंधी सिफारिशों पर राजभाषा विभाग शीघ्र कार्रवाई करें।

संस्तुति सं० 11.4.3.7 : समिति की दूरदर्शन से हिंदी पाठों के प्रसारण संबंधी सिफारिश के कार्यान्वयन के लिए सूचना और प्रसारण मंत्रालय शीघ्र कार्रवाई करे।

संस्तुति सं० 11.4.3.8 : समिति की कृषि व इंजीनियरिंग प्रशिक्षण संस्थानों की प्रवेश परीक्षाओं एवं पाठ्यक्रमों और आयुर्विज्ञान, व्यावसायिक विषयों आदि के पाठ्यक्रमों में हिंदी माध्यम का विकल्प दिए जाने संबंधी सिफारिशों पर भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, शिक्षा विभाग और स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय शीघ्र समुचित कार्रवाई सुनिश्चित करे।

संस्तुति सं० 11.4.3.9 : विदेशी भाषा विद्यालय में विदेशी भाषाओं से सीधे हिंदी में अनुवाद करने का प्रशिक्षण देने संबंधी सिफारिश पर रक्षा मंत्रालय शीघ्र अपेक्षित कार्रवाई करे।

संस्तुति सं० 11.4.3.10 : राजभाषा संकल्प, 1968 के परिप्रेक्ष्य में विभिन्न भर्ती नियमों की समीक्षा संबंधी सिफारिश पर कार्मिक और प्रशिक्षण विभाग शीघ्र अपेक्षित कार्रवाई करे।

संस्तुति सं० 11.4.3.11 : तीसरे खण्ड के पैरा 18.10 और 18.12 में क्रमशः सभी भर्ती परीक्षाओं में हिंदी माध्यम के विकल्प दिए जाने और भर्ती परीक्षाओं में अंग्रेजी के अनिवार्य प्रश्नपत्र को समाप्त करने संबंधी सिफारिशों पर सरकार द्वारा शीघ्र कार्रवाई की जाए।

11.4.4 चौथा खण्ड

संस्तुति सं० 11.4.4.1 : गोपनीय रिपोर्ट में राजभाषा के संबंध में प्रविष्टियां किए जाने संबंधी सिफारिश पर कार्मिक तथा प्रशिक्षण विभाग शीघ्र समुचित कार्रवाई करे।

संस्तुति सं० 11.4.4.2 : 'क' क्षेत्र में धारा 3 (3) के दस्तावेज केवल हिंदी में जारी करने संबंधी सिफारिश पर सरकार पुनः विचार करे।

''समिति के प्रतिवेदन के उक्त चार खण्डों में की गई सिफारिशों पर राष्ट्रपति जी के आदेश पहले से ही विद्यमान हैं। समिति की उक्त सिफारिश सं० 11.4.3.11 स्वीकार नहीं की गई है। इसका उल्लेख आगे सिफारिश सं० 11.5.13 में भी किया गया है।''

11.5 केंद्रीय सरकार के मंत्रालयों व अन्य कार्यालयों में हिंदी के प्रगामी प्रयोग संबंधी सिफारिशें

संस्तुति सं० 11.5.1 : राजभाषा संबंधी आदेशों, अनुदेशों आदि का अनुपालन सुनिश्चित करने के लिए की गई मानीटरिंग व्यवस्था अपर्याप्त है। अतः इसको और सुदृढ़ बनाया जाए तथा मंत्रालयों/विभागों/मुख्यालय के प्रतिनिधियों द्वारा अधीनस्थ/सम्बद्ध कार्यालयों का समय-समय पर निरीक्षण किया जाए।

संस्तुति सं० 11.5.2 : अधिकतर कार्यालयों विशेषकर 'ख' तथा 'ग' क्षेत्र में स्थित कार्यालयों में अधिकारियों/कर्मचारियों को राजभाषा नियम, राजभाषा नीति, संसदीय राजभाषा समिति द्वारा की गई सिफारिशों तथा उन पर राष्ट्रपति जी के आदेश एवं इस संबंध में जारी आदेशों/अनुदेशों का पूर्ण ज्ञान नहीं है जिसके कारण वे राजभाषा नीति के कार्यान्वयन के बारे में जागरुक नहीं हैं। प्रशासनिक प्रधानों का यह दायित्व है कि वे इन आदेशों/अनुदेशों आदि की व्यापक जानकारी व उनका अनुपालन सुनिश्चित करें।

''समिति की उक्त सिफारिशें स्वीकार कर ली गई हैं। राजभाषा विभाग द्वारा इस आशय के निदेश पहले ही जारी किए जा चुके हैं।''

संस्तुति सं० 11.5.3 : 'ग' क्षेत्र के कार्यालयों में प्रशिक्षण सुविधाओं को सुदृढ़ बनाया जाए व उनका ज्यादा अच्छा लाभ उठाया जाए।

''समिति की यह सिफारिश सिद्धांत रूप में स्वीकार कर ली गई है। राजभाषा विभाग द्वारा समुचित कार्रवाई की जाए।''

संस्तुति सं० 11.5.4. : द्विभाषी रूप में उपलब्ध टाइपराइटरों व अन्य यंत्रों पर हिंदी का प्रयोग अपेक्षित मात्रा में नहीं हो रहा है अतः इसे बढ़ाने हेतु ध्यान दिया जाए।

''समिति की यह सिफारिश स्वीकार कर ली गई है। राजभाषा विभाग द्वारा इस बारे में निदेश जारी किए जाएं ।''

संस्तुति सं० 11.5.5 : कुछ कार्यालयों में अभी भी राजभाषा अधिनियम, 1963 की धारा 3 (3) का अनुपालन नहीं किया जा रहा है। इसका अनुपालन सुनिश्चित करने के लिए उपयुक्त कदम उठाए जाने चाहिए तथा उल्लंघन करने पर प्रशासनिक जिम्मेदारी ठहरायी जानी चाहिए।

''समिति की यह सिफारिश स्वीकार कर ली गई है। इस आशय के आदेश पहले से ही विद्यमान हैं कि राजभाषा अधिनियम की धारा 3 (3) का अनुपालन सुनिश्चित किया जाए और इसकी उपेक्षा करने वाले अधिकारियों को लिखित परामर्श दिया जाए कि वे भविष्य में इस प्रवृत्ति से बचें। इस संबंध में राजभाषा विभाग द्वारा पुनः निदेश जारी किए जाएं।''

संस्तुति सं० 11.5.6 : राजभाषा विभाग द्वारा वार्षिक कार्यक्रम का यथासमय वितरण सुनिश्चित किया जाए व इसमें निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने की दिशा में सक्रिय रूप से गंभीरतापूर्वक कार्य किया जाए।

''वार्षिक कार्यक्रम का समय पर वितरण और उसके अनुपालन के संबंध में आदेश पहले से ही विद्यमान हैं। समिति की यह सिफारिश स्वीकार कर ली गई है।''

संस्तुति सं० 11.5.7 : राजभाषा कार्यान्वयन समितियों की बैठकों का आयोजन नियमित रूप से किया जाए।

''इस बारे में पहले से ही निदेश हैं कि राजभाषा कार्यान्वयन समितियों की प्रत्येक तिमाही में एक बैठक आयोजित की जाए। समिति की यह सिफारिश स्वीकार कर ली गई है।''

संस्तुति सं० 11.5.8 : मंत्रालयों/विभागों में हिंदी सलाहकार समितियों का गठन/पुनर्गठन यथासमय किया जाए तथा इसकी अर्थपूर्ण एवं प्रभावी बैठकें की जाएं।

''हिंदी सलाहकार समिति की बैठकें औसतन वर्ष में एक से ज्यादा करना व्यावहारिक नहीं है। इसलिए मंत्री स्तर पर ली जाने वाली ये बैठकें वर्ष में कम से कम दो बार भी की जाएं तो वे अपने उद्देश्यों को पूरा कर सकती हैं।''

संस्तुति सं० 11.5.9 : मूल पत्राचार में हिंदी का प्रयोग निर्धारित लक्ष्य से बहुत पीछे है। इसमें सुधार लाने के लिए प्रभावी कदम उठाए जाएं।

''इस संबंध में आदेश पहले से ही विद्यमान हैं। समिति की यह सिफारिश स्वीकार कर ली गई है।''

संस्तुति सं० 11.5.10 : शब्दकोश, शब्दावली, सहायक तथा संदर्भ साहित्य और अन्य हिंदी पुस्तकों की खरीद की तरफ विशेष ध्यान दिया जाए व इन पर लक्ष्य के अनुसार राशि खर्च की जाए।

''समिति की यह सिफारिश इस संशोधन के साथ स्वीकार कर ली गई है। कि पुस्तकालयों के लिए उपलब्ध धनराशि में से जर्नल व संदर्भ साहित्य की खरीद किए जाने के बाद बची राशि का 50% हिंदी पुस्तकों की खरीद पर खर्च किया जाए। राजभाषा विभाग परिचालित हिंदी की स्तरीय पुस्तकों की सूची में उल्लिखित सभी पुस्तकों को खरीदना आवश्यक है। राजभाषा विभाग समय-समय पर हिंदी की स्तरीय पुस्तकों की एक सूची सभी मंत्रालयों/विभागों को उपलब्ध करवाएगा।''

संस्तुति सं० 11.5.11 : कोड/मैनुअलों और अन्य कार्यविधि साहित्य को द्विभाषी रूप में उपलब्ध करवाया जाए क्योंकि अभी भी कुछ कार्यालयों में यह द्विभाषी रूप (डिग्लाट) में उपलब्ध नहीं हैं।

संस्तुति सं० 11.5.12 : अभी भी अधिकतर प्रशिक्षण केंद्रों में प्रशिक्षण अंग्रेजी माध्यम से ही दिया जा रहा है। ऐसे केंद्रों में प्रशिक्षण सामग्री पूर्णतया हिंदी/द्विभाषी रूप में उपलब्ध कराने की व्यवस्था की जाए।

''इस संबंध में आदेश पहले से ही विद्यमान हैं। समिति की उक्त सिफारिशें स्वीकार कर ली गई हैं।''

संस्तुति सं० 11.5.13 : सभी भर्ती परीक्षाओं में अंग्रेजी के प्रश्नपत्र की अनिवार्यता समाप्त की जाए। सभी भर्ती परीक्षाओं का माध्यम हिंदी हो। जहां अपरिहार्य हो वहीं अभ्यर्थी को उत्तर देने के लिए अंग्रेजी माध्यम का विकल्प दिया जाएं। साक्षात्कार के लिए भी यही नियम लागू हो।

''साक्षात्कार में हिंदी का विकल्प देने के लिए पहले से आदेश विद्यमान हैं। लेकिन अंग्रेजी के पश्न-पत्र की अनिवार्यता समाप्त करने तथा सभी भर्ती परीक्षाओं का माध्यम हिंदी करने संबंधी सिफारिश स्वीकार नहीं की गई क्योंकि यह संसद के दोनों सदनों द्वारा पारित राजभाषा संकल्प 1968 के प्रतिकूल है।''

संस्तुति सं० 11.5.14 : अभी भी कुछ कार्यालयों में रजिस्टरों/सेवा पुस्तिकाओं में प्रविष्टियां अंग्रेजी में की जा रही हैं। इन प्रविष्टियों को सरकारी आदेशानुसार हिंदी में करने के लिए उचित कदम उठाए जाएं।

''इस संबंध में समिति के प्रतिवेदन के चौथे खण्ड में की गई सिफारिश के आधार पर राजभाषा विभाग द्वारा दिनांक 21-07-1992 के का०ज्ञा० सं० 12024/2/92-रा०भा० (ख-2) के तहत सभी मंत्रालयों/विभागों से अनुरोध किया गया है कि वे 'क''ख' क्षेत्र में स्थित केंद्र सरकार के कार्यालयों आदि में रजिस्टरों/सेवा पुस्तिकाओं में प्रविष्टियां हिंदी में करें और 'ग' क्षेत्र में स्थित कार्यालयों में प्रविष्टियां यथासंभव हिंदी में करें।''

संस्तुति सं० 11.5.15 : जांच-बिन्दुओं को और अधिक प्रभावी एवं सक्रिय बनाया जाए।

''इस संबंध में आदेश पहले से ही विद्यमान हैं। अतः यह सिफारिश स्वीकार कर ली गई है।''

संस्तुति सं० 11.5.16 : सभी प्रकाशन, जहां तक संभव हो, द्विभाषी रूप में निकाले जाएं तथा यह सुनिश्चित किया जाए कि उनमें अंग्रेजी व हिंदी की सामग्री लगभग बराबर हो।

''इस संबंध में आदेश पहले ही जारी किए जा चुके हैं। समिति की यह सिफारिश स्वीकार कर ली गई है।''

संस्तुति सं० 11.5.17 : कई नगरों में स्थित नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों के सदस्यों की संख्या बहुत अधिक है। अतः समिति का सुझाव है कि इन्हें विभाजित कर इनके सदस्यों की अधिकतम निर्धारित संख्या 40 रखी जाए और तदनुसार दो या इससे अधिक नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियां गठित की जाएं।

''समिति की यह सिफारिश इस संशोधन के साथ स्वीकार कर ली गई है कि जिन समितियों की सदस्य संख्या 150 या इससे अधिक हो, उन्हें दो भागों में बांटा जाए। राजभाषा विभाग द्वारा इस आशय के निदेश जारी किए जाएं।''

संस्तुति सं० 11.5.18 : निरीक्षण के दौरान संसदीय राजभाषा समिति को दिए गए आश्वासनों को एक निश्चित समय-अवधि में पूरा किया जाए।

''संसदीय राजभाषा समिति किसी कार्यालय से आश्वासन नहीं मांगती है। यदि कोई कार्यालय अपनी इच्छा से आश्वासन देता है तो वह उसे अविलम्ब पूरा करे। राजभाषा विभाग इस संबंध में निदेश जारी करे।''

11.6 संघ तथा राज्य सरकारों के बीच पत्राचार में हिंदी के प्रयोग के संबंध में सिफारिशें

संस्तुति सं० 11.6.1 : जिन राज्यों में राजभाषा अधिनियम पारित नहीं किये गए हैं, उनमें यह अधिनियम/संकल्प अविलम्ब पारित किया जाए तथा राजभाषा अधिनियम/नियमों में केंद्र तथा हिंदी भाषी राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों के साथ हिंदी में पत्राचार करने का प्रावधान किया जाए।

संस्तुति सं० 11.6.2 : राज्यों द्वारा आयोजित भर्ती परीक्षाओं में अंगेजी के प्रश्न-पत्र की अनिवार्यता समाप्त की जाए। परीक्षाओं का माध्यम केवल अंग्रेजी न बनकर उसे विकल्प मात्र रखा जाए। परीक्षाओं का माध्यम संबद्ध राज्य की राजभाषा अथवा सर्वाधिक प्रचलित भाषा और हिंदी ही होनी चाहिए। जहां स्थानीय परिस्थितियों के कारण अपरिहार्य हो वहां अग्रेजी माध्यम का विकल्प भी दिया जा सकता है।

''समिति की उक्त सिफारिशें राज्य सरकारों के विचारार्थ भेज दी जाएंगी। राज्यों की राजभाषा या राजभाषाओं से संबंधित प्रावधान संविधान के अनुच्छेद 345 में वर्णित हैं। इन प्रावधानों के तहत राज्य सरकारें स्वयं निर्णय लेने के लिए सक्षम हैं।''

संस्तुति सं० 11.6.3 : सभी राज्यों में राज्य सचिवालय स्तर पर हिंदी प्रभाग/प्रकोष्ठ की स्थापना की जाए,जिसमें हिंदी स्टाफ, हिंदी टाइपिस्ट, हिंदी आशुलिपिक, देवनागरी या द्विभाषी टाइपराइटरों, कम्प्यूटरों आदि की व्यवस्था भी की जाए।

''समिति की यह सिफारिश मान ली गई है। इसे राजय सरकारों के विचारार्थ भेजा जाए।''

संस्तुति सं० 11.6.4 : कहीं से भी हिंदी में प्राप्त पत्रों के उत्तर हिंदी में दिए जाने की व्यवस्था की जाए।

''समिति की यह सिफारिश स्वीकार नहीं की गई क्योंकि संविधान के अनुच्छेद 346 में निहित प्रावधानों के अनुसार पत्रादि में राजभाषा का प्रयोग किया जाना है।''

संस्तुति सं० 11.6.5 : अधीनस्थ कार्यालयों में अंग्रेजी के वर्चस्व को समाप्त किया जाए और सम्बद्ध राज्यों में आठवीं अनुसूची में सम्मिलित भाषाओं, हिंदी तथा राज्य की राजभाषाओं के प्रयोग को प्रोत्साहित किया जाए। उच्च न्यायालयों की कार्यवाहियों में भी हिंदी तथा सम्बद्ध राज्य की राजभाषा/राजभाषाओं का अधिकाधिक प्रयोग किये जाने का प्रावधान किया जाए।

''यह मामला राज्य सरकारों के अधिकार क्षेत्र के अंतर्गत आता है। अतः समिति की यह सिफारिश आगामी विचार एवं कार्रवाई हेतु राज्य सरकारों को भेज दिया जाए।''

संस्तुति सं० 11.6.6 : विधान मंडलों में होने वाले समस्त विधायी कार्य तथा प्रस्तुत किये जाने वाले विधेयकों, संकल्पों, नियमों आदि का प्रारूपण मूल रूप से हिंदी अथवा राज्य की राजभाषा में किया जाए और जहां अपरिहार्य हो, वहां उसका अंग्रेजी अनुवाद किया जाए। किसी भी विवाद की स्थिति में हिंदी अथवा राज्य की राजभाषा के पाठ को ही प्रमाणित माना जाए।

''समिति की यह सिफारिश सिद्धांत रूप में स्वीकार कर ली गई है। इसका संबंध राज्य सरकारों से है। अतः इस पर आगामी विचार एवं कार्रवाई करने के लिए राज्य सरकारों को भेज दिया जाए।''

संस्तुति सं० 11.6.7 : हिंदी के माध्यम के रूप में, प्रत्येक स्तर पर, हिंदी और सम्बद्ध राज्य की राजभाषा को अपनाया जाए।

''समिति की यह सिफारिश स्पष्ट नहीं है।''

संस्तुति सं० 11.6.8 : राज्य स्तर पर सभी इलैक्ट्रानिक यंत्र/संयंत्र/कम्प्यूटर आदि द्विभाषी रूप में या केवल हिंदी में उपलब्ध कराए जाएं और इनका भरपूर इस्तेमाल हिंदी कार्य के लिए किया जाए।

''समिति की यह सिफारिश स्वीकार नहीं की गई।''

संस्तुति सं० 11.6.9 : केवल रोमन के टाइपराइटरों/ इलैक्ट्रानिक यंत्रों आदि की खरीद पर प्रतिबंध लगाया जाए।

संस्तुति सं० 11.6.10 : केंद्र सरकार के कार्यालयों आदि को टेलेक्स, टेलीप्रिंटर आदि पर सूचनाएं हिंदी में भिजवाने की व्यवस्था की जाए और अधिकाधिक तार/फैक्स आदि भी देवनागरी में ही भिजवाने की व्यवस्था की जाए।

''समिति की उक्त सिफारिशें स्वीकार नहीं की गई।''

संस्तुति सं० 11.6.11 : सभी नियम पुस्तकें, प्रक्रिया साहित्य आदि राज्य की राजभाषा में उपलब्ध हों।

''समिति की यह सिफारिश स्वीकार कर ली गई है। इस पर आगामी कार्रवाई एवं विचार के लिए राज्य सरकारों को भेजा जाए।''

संस्तुति सं० 11.6.12 : राज्य सरकारों को हिंदी शिक्षण योजना चलाने व हिंदी का प्रचार-प्रसार करने के लिए केंद्रीय सरकार द्वारा वित्तीय व अन्य संसाधनों द्वारा सहायता देने की योजना तैयार कर उसे लागू किया जाए।

''पूर्व में किए गए प्रयासों के परिणामस्वरूप एक भी राज्य आगे नहीं आया। इसलिए समिति की यह सिफारिश स्वीकार नहीं की गई।''

संस्तुति सं० 11.6.13 : 'ग' क्षेत्र के राज्यों को भी पंजाब, गुजरात व महाराष्ट्र की भांति अन्य राज्यों के साथ पत्र-व्यवहार में हिंदी का प्रयोग करना चाहिए।

''समिति की इस सिफारिश पर संविधान के अनुच्छेद 346 के अनुसार कार्रवाई करने की वर्तमान नीति पर्याप्त है।''

11.7 संघ तथा संघ राज्य क्षेत्रों के बीच पत्राचार में हिंदी के प्रयोग के संबंधी सिफारिशें

समिति यह महसूस करती है कि संघ तथा संघ राज्यक्षेत्रों के बीच पत्राचार में हिंदी के प्रयोग को बढ़ाए जाने के लिए केंद्र सरकार द्वारा पहल करनी चाहिए ताकि निर्धारित लक्ष्य प्राप्त किया जा सके। अंडमान निकोबार द्वीपसमूह में हिंदी के प्रभाव को देखते हुए वहां पर राजभाषा हिंदी के प्रगामी प्रयोग को बढ़ाया जाना चाहिए। इसी प्रकार केंद्र सरकार को चंडीगढ़ के बारे में स्पष्ट नीति तय कर लेनी चाहिए ताकि वहां पर राजभाषा नीति को सुचारू रूप से कार्यान्वित किया जा सके। दादरा एवं नागर हवेली में हिंदी टंकक, हिंदी आशुलिपिक, हिंदी अधिकारी आदि के पद सृजित करके हिंदी के सुचारू कार्यान्वयन हेतु अल्पसंख्यक भाषाओं के अध्यापकों के प्रशिक्षण की व्यवस्था आवश्यक है। लक्षदीप में राजभाषा हिंदी के प्रगामी प्रयोग को गति देने के लिए हिंदी में कार्य कर सकने वाली यांत्रिक सुविधाएं, अन्य मूलभूत व्यवस्थाएं उपलब्ध कराए जाने तथा हिंदी संबंधी पद सृजित किए जाने की आवश्यकता है। संक्षेप में केंद्रीय सरकार द्वारा संघ राज्यक्षेत्रों में राजभाषा हिंदी के प्रगामी प्रयोग में प्रगति के लिए कार्मिक शक्ति व अन्य यांत्रिक सुविधाएं मुहैया कराई जानी चाहिए ताकि संघ/संघ राज्यक्षेत्रों के बीच पत्राचार हिंदी में किया जा सके।

''समिति की यह सिफारिश स्वीकार कर ली गई है। राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा समुचित कार्रवाई की जाए।''

11.8 राज्यों तथा संघ राज्य क्षेत्रों के बीच परस्पर पत्र व्यवहार में संघ तथा राज्य की राजभाषाओं का प्रयोग

संस्तुति सं० 11.8.1 : 'क' क्षेत्र में स्थित राज्यों/संघ राज्यक्षेत्रों से 'क' और 'ख' क्षेत्र में स्थित राज्यों/संघ राज्यक्षेत्रों के बीच पत्राचार की भाषा हिंदी होनी चाहिए।

संस्तुति सं० 11.8.2 : 'क' क्षेत्र में स्थित राज्यों/संघ राज्यक्षेत्रों तथा 'ग' क्षेत्र में स्थित राज्यों/संघ राज्यक्षेत्रों के बीच पत्राचार की भाषा हिंदी या संबंधित राज्य/संघ राज्यक्षेत्र की भारतीय भाषा, जैसा कि आपस में सहमति हो, होनी चाहिए। किसी कारणवश यदि इस मुद्दे पर आपसी सहमति न हो पाए तो कुछ अवधि के लिए वर्तमान व्यवस्था जारी रखी जा सकती है।

संस्तुति सं० 11.8.3 : 'ख' क्षेत्र में स्थित राज्यों/संघ राज्यक्षेत्रों तथा 'क' व 'ख' क्षेत्रों में स्थित राज्यों/संघ राज्यक्षेत्रों के बीच आपसी पत्राचार की भाषा हिंदी होनी चाहिए।

संस्तुति सं० 11.8.4 : 'ख' क्षेत्र में स्थित राज्यों/संघ राज्यक्षेत्रों तथा 'ग' क्षेत्र में स्थित राज्यों/संघ राज्यक्षेत्रों के बीच पत्र-व्यवहार की भाषा हिंदी या संबंधित राज्य/संघ राज्यक्षेत्र की भारतीय भाषा, जैसा कि आपस में सहमति हो, होनी चाहिए। किसी कारणवश यदि इस मुद्दे पर आपसी सहमति न हो पाए तो कुछ अवधि के लिए वर्तमान व्यवस्था जारी रखी जा सकती है।

संस्तुति सं० 11.8.5 : 'ग' क्षेत्र में स्थित राज्यों/संघ राज्यक्षेत्रों से 'क', 'ख' और 'ग' क्षेत्र में स्थित राज्यों/संघ राज्यक्षेत्रों के बीच पत्र-व्यवहार की भाषा हिंदी या संबंधित राज्य/संघ राज्यक्षेत्र की भारतीय भाषा, जैसा कि आपस में सहमति हो, होनी चाहिए। किसी कारणवश यदि इस मुद्दे पर आपसी सहमति न हो पाए तो कुछ अवधि के लिए वर्तमान व्यवस्था जारी रखी जा सकती है।

''समिति की उक्त सिफारिशें सिद्धांत रूप में स्वीकार कर ली गई हैं। इन पर चरणबद्ध ढंग से कार्रवाही की जाए। राजभाषा विभाग द्वारा समुचित निदेश जारी किए जाएं।''

11.9 विदेशों में स्थित भारत सरकार के कार्यालयों में हिंदी के प्रगामी प्रयोग संबंधी सिफारिशें

संस्तुति सं० 11.9.1 : भारत सरकार के विदेश स्थित कार्यालयों में राजभाषा संबंधी सभी आदेशों, विशेष तौर पर राजभाषा विभाग द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित लक्ष्यों व समिति के प्रतिवेदन के पिछले चार खण्डों पर राष्ट्रपति जी के आदेशों आदि का अनुपालन सुनिश्चित किया जाये। समिति विशेष तौर पर राजभाषा अधिनियम, 1963 की धारा 3 (3) का

अनुपालन सुनिश्चित करने पर जोर देती है। देश में या विदेश में स्थित निजी पार्टियों/एजेंटों के साथ भारत सरकार के ऐसे करारों को अंतिम रूप देने/निष्पादित करते समय भारत सरकार की अन्य नीतियों की तरह ही केंद्रीय सरकार की राजभाषा नीति के कार्यान्वयन का भी ध्यान रखा जाए।

संस्तुति सं० 11.9.2 : भारत सरकार की नीतियों के अनुपालन के संबंध में विदेश में स्थित भारत के राजदूतों/उच्चायोगों आदि का विशेष महत्व है। जिस प्रकार राष्ट्रीय ध्वज या राष्ट्रीय गीत भारत की मर्यादा व सम्मान का सूचक है उसी प्रकार राजभाषा भी भारत की पहचान है। इसीलिए हमारे दूतावास/उच्चायोग यह सुनिश्चित करने में पहल करें तथा इस उद्देश्य के लिए नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तरह विदेशों में भी समितियां बनाई जाएं जिनका अध्यक्ष भारत का राजदूत/उच्चायुक्त हो तथा उस देश में भारत सरकार के सभी कार्यालयों के अध्यक्ष इसके सदस्य हों। यह समिति अपनी बैठकें नियमित रूप से करें तथा उसकी रिपोर्ट विदेश मंत्रालय व राजभाषा विभाग को नियमित रूप से भेजी जाए।

''समिति की उक्त सिफारिशें स्वीकार कर ली गई हैं। विदेश मंत्रालय द्वारा समुचित कार्रवाई की जाए।''

संस्तुति सं० 11.9.3 : विभिन्न देशों में हिंदी की प्रगति संबंधी विशेष परिस्थितियां हैं तथा उन परिस्थितियों की पहचान कर हिंदी की प्रगति संबंधी उचित कदम उठाने की जरूरत है। उदाहरण के लिए समिति ने मारीशस में हिंदी के प्रति अपार स्नेह पाया परन्तु वहां पर हिंदी पुस्तकें, हिंदी अध्यापकों आदि की कमी महसूस की गई। इसी प्रकार दक्षिण अफ्रीका में भी हिंदी को बढ़ावा देने के लिए हिंदी अध्यापकों की मांग है। इसलिए समिति यह सुझाव देती है कि विदेशों में स्थित भारतीय राजदूतावास/उच्चायोग आदि ऐसी विशेष परिस्थितियों का अध्ययन करायें तथा तदनुसार हिंदी को बढ़ावा देने हेतु कदम उठाएं। भारतीय दूतावास/उच्चायोग आदि हिंदी को बढ़ावा देने हेतु संसाधन, जिसमें मानव शक्ति, यंत्र, पुस्तकें आदि भी शामिल हों उपलब्ध कराने हेतु समन्वय का काम करें तथा यदि संभव हो तो कुछ टोकन वित्तीय सहायता भी उपलब्ध करायें।

''समिति की यह सिफारिश मान ली गई है। राजभाषा विभाग इसके त्वरित कार्यान्वयन हेतु एक कार्य योजना तैयार करे और उसे 10वीं पंचवर्षीय योजना की अवधि में पूरा करे।''

संस्तुति सं० 11.9.4 : भारत सरकार के राजदूतावासों/ उच्चायोगों में हिंदी एकक की स्थापना हो जो उस देश में भारत सरकार के कार्यालयों आदि में हिंदी संबंधी आदेशों के अनुपालन की मॉनिटरिंग करें। ऐसा हिंदी एकक किसी हिंदी में प्रवीण अधिकारी के अंतर्गत काम करे तथा उसमें कम से कम एक हिंदी टाइपराइटर, एक हिंदी टाइपिस्ट, एक हिंदी आशुलिपिक व एक हिंदी अनुवादक उपलब्ध हो। समिति ने अपने विदेश दौरे के दौरान भारतीयों/भारतीय मूल के लोगों से चर्चा के दौरान यह महसूस किया कि यदि भारतीय राजदूतावासों/उच्चायोगों/मिशनों आदि में ऐसे लोगों से हिंदी में बात करने की व पत्र-व्यवहार करने की व्यवस्था हो तो जहां उन्हें अपनेपन का अहसास होगा वहीं विदेशी भाषाओं में अप्रवीण कुछ भारतीय लोग अपनी कठिनाइयों से भी हमारे दूतावास को अवगत करा सकेंगे। बहुत सारे भारतीय अप्रवासी विदेश में विभिन्न प्रकार के कार्यों से जाते हैं तथा विदेशी भाषा में अपने विचार उतनी आसानी से व्यक्त नहीं कर पाते हैं जितनी आसानी से वह हिंदी में कर सकते हैं। ऐसे विदेशी माहौल में वे अपने आपको कटा हुआ महसूस करते हैं। ऐसे अप्रवासी भारतीय जब हमारे दूतावास में जाते हैं तो वहां भी उन्हें विदेशी माहौल ही मिलता है जिसे कि बदला जा सकता है। इसलिए समिति यह सिफारिश करती है कि विदेशों में स्थित हमारे दूतावासों/उच्चायोगों/मिशनों आदि में स्वागत कक्ष में बैठने वाले कम से कम एक कर्मचारी को हिंदी बोलनी, लिखनी व पढ़नी आती हो तथा वह कर्मचारी जहां तक हो सके भारतीयों के साथ हिंदी में ही बातचीत व पत्राचार करे। इस प्रकार की सूचना स्वागत कक्ष में भी मोटे अक्षरों में लिखी जानी चाहिए ताकि कोई भी भारतीय जो हिंदी में बातचीत अथवा पत्राचार करना चाहे वह बिना संकोच ऐसा कर सके।

''समिति की यह सिफारिश स्वीकार कर ली गई है। विदेश मंत्रालय प्राथमिकता के आधार पर कुछ चुनिंदा राजदूतावासों, उच्चायोगों में हिंदी कक्ष की व्यवस्था करे। राजभाषा विभाग द्वारा राजदूतावासों/उच्चायोगों के स्टाफ के लिए एक सप्ताह का सघन प्रशिक्षण कार्यक्रम किसी राजदूतावास में आयोजित किया जाए। प्रशिक्षण कार्यक्रम में

अन्य दूतावासों/उच्चायोगों के स्टाफ को भी नामित किया जाए। साथ ही कर्मचारियों के लिए एक सप्ताह का अनुवाद प्रशिक्षण कार्यक्रम भी आयोजित किया जाए।''

संस्तुति सं० 11.9.5 : भारतीय विदेश सेवा के अधिकारियों को हिंदी का व्यवहारिक ज्ञान उनको परिवीक्षा अवधि के दौरान दिया जाना चाहिए। जिस तरह भारतीय प्रशासनिक सेवा के अधिकारियों को विभिन्न राज्यों के काडर में तभी शामिल किया जाता है जब वे एक निश्चित अवधि में उस राज्य की भाषा को सीख लेते हैं उसी प्रकार भारतीय विदेश सेवा के अधिकारी, जो विदेशों में भारत सरकार का प्रतिनिधित्व करते हैं, के लिए भी आवश्यक हो कि वह भारत सरकार की राजभाषा हिंदी का ज्ञान रखते हों। इसी तरह विदेशों में स्थित कार्यालयों में कार्यरत अधिकारियों/कर्मचारियों के लिए हिंदी प्रशिक्षण के लिए विशेष प्रबंध/व्यवस्था की जानी चाहिएं।

''विदेश मंत्रालय द्वारा भारतीय विदेश सेवा के परिवीक्षार्थियों को हिंदी भाषा का विधिवत प्रशिक्षण देने के संबंध में समुचित कार्रवाई की जाए।''

संस्तुति सं० 11.9.6 : समिति ने अपने विदेश दौरे के दौरान पाया कि विदेश मंत्रालय से भारत के राजदूतावासों/उच्चायोगों/मिशनों आदि से हिंदी में किया गया पत्राचार बहुत ही कम है। समिति सिफारिश करती है कि मूल पत्राचार में विदेश मंत्रालय हिंदी का प्रयोग अधिकाधिक करे जिससे विदेशों में स्थित भारत सरकार के कार्यालयों पर बहुत ही अनुकूल प्रभाव पड़ेगा। इसी प्रकार विदेश मंत्रालय विदेशों में स्थित भारत के राजदूतावासों/उच्चायोगों/मिशनों में हिंदी के प्रगामी प्रयोग संबंधी मॉनीटरिंग की व्यवस्था भी सुदृढ़ करें क्योंकि वर्तमान मॉनिटरिंग की व्यवस्था में बहुत सी कमियां हैं तथा एक सुदृढ़ मॉनिटरिंग व्यवस्था न केवल जांच बिन्दु के रूप में काम करेगी बल्कि विदेशों में स्थित राजदूतावासों आदि का सही-सही मार्गदर्शन भी कर सकेगी।

''विदेशों में स्थित राजदूतावासों, उच्चायोगों/मिशनों आदि में राजभाषा नीति के कार्यान्वयन को सुनिश्चित करने के लिए विदेश मंत्रालय द्वारा अपनी निरीक्षण व मॉनिटरिंग व्यवस्था और सुदृढ़ की जाए।''

संस्तुति सं० 11.9.7 : जब कभी भी भारत सरकार के अधिकारी विदेशों में जाएं तो जिन देशों की भाषा अंग्रेजी नहीं है वहां उन्हें अंग्रेजी के द्विभाषिए लेने के बदले हिंदी तथा उस देश की भाषा के द्विभाषिए ही लेने चाहिएं।

''समिति की यह सिफारिश सिद्धांत रूप से स्वीकार कर ली गई है। इस संबंध में विदेश मंत्रालय द्वारा समुचित कार्रवाही की जाए।''

संस्तुति सं० 11.9.8 : विदेशों में स्थित पर्यटक कार्यालयों में भारत के विभिन्न पर्यटक स्थलों संबंधी जानकारी हिंदी में पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध होनी चाहिए। इसी प्रकार विदेश स्थित कार्यालयों में हिंदी की पुस्तकें/पत्र-पत्रिकाओं की मात्रा बढ़ाने की व्यवस्था भी की जाये।

''विदेशों में स्थित पर्यटक कार्यालयों में हिंदी के लिए अनुकूल वातावरण बनाने हेतु पर्यटक स्थलों की विस्तृत जानकारी हिंदी भाषा में भी उपलब्ध होनी चाहिए। पर्यटन जानकारी से संबंधित प्रकाशन जो केवल अंग्रेजी में हैं उन्हें इन कार्यालयों में हिंदी में भी उपलब्ध किया जाना चाहिए। इस संबंध में विदेश मंत्रालय तथा पर्यटन एवं संस्कृति मंत्रालय द्वारा कारगर कार्रवाई की जाए।''

11.10 अन्य सिफारिशें

संस्तुति सं० 11.10.1 : अहिंदी भाषी अधिकारियों/ कर्मचारियों द्वारा हिंदी शिक्षण योजना के अंतर्गत निर्धारित परीक्षा उत्तीर्ण करने पर उन्हें जो अग्रिम वेतन वृद्धि दी जाती है वह बाद में समाप्त हो जाती है। इस कारण हिंदी में प्रशिक्षण प्राप्त करने

में अधिकारियों/कर्मचारियों की रूचि नहीं होती है। अतः सुझाव है कि वह वेतन वृद्धि स्थायी रूप से दी जानी चाहिए और हिंदी में काम करने वाले अधिकारियों/कर्मचारियों के लिए यह वेतनवृद्धि निरंतर जारी रखनी चाहिए। यदि निर्धारित परीक्षा पास करने के पश्चात् संबंधित अधिकारी/कर्मचारी हिंदी में कार्य नहीं करते हैं तो यह वेतनवृद्धि रोक दी जानी चाहिए

संस्तुति सं० 11.10.2 : यही पद्धति हिंदी टंकण और हिंदी आशुलिपि की परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद उन पर भी लागू होनी चाहिए।

''समिति की उक्त सिफारिशें स्वीकार कर ली गई हैं। राजभाषा विभाग द्वारा समुचित कार्रवाई की जाए।''

संस्तुति सं. 1.10.3 : प्रवीणता प्राप्त व हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान रखने वाले व्यक्तियों को कार्यशालाओं के माध्यम से हिंदी में कार्य करने का प्रशिक्षण देने के बाद उनसे हिंदी में कार्य लिया जाये। वे हिंदी में अपना काम शुरू करते हैं तो उन्हें स्थायी रूप से अतिरिक्त वेतनवृद्धि दी जानी चाहिए।

''ऐसा करना व्यावहारिक नहीं है। अतः समिति की यह सिफारिश स्वीकार नहीं की गई है।''

संस्तुति सं. 11.10.4 : राजभाषा हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए कर्मचारियों को हिंदी में अच्छे अंकों से परीक्षा पास करने पर तथा हिंदी में काम करने पर जो पुरस्कारों की योजना है वह जारी रहनी चाहिए।

''समिति की यह सिफारिश स्वीकार कर ली गई है। राजभाषा विभाग द्वारा समुचित निदेश जारी किए जाएं।''

संस्तुति सं. 11.10.5 : हिंदी में काम करने की मानसिकता पैदा की जाये । समिति सहमत है कि हिंदी को बढ़ावा देने के लिए प्रेरणा, प्रोत्साहन आदि की जरूरत है, परन्तु इन सबके बावजूद भी सरकारी आदेशों को न मानने वालों को इस संबंध में आदेशों की अवहेलना करने का अहसास दिलाया जाए ताकि उन्हें अपने उत्तरदायित्व का बोध हो सके। यदि हिंदी में प्रवीणता/कार्यसाधक ज्ञान रखने वाले (कार्यशालाओं में प्रशिक्षण प्राप्त करने के बाद भी) हिंदी में काम नहीं करते हैं, हिंदी का प्रशिक्षण प्राप्त करने के बाद परीक्षा पास करने के बाद भी हिंदी में काम नहीं करते हैं तथा जिन्होंने हिंदी टंकण, हिंदी आशुलिपि, हिंदी में कम्प्यूटर पर कार्य करने की परीक्षा पास कर ली है और फिर अपना कार्य हिंदी में नहीं करते हैं तो उनको जो वेतन वृद्धियां दी गई हैं वे रोक देनी चाहिए। साथ ही उनको हिंदी में प्रशिक्षण के बाद काम न करने के संबंध में चेतावनी भी लिखित रूप में ही दी जानी चाहिए कि वह हिंदी में कार्य करें अन्यथा राजभाषा नियम तथा तत्संबंधी आदेशों की अवहेलना करने की बात उनकी सेवा पंजिका में दर्ज की जाएगी और यदि इसके बाद भी वे कार्य हिंदी में शुरू नहीं करते हैं तो उनके वेतन में वार्षिक वृद्धि को रोकने के आदेश जारी किए जाएंगे। यह आदेश तब तक जारी रहेंगे जब तक वे हिंदी में कार्य शुरू नहीं करते हैं।

''सरकार की नीति है कि राजभाषा नीति का कार्यान्वयन प्रेरणा, प्रोत्साहन व सद्भावना से किया जाए। फिलहाल इसके अंतर्गत दंड का कोई प्रावधान नहीं है तथापि राजभाषा नियम, 1976 (यथा संशोधित, 1987) के नियम 12 के अनुसार प्रत्येक कार्यालय के प्रशासनिक प्रधान का यह उत्तरदायित्व है कि वह राजभाषा अधिनियम और राजभाषा नियमों के उपबंधों तथा समय-समय पर जारी अनुदेशों का पालन सुनिश्चित करवाएं और इस प्रयोजन के लिए उपयुक्त एवं प्रभावकारी उपाय करे ।''

संस्तुति सं. 11.10.6 : हिंदी में काम न करने पर जो प्रविष्टि उनकी सेवा पंजिका में हो, उनकी गोपनीय वार्षिक रिपोर्ट में भी उनके अधिकारी द्वारा यह लिखा जाए कि इन्होंने प्रशिक्षण व योग्यता हिंदी में प्राप्त कर ली है तथा इन्हें राजभाषा नियम, 1976 के नियम 8 (4) के अंतर्गत सरकारी कामकाज हिंदी में करने के आदेश भी दे दिए गए हैं फिर भी हिंदी में काम नहीं कर रहे हैं। यह राजभाषा नियमों की अवहेलना है। इस बात का ध्यान संबंधित कर्मचारी की अगली तरक्की के समय पर विशेष रूप से रखा जाए।

संस्तुति सं. 11.10.7 : जिस कर्मचारी को भारत सरकार के मंत्रालय/अधीनस्थ कार्यालय/सम्बद्ध कार्यालय/उपक्रम आदि, कार्यालय समय में प्रशिक्षण के लिए हिंदी, हिंदी टंकण/हिंदी आशुलिपि/अनुवाद प्रशिक्षण/कार्यशालाओं में प्रशिक्षण लेने के लिए भेजते हैं, वह नियमित रूप से प्रशिक्षण लें और परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद उनके लिए अपने सरकारी काम का 50 प्रतिशत कार्य हिंदी में करना अनिवार्य हो। यदि वे ऐसा नहीं करते हैं तो जितने दिन उन्होंने प्रशिक्षण लिया और उसके प्रशिक्षण पर आने वाले खर्च की आपूर्ति उस कर्मचारी के वेतन से कटौती करके करनी चाहिए।

''वर्तमान में दण्ड की कोई व्यवस्था नहीं है। अतः समिति की उक्त सिफारिशें स्वीकार नहीं की गई।''

संस्तुति सं. 11.10.8 : जो व्यक्ति हिंदी में अपना सारा कार्य करता है और वह किसी विभागीय परीक्षा में भाग लेता है तो उसके साक्षात्कार के समय उसको हिंदी में कार्य करने के लिए अतिरिक्त अंक दिए जाने चाहिएं और उसे विभागीय प्रोन्नति समिति द्वारा विशेष वरीयता दी जानी चाहिए।

''भारत एक बहुभाषी देश है। केंद्रीय सरकार के कर्मचारी सभी समूहों से आते हैं। अतएव ऐसा भेदभाव करना संभव नहीं है। समिति की यह सिफाशि स्वीकार नहीं की गई।''

संस्तुति सं. 11.10.9 : सभी स्तर के अधीरियों/कर्मचारियों की गोपनीय रिपोर्टों में राजभाषा हिंदी में काम करने के संबंध में विवरण देने के लिए अलग से कताम बनाया जाना चाहिए और उसमें तत्संबंधी विवरण भी अवश्य दिए जाने चाहिएं।

''समिति की यह सिफारिश सिद्धांत रूप मे मान ली गई है। इस संबंध में राजभाषा विभाग समुचित कार्रवाई करे ।''

संस्तुति सं. 11.10.10 : केंद्रीय सरकार की सेवाओं में भर्ती नियमों को संशोधित कर कर्मचारियों का स्थायीकरण होने से पहले हिंदी में प्रवीणता प्राप्त कर लेना जरूरी।

समिति ने अपने तीसरे खंड में सिफारिश की थी कि 'क' और 'ख' क्षेत्रों में हिंदी प्रशिक्षण के लिए बचे हुए वर्तमान कर्मचारियों को वर्ष 1990 के अंत तक तथा 'ग' क्षेत्र में वर्ष 1993 के अंत तक प्रशिक्षित कर दिया जाए। समिति ने यह भी सिफारिश की थी कि नये भर्ती होने वाले कर्मचारियों को व्यावसायिक प्रशिक्षण से पहले हिंदी प्रशिक्षण दिया जाए।

सरकार द्वारा अपेक्षित कर्मचारियों की वर्तमान संख्या को ध्यान में रखते हुए तथा वित्तीय संसाधनों की उपलब्धता की कठिनाइयों के परिप्रेक्ष्य में समिति की सिफाशि इस संशोधन के साथ मान ली गई कि 'क' और 'ख' क्षेत्रों में वर्तमान कर्मचारियों को हिंदी का प्रशिक्षण वर्ष 1997 के अंत तक तथा 'ग' क्षेत्र में स्थित कार्यालय के कर्मचारियों को वर्ष 2000 के अंत तक पूरा कर लिया जाए। समिति की नये भर्ती होने वाले कर्मचारियों को हिंदी का प्रशिक्षण संबंधी सिफारिश भी सिद्धांत रूप में स्वीकार कर ली गई है तथा इसको क्रियान्वित करने के लिए कार्रवाई हो रही है।

समिति ने विभिन्न मंत्रालयों/केंद्र सरकार के कार्यालयों के निरीक्षण के दौरान पाया कि कर्मचारियों के हिंदी प्रशिक्षण के संबंध में प्रगति तो रही है परन्तु हिंदी शिक्षण योजना के अंतर्गत पर्याप्त शिक्षण केंद्र न होने तथा अन्य संसाधनों की कमी के कारण इसकी गति धीमी है । समिति यह महसूस करती है कि इस धीमी गति से निर्धारित समय पर लक्ष्य प्राप्त करने में कठिनाई हो सकती है। अत: समिति का सुझाव है कि हिंदी प्रशिक्षण की व्यवस्था सुदृढ़ की जाए।

विभिन्न राज्य सरकारों द्वारा जारी किए गए आदेशों व सेवा नियमों के अनुसार समिति ने यह देखा कि राज्य की राजभाषा में प्रवीण व्यक्तियों को ही राज्य की सेवा में लिया जाता है। जहां तक भारतीय प्रशासनिक सेवा के अधिकारियों का प्रश्न है उन्हें विभिन्न राज्यों के कैडर में तभी शामिल किया जाता है जबकि एक निश्चित अवधि में वे उस राज्य की भाषा को सीख लेते हैं। यह एक बहुत ही सराहनीय कदम है तथा समिति सिफारिश करती है कि चूंकि संघ सरकार की राजभाषा हिंदी

है अत: संघ की सेवा में आने वाले सभी कर्मचारियों के लिए सेवा नियमों में भी इस प्रकार संशोधन किया जाए ताकि भविष्य में जितने भी नये कर्मचारी भर्ती हों उनके लिए परिवीक्षा अवधि में हिंदी में प्रवीणता प्राप्त कर लेना अनिवार्य हो। उनका स्थायीकरण करते समय इस बात को ध्यान में रखा जाए कि उस कर्मचारी ने हिंदी में प्रवीणता प्राप्त कर ली है या नहीं। प्रवीणता प्राप्त करने के लिए परिवीक्षा अवधि में हिंदी शिक्षण का पूरा इंतजाम किया जाए ताकि ऐसे कर्मचारी को जो प्रवीणता प्राप्त करना चाहते हों, किसी प्रकार की कोई कठिनाई न हो। समिति यह मानती है कि इसके प्रतिवेदन के तीसरे खंड पर राष्ट्रपति जी के आदेशानुसार सन् 2000 तक केन्द्र सरकार के सभी वर्तमान कर्मचारी हिंदी प्रशिक्षण प्राप्त कर लेंगे। उपरोक्त सिफारिश के अनुसार नए भर्ती होने वाले सभी कर्मचारी अपनी परिवीक्षा अवधि के दौरान प्रवीण हो जाएंगे ताकि सन् 2000 के बाद केंद्र सरकारी के सभी कार्यालयो में हिंदी में पूरा काम करने का सपना साकार हो सके।

''हिंदी-प्रशिक्षण-व्यवस्था को सुदृढ़ करने के बारे में आदेश पहले से ही विद्यमान हैं। भारत संघ की राजभाषा नीति प्रेरणा, प्रोत्साहन व सद्भावना पर आधारित है। इसके अंतर्गत दंड की कोई व्यवस्था नहीं है।''

संस्तुति सं. 11.10.11 : लिपिक/टंकक/आशुलिपिक की भर्ती करते समय हिंदी टंकण/हिंदी आशुलिपि का ज्ञान रखने वाले को प्राथमिकता दी जानी चाहिए।

''समिति की यह सिफारिश मान ली गई है । इस बारे में लक्ष्य वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित किए जाते हैं। राजभाषा विभाग द्वारा इस संबंध में आवश्यक निदेश जारी किए जाएं।''

संस्तुति सं. 11.10.12 : उपरोक्त पैरा सं. 11.10.11 में उल्लिखित कर्मचारियों से ऊपर के अधिकारियों/कर्मचारियों की नियुक्ति में भी उपरोक्त पद्धति को अपनाया जाना चाहिए। राजभाषा को उसका उचित स्थान देने के संबंध में अधिकारियों की भी जिम्मेदारी निश्चित की जानी चाहिए। जिस विभाग में सारा काम हिंदी में होने लगे तो उस विभाग के संबंधित अधिकारी को पुरस्कार से सम्मानित भी किया जाना चाहिए।

''भारत एक बहुभाषी देश है केंद्रीय सरकार के कर्मचारी सभी भाषा समूहों से आते हैं। अतएव ऐसा भेदभाव करना संभव नहीं है। मंत्रालयों/विभागों, कार्यालयों आदि में कार्यरत अधिकारियों/कर्मचारियों के लिए अनेक प्रोत्साहन योजनाएं लागू हैं''

संस्तुति सं. 11.10.13 : राजभाषा विभाग द्वारा राजभाषा के कार्यान्वयन के लिए हिंदी पदों के संबंध में अलग से मानक निर्धारित किए जाने चाहिए। सभी बड़े-बड़े मंत्रालयों में रेल मंत्रालय की तरह राजभाषा निदेशालय बनाए जाएं ताकि राजभाषा नीति के कार्यान्वयन का कार्य प्रभावी ढंग से हो सके । इसी प्रकार भारत सरकार के बड़े-बड़े अधीनस्थ, सम्बद्ध, उपक्रम, कार्यालयों में राजभाषा संबंधी प्रयोग व प्रसार से संबंधित कार्यों के संचालन के लिए राजभाषा निदेशक/वरिष्ठ प्रबंधक स्तर का अधिकारी हो और वह केवल राजभाषा के प्रयोग-प्रसार के कार्य का ही संचालन करे। अधिकांश उपरोक्त स्तर के कार्यालयों में यह देखने में आया है कि राजभाषा के प्रचार-प्रयोग संबंधी कार्य दूसरे विषय के अधिकारी को एक अतिरिक्त विषय के रूप में सौंप दिया जाता है जबकि उसको राजभाषा के बारे में न कोई जानकारी होती है और न ही उसको बढ़ावा देने के लिए राजभाषा संबंधी कार्य में रुचि लेते हैं। इस कारण राजभाषा अनुभाग में कार्य करने वाला स्टाफ भी राजभाषा के प्रयोग व प्रसार में उतनी रुचि नहीं लेता जितनी अपेक्षा होती है।

''समिति की यह सिफारिश स्वीकार कर ली गई है। राजभाषा नीति के कार्यान्वयन तथा राजभाषा अधिनियम और उसके अंतर्गत बनाए गए नियमों के प्रावधानों का अनुपालन सुनिश्चित करने के लिए न्यूनतम हिंदी पदों के सृजन हेतु मानक पहले से ही विद्यमान है।''

संस्तुति सं. 11.10.14 : केंद्रीय सरकार के मंत्रालय स्तर के लिए तो राजभाषा कैडर बना है जिसके कारण एक कनिष्ठ अनुवादक निदेशक (राजभाषा) के पद तक पहुंच जाता है, किन्तु भारत सरकार के अधीनस्थ/सम्बद्ध/उपक्रमों/ प्रतिष्ठानों में

राजभाषा कैडर की व्यवस्था नहीं है। इस कारण राजभाषा अनुभाग में कार्य करने वाले अधिकारी/कर्मचारी विभागीय पदोन्नति से इस कारण वंचित रह जाते हैं कि वह राजभाषा हिंदी में कार्य कर रहा है। अत: उक्त कार्यालयों में राजभाषा कैडर के आधार पर पदोन्नति होनी चाहिए अथवा उनके विभाग में उनकी वरीयता के आधार पर पदोन्नति की जानी चाहिए। एक मंत्रालय के अधीन जितने उपक्रम/प्रतिष्ठान/अधीनस्थ/सम्बद्ध कार्यालय हैं उनका राजभाषा कैडर बनाया जाए।

''समिति की यह सिफारिश स्वीकार कर ली गई है। इस संबंध में निदेश पहले ही जारी किए जा चुके हैं। राजभाषा विभाग द्वारा तत्संबंधी निदेश पुनः परिचालित किए जाएं।''

संस्तुति सं. 11.10.15 : सरकारी कामकाज में राजभाषा के प्रगामी प्रयोग संबंधी कार्य पर निगरानी का कार्य कम से कम संयुक्त सचिव स्तर के अधिकारी को सौंपा जाए।

''समिति की यह सिफारिश स्वीकार नहीं की गई क्योंकि सभी कार्यालयों में संयुक्त सचिव स्तर के अधिकारी नहीं होते हैं। अतः वर्तमान व्यवस्था पर्याप्त है।''

संस्तुति सं. 11.10.16 : राजभाषा नीति तथा तत्संबंधी आदेशों को लागू कराने के लिए राजभाषा विभाग को और सुदृढ़ बनाया जाना चाहिए।

''समिति की यह सिफारिश सिद्धांत रूप में स्वीकार कर ली गई है। राजभाषा विभाग द्वारा इस संबंध में समुचित कार्रवाई की जाए।''

संस्तुति सं. 11.10.17 : आटोमेशन करने से हिंदी का काम पिछड़ रहा है। अत: शुरू से ही यह ध्यान रखा जाये कि आटोमेशन में हिंदी का प्रयोग बढ़ाने हेतु प्रचुर प्रावधान हो।

''सभी प्रकार के यांत्रिक एवं इलेक्ट्रॉनिक उपकरण हिंदी-अंग्रेजी द्विभाषी रूप में खरीदे जाने के बारे में आदेश पहले से ही विद्यमान हैं। अतः समिति की यह सिफारिश स्वीकार कर ली गई है।''

संस्तुति सं. 11.10.18 : सभी कम्पनियों/निकायों, उपक्रमों, प्राधिकरणों आदि के भारतीय नाम रखे जाएं और उन्हें पंजीकृत कराए जाएं।

''इस बारे में निदेश पहले से ही विद्यमान हैं कि केंद्रीय सरकार के कार्यालयों/संस्थानों के नाम हिंदी अथवा भारतीय भाषाओं में दिए जाएं। इन निदेशों का दृढ़तापूर्वक अनुपालन सुनिश्चित करवाने हेतु राजभाषा विभाग द्वारा इन निदेशों की पुनरावृत्ति की जाए।''

संस्तुति सं. 11.10.19 : राजभाषा नियम, 1976 के नियम 8 (4) को इस प्रकार संशोधित किया जाए जिसमें हिंदी में प्रवीणता प्राप्त अधिकारियों/कर्मचारियों को अपना सारा काम हिंदी में करने के लिए आदेश दिए जा सकें तथा हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान रखने वाले अधिकारियों/कर्मचारियों के लिए काम की कुछ मदें निर्धारित कर दी जाएं जिन्हें वे हिंदी में करें।

''राजभाषा नियम, 1976 के नियम 8 (4) के अंतर्गत वर्तमान व्यवस्था पर्याप्त है। अतः समिति की यह सिफारिश स्वीकार नहीं की गई है।''

संस्तुति सं. 11.10.20 : ''ग'' क्षेत्र में स्थित केंद्रीय सरकार के कार्यालयों में हिंदी टाइपिस्ट/हिंदी आशुलिपिक तथा देवनागरी टाइपराइटरों का लक्ष्य 25 प्रतिशत से बढ़ाकर 50 प्रतिशत तक कर दिया जाए।

"वार्षिक कार्यक्रम 2003-2004 में "ग" क्षेत्र के लिए लक्ष्य पहले से ही 50% निर्धारित है। समिति की यह सिफारिश स्वीकार कर ली गई है।"

संस्तुति सं. 11.10.21 : द्विभाषी इलेक्ट्रोनिक यंत्रों पर किए जाने वाले कार्य में से हिंदी के कार्य की प्रतिशतता निर्धारित की जाए।

"राजभाषा हिंदी में कार्य करने के लिए वार्षिक कार्यक्रम में विभिन्न मदों के लिए लक्ष्य निर्धारित किए जाते हैं। तदनुसार ही द्विभाषी इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों पर हिंदी में कार्य किया जाना है। इसके लिए अलग से प्रतिशत निर्धारित करने की आवश्यकता नहीं है।"

संस्तुति सं. 11.10.22 : 'क' और 'ख' क्षेत्र में स्थित भारत सरकार के कार्यालयों में केवल हिंदी में छपे या तैयार किए फार्मों और मानक मसौदों का उपयोग किया जाए।

संस्तुति सं. 11.10.23 : 'क' और 'ख' क्षेत्र में स्थित भारत सरकार के कार्यालयों में मोहरें, नामपट्ट, साइनबोर्ड, सीलें, पत्रशीर्ष, वाहनों पर लिखे जाने वाले कार्यालय के विवरण और विजिटिंग कार्ड केवल हिंदी में तैयार किए जाएं।

"राजभाषा नियम, 1976 के नियम 11 के अंतर्गत वर्तमान व्यवस्था पर्याप्त है। अतः समिति की उक्त सिफारिशें स्वीकार नहीं की गई है ।"

संस्तुति सं. 11.10.24 : 'क' क्षेत्र में स्थित मंत्रालय/ विभाग/कार्यालय आदि द्वारा 'क' और 'ख' क्षेत्रों में स्थित कार्यालयों से अंग्रेजी में प्राप्त पत्रों का उत्तर हिंदी में ही दिया जाए।

" 'क' क्षेत्र में स्थित मंत्रालयों/विभागों/कार्यालयों आदि द्वारा 'क' और 'ख' क्षेत्रों में स्थित मंत्रालयों/विभागों/कार्यालयों आदि को तथा राज्य/संघ राज्य क्षेत्रों को वार्षिक कार्यक्रम 2003-04 में निर्धारित लक्ष्य के अनुसार शत-प्रतिशत पत्रादि हिंदी में भेजे जाने अपेक्षित हैं। इसी प्रकार 'ख' क्षेत्र से 'क' व 'ख' क्षेत्रों में स्थित कार्यालयों आदि को 90% पत्रादि हिंदी में भेजे जाने अपेक्षित हैं। तदनुसार ही 'क' क्षेत्र में स्थित मंत्रालयों/विभागों/कार्यालयों द्वारा अंग्रेजी में प्राप्त पत्रों के उत्तर हिंदी में दिए जाएं। इसके कार्यान्वयन हेतु राजभाषा विभाग द्वारा निदेश जारी किए जाएं ।"

संस्तुति सं. 11.10.25 : राजभाषा अधिनियम 1963 की धारा (3) में संशोधन किया जाए जिससे 'क' तथा 'ख' क्षेत्र में स्थित कार्यालयों को उक्त धारा के अंतर्गत जारी किए जाने वाले कागजात केवल हिंदी में जारी किए जा सके।

"राजभाषा अधिनियम की धारा 3(5) में निहित प्रावधानों के परिप्रेक्ष्य में ऐसा किया जाना संभव नहीं है। अतः समिति की यह सिफारिश नहीं की गई है ।"

संस्तुति सं. 11.10.26 : सरकारी कार्यालयों में राजभाषा हिंदी के प्रगामी प्रयोग को बढ़ाने के लिए लागू की गई प्रोत्साहन योजनाओं को और अधिक आकर्षक बनाया जाए अर्थात् प्रोत्साहन योजना के अंतर्गत मिलने वाली नकद पुरस्कार की राशि को दुगना कर दिया ज़ाए तथा 12 महीने के लिए मिलने वाली वेतन वृद्धि को स्थायी रूप प्रदान किया जाए जिससे कर्मचारी को उसकी पूरी सेवा के दौरान लाभ प्राप्त हो।

"विभिन्न प्रोत्साहन योजनाओं के अंतर्गत हिंदी में काम करने के लिए दी जाने वाली प्रोत्साहन राशियाँ पहले ही दुगनी कर दी गई हैं। इस आशय के निदेश भी जारी किए जा चुके हैं। वेतनवृद्धि स्थायी रूप से देने के बारे में राजभाषा विभाग, व्यय विभाग, वित्त मंत्रालय से परामर्श करें।।"

संस्तुति सं. 11.10.27 : राजभाषा अधिनियम, 1963, राजभाषा नियम, 1976, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित लक्ष्य तथा समिति के प्रतिवेदन के 4 खण्डों में की गई सिफारिशों पर हुए राष्ट्रपति जी के आदेशों के अनुपालन को सुनिश्चित करने हेतु राजभाषा विभाग में मॉनिटरिंग व्यवस्था को और अधिक सुदृढ़ किया जाए।

''इस संबंध में निदेश पहले ही जारी किए जा चुके हैं। अतः समिति की यह सिफारिश मान ली गई है। तथापि, इस संबंध में पहले से ही जारी निदेशों को पुनःपरिचालित किया जाए।''

संस्तुति सं. 11.10.28 : सरकारी अधिकारियों/कर्मचारियों के लिए हिंदी प्रशिक्षण की सुविधाएं बढ़ाए जाने की आवश्यकता है। प्रशिक्षण के लिए विशेष वीडियो/आडियो कैसेटें भी तैयार करवाई जा सकती है।

''समिति की यह सिफारिश स्वीकार्य है। इंटरनेट के माध्यम से प्रशिक्षण की व्यवस्था निःशुल्क उपलब्ध कराई जाए। राजभाषा विभाग समुचित कार्रवाई करे।''

संस्तुति सं. 11.10.29 : प्रत्येक मंत्रालय/कार्यालय/ उपक्रम आदि में अधिकारियों/कर्मचारियों द्वारा सरकारी कामकाज में हिंदी का प्रयोग बढाने के लिए हिंदी कार्यशालाएं नियमित रूप से आयोजित की जानी चाहिए।

''समिति की यह सिफारिश मान ली गई है। राजभाषा विभाग द्वारा इस संबंध में जारी निदेशों की पुनरावृत्ति की जाए ।''

संस्तुति सं. 11.10.30 : हिंदी में प्राप्त सभी पत्रों (प्राप्ति सूचना-पत्रों को छोड़कर) के उत्तर दिए जाएं तथा जिन मामलों में कोई कार्यवाई अपेक्षित न हो उनकी भी प्राप्ति सूचना हिंदी में भेजी जाए ताकि हिंदी में पत्र भेजने वालों को यह आभास न हो कि पत्र हिंदी में भेजे जाने के कारण उसका उत्तर प्राप्त नहीं हुआ।

''इस संबंध में राजभाषा नियम 1976 के नियम 5 के अंतर्गत वर्तमान व्यवस्था पर्याप्त है। तथापि, राजभाषा विभाग द्वारा इसं संबंध में पहले से जारी निदेशों को पुनः परिचालित किया जाए।''

संस्तुति सं. 11.10.31 : राजभाषा विभाग द्वारा राजभाषा नीति के कार्यान्वयन के लिए प्रतिवर्ष जारी किए जाने वाले वार्षिक कार्यक्रम वित्त वर्ष शुरू होने से लगभग 3 मास पूर्व ही जारी हो जाना चाहिए ताकि सभी कार्यालयों में यह वार्षिक कार्यक्रम वर्ष शुरू होने से लगभग एक मास पूर्व पहुंच जाएं जिससे उन्हें विभिन्न लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए समयबद्ध कार्यक्रम बनाने के लिए पर्याप्त समय मिल जाए तथा उसका कार्यान्वयन वर्ष के शुरु से ही किया जा सके। इस वार्षिक कार्यक्रम के लक्ष्य यथार्थ के आधार पर पुनःनिर्धारित किए जाने पर विचार किया जाना चाहिए।

''वार्षिक कार्यक्रम समय पर जारी करने के संबंध में आदेश पहले से ही विद्यमान हैं। लक्ष्यों में भी आवश्यकतानुसार परिवर्तन किया जाता है।''

संस्तुति सं. 11.10.32 : हिंदी दिवस वर्ष में एक बार मनाने के अलावा प्रत्येक कार्यालय द्वारा सप्ताह में कम से कम एक दिन हिंदी दिवस के रूप में मनाया जाए। उस दिन कार्यालय का सारा कार्य हिंदी में ही किया जाए। किसी विशेष मामले में यदि उस दिन कोई कार्य अंग्रेजी में करना अनिवार्य हो जाए तो उस पत्र/आदेश आदि पर संबंधित अधिकारी द्वारा हस्ताक्षर हिंदी में ही किए जाएं।

''ऐसा करना व्यवहारिक नहीं है। संघ का राजकीय कार्य हिंदी में करने के लिए राजभाषा विभाग द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम में लक्ष्य निर्धारित किए जाते हैं। अतएव यह सिफारिश स्वीकार नहीं की गई।''

संस्तुति सं. 11.10.33 : विभिन्न कार्यालयों/उपक्रमों/बैंकों आदि के पत्रशीर्षो पर राजभाषा हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए 'हमेशा हिंदी में पत्र व्यवहार करके देश का गौरव बढाएं', 'इस कार्यालय/उपक्रम में हिंदी में प्राप्त पत्रों का स्वागत है।' आदि घोष वाक्य (स्लोगन) लिखवाए जाने को प्रोत्साहित किया जाए।

''समिति की यह सिफारिश स्वीकार कर ली गई है। पत्रशीर्षों पर राजभाषा हिंदी में काम करने हेतु प्रेरणा देने वाले स्लोगन छपवाने के बारे में राजभाषा विभाग द्वारा निदेश जारी किए जाएं।''

संस्तुति सं. 11.10.34 : डाक तार की स्टेशनरी, लिफाफे, अन्तर्देशीय पत्रों, पोस्टकार्ड आदि पर राजभाषा हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने के संबंध में स्लोगन लिखवाए जाएं।

''राजभाषा हिंदी के संवर्धन, विकास एवं प्रसार हेतु समिति की यह सिफारिश स्वीकार कर ली गई है। डाक विभाग, संचार व सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय द्वारा समुचित कार्रवाई की जाए।''

संस्तुति सं. 11.10.35 : दूरदर्शन/आकाशवाणी के विभिन्न कार्यक्रमों के बीच-बीच राजभाषा हिंदी का प्रयोग बढ़ाने संबंधी स्लोगन/छोटे-छोटे वृत्तचित्र आदि दिखाए जाएं/प्रसारित किए जाएं। इनमें विभिन्न राष्ट्रीय नेताओं द्वारा हिंदी के प्रयोग को बढ़ाने संबंधी प्रकट विचारों का उल्लेख भी किया जा सकता है।

''समिति की यह सिफारिश स्वीकार कर ली गई है। सूचना और प्रसारण मंत्रालय सिफारिश के अनुरूप समुचित कार्रवाई करे।''

(मदन लाल गुप्ता)

संयुक्त सचिव, भारत सरकार

आदेश

इस संकल्प की एक प्रति भारत सरकार के सभी मंत्रालयों तथा विभागों, सभी राज्य सरकारों तथा संघ शासित क्षेत्रों, राष्ट्रपति सचिवालय, उपराष्ट्रपति सचिवालय, मंत्रिमंडल सचिवालय, प्रधानमंत्री कार्यालय, योजना आयोग, भारत के महालेखा नियंत्रक परीक्षक, लोकसभा सचिवालय, राज्यसभा सचिवालय, उच्चतम न्यायालय के महारजिस्ट्रार, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, विधि आयोग, बार काउंसिल ऑफ इंडिया आदि को भेजी जाएं।

इस संकल्प को आम जानकारी के लिए भारत सरकार के राजपत्र में भी प्रकाशित करवाया जाए।

(मदन लाल गुप्ता)
संयुक्त सचिव, भारत सरकार

भारत सरकार, कार्मिक, लोक शिकायत तथा पेंशन मंत्रालय (कार्मिक और प्रशिक्षण विभाग) नई दिल्ली, का दिनांक 13 अगस्त, 2004 का का०ज्ञा० संख्या 21011/1/96-स्थापना (ग)

कार्यालय ज्ञापन

विषय :—परिवीक्षा अवधि के दौरान हिंदी का ज्ञान प्राप्त करने संबंधी जरूरत का निर्धारण—संसदीय राजभाषा समिति की सिफ़ारिश का कार्यान्वयन।

अधोहस्ताक्षरी को यह कहने का निदेश हुआ है कि संसदीय राजभाषा समिति ने अपनी रिपोर्ट (भाग-III) के पैरा 22 (छ) में एक सिफ़ारिश इस प्रकार की है :—

> ''संसद द्वारा पारित राजभाषा संकल्प, 1968 के अनुसार इस बात की जाँच करने के लिए कि क्या भर्ती के समय अंग्रेज़ी अथवा हिंदी अथवा दोनों भाषाओं का ज्ञान होना आवश्यक है, सभी पदों के भर्ती नियमों की समीक्षा की जानी चाहिए। जहां किसी पद विशेष के लिए, किसी विशेष भाषा का ज्ञान अनिवार्य नहीं है वहाँ उम्मीदवार को अंग्रेजी अथवा हिंदी का विकल्प दिया जाना चाहिए और यदि भर्ती के समय उसे हिंदी का ज्ञान नहीं है तो नियमों में इस आशय का एक प्रावधान किया जाना चाहिए कि अपनी परिवीक्षा अवधि के दौरान उम्मीदवार को हिंदी का ज्ञान प्राप्त करना जरूरी है।''

2. सरकार ने समिति की उपर्युक्त सिफ़ारिश स्वीकार कर ली है। सभी मंत्रालयों/विभागों आदि से अनुरोध है कि वे उपर्युक्त सिफ़ारिश के कार्यान्वयन के लिए आवश्यक कार्रवाई करें।

3. चूँकि संसदीय राजभाषा समिति की उपर्युक्त सिफ़ारिश के पीछे यह उद्देश्य है कि केंद्र सरकार के कर्मचारियों को बिना किसी जबरदस्ती के, परिवीक्षा अवधि के दौरान हिंदी का ज्ञान प्राप्त करने के लिए प्रोत्साहित किया जाए, अतः अपनी परिवीक्षा अवधि के दौरान हिंदी का ज्ञान प्राप्त न कर पाने वाले उम्मीदवारों पर कोई शास्ति नहीं लगाई जानी चाहिए ताकि उम्मीदवार अपनी परिवीक्षा की अवधि के दौरान स्वेच्छा से हिंदी सीखें।

4. समिति की सिफ़ारिश के कार्यान्वयन में हुई प्रगति से राजभाषा विभाग को अवगत रखा जाए।

(श्रीमती प्रतिभा मोहन)
निदेशक

विविध

कंप्यूटरीकृत सी एम ओ क्विज

दिनांक 17-6-2004 को क्षेत्रीय कार्यालय, पूर्वी क्षेत्र में एक राजभाषा की कंप्यूटरीकृत क्विज का आयोजन किया गया। आरंभिक दौर में 8 टीमों ने भाग लिया, जिसमें 15 प्रश्नों के उत्तर 15 सेकेंड के अंतराल में मांगे गए और श्रेष्ठ 4 टीमों का चुनाव किया गया। इन्हें कंप्यूटर द्वारा सेल नियमावली, राजभाषा, सी एम ओ व्यवसाय से जुड़े 5 चक्रों में विभिन्न प्रश्न पूछे गए। राजभाषा से संबंधित दो चक्रों में प्रश्न पूछे गए। कई बार टीमें अपने स्कोर में ऊपर-नीचे होती रहीं। विभिन्न ध्वनियों, रंगों एवं उड़ान प्रक्रिया के माध्यम से क्विज को बड़ा ही रुचिर बनाया गया था। क्विज में प्रथम स्थान, **चमचम** (श्री गौतम घोष व श्री के० आचार्य) को मिला। दूसरा स्थान, **संदेश** (श्री एस० के० शील और श्री एम० के० पाल) को मिला एवं तीसरा स्थान, **जलेबी** (श्री टी के विश्वास और डी के भट्टाचार्य) को मिला। चौथे स्थान पर (श्रीमती शिमुल दास एवं श्री समिरन गुहाराय) रहे। क्विज की विशेषता प्रश्नों की उत्सकता रही। टीमों से सही उत्तर न पाने पर दर्शकों से पूछा गया एवं सही उत्तर देने वाले को चाकलेट देकर, तालियों के साथ प्रशंसा की गई।

इसी अवसर पर विजेताओं को पुरस्कार दिए गए एवं सफेद डाटा बोर्ड में सबसे पूर्व आकर लिखने के एवज में श्री समिरन गुहाराय को स्मृति चिह्न देकर क्षे०प्र०/एफ०पी० डॉ० अनिल धवन ने पुरस्कृत किया। क्षे०का०की मु०का०प्र० श्रीमती चन्दना बनर्जी एवं डॉ० अनिल धवन ने जहाँ टीमों का हौसला बढ़ाए रखा वहीं उन्होंने सफल आयोजन के लिए प्रबंधक (हिंदी) की भी प्रशंसा की और बताया कि हिंदी में कंप्यूटरीकृत ऐसा क्विज का आयोजन मैंने पहली बार देखा है। उन्होंने सभी लोगों को भाग लेते रहने की अपील भी की।

मुंशी प्रेमचंद की 125वीं जयंती पर बैंक नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा विशेष समारोह का आयोजन

मुंशी प्रेमचंद की 125वीं जयंती के उपलक्ष में बैंक नराकास, रायपुर द्वारा 31/07/2004 को स्थानीय होटल आदित्य में एक विशेष समारोह का आयोजन किया गया।

इस समारोह में भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग के उपनिदेशक (कार्यान्वयन) श्री सुनील सरवाही मुख्य अतिथि थे, कार्यक्रम की अध्यक्षता सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया के उपमहाप्रबंधक एवं समिति के संयोजक श्री एन० नारायणन् ने की।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री सरवाही ने इस अवसर पर कहा कि ''मुंशी प्रेमचंद हमेशा सर्वहारा वर्ग के लिए अपनी कलमरूपी तलवार से लड़ते रहे। इसीलिए उन्हें कलम का सिपाही कहा गया। मुंशी प्रेमचंद अपने कृतित्व व व्यक्तित्व के लिए हमेशा याद रहेंगे।'' भारतीय स्टेट बैंक के प्रबंधक (राजभाषा) श्री के०एल०डे० ने प्रेमचंद जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर विस्तार से प्रकाश डाला।

हिंदी की विदुषी श्रीमती साधना सक्सेना ने आज के संदर्भ में प्रेमचंद विषय पर अमूल्य जानकारी दी तथा प्रेमचंद के अनछुए विषयों पर प्रकाश डाला। समारोह में पंडित हरिशंकर शुक्ला महाविद्यालय की प्रिंसिपल डॉ० (श्रीमती) ममता शर्मा ने ''प्रेमचंद के कथा साहित्य के नारी पात्र'', गवर्नमेंट कालेज, शंकर नगर की हिंदी की सहायक प्राध्यापक डॉ० (श्रीमती) शिखा बेहेरा ने ''प्रेमचंद के उपन्यासों के पात्र बनाम आम आदमी'', राष्ट्रीय पत्रिका 'लोकायत' के संपादक श्री परितोष चक्रवर्ती ने

''कलम का सिपाही प्रेमचंद'' सद्भावना दर्पण के संपादक श्री गिरीश पंकज ने ''समकालीन कहानी और प्रेमचंद का कथा साहित्य'' तथा सेन्ट्रल बैंक के मुख्य अधिकारी (राजभाषा) एवं समिति सचिव श्री ओमप्रकाश मनियारिया ने ''मुंशी प्रेमचंद के कथानक एवं हिंदी फिल्में'' विषयों पर अपने-अपने अमूल्य विचार रखे। इस अवसर पर पंजाब नेशनल बैंक के स्टाफ सदस्यों द्वारा प्रेमचंद जी की बहुचर्चित कहानी 'कफन' का मंचन भी किया गया। इस मंचन का निर्देशन राजभाषा अधिकारी श्री अजय द्विवेदी ने किया।

अपने अध्यक्षीय भाषण में सेंट्रल बैंक के उपमहाप्रबंधक श्री एन० नारायणन् ने कहा कि ''आज का दिन बहुत महत्वपूर्ण है। आज मुंशी प्रेमचंद का 125वाँ जन्म दिन है। मुंशी प्रेमचंद के बारे में आप लोगों के विचार सुनकर अच्छा लगा। मुंशी प्रेमचंद ने हमेशा एक आम आदमी तथा उसकी समस्याओं के बारे में लिखा है। ऐसे लेखक हमेशा याद किए जाते रहेंगे।''

भारी पानी संयंत्र, तूतीकोरिन में प्रथम सर्वभाषा कवि गोष्ठी का आयोजन

भारी पानी संयंत्र, तूतीकोरिन में हिंदी सप्ताह आयोजन के दौरान दिनांक 08-09-2004 को संयंत्र के अतिथि गृह लॉन में पहली बार सर्वभाषा कवि गोष्ठी का आयोजन किया गया जिसमें 10 तमिलभाषा के कवि, 3 हिंदी भाषा एवं 3 मलयालम भाषा के 2 तेलुगु एवं 1 कन्नड़ भाषा के कवियों ने अपनी कविताएं प्रस्तुत की। सर्वभाषा कवि गोष्ठी में मुख्य अतिथि श्रीमती विजयलक्ष्मी शास्त्री एवं विशिष्ट अतिथि श्रीमती रत्ना रामाराव थीं। इस अवसर पर मुख्य महाप्रबंधक श्री एम०एस०एन० शास्त्री एवं उप महाप्रबंधक श्री वी०वी०एस० रामाराव भी उपस्थित थे। इस अवसर पर महिलाओं एवं बच्चों के लिए आयोजित की गई हिंदी प्रतियोगिताओं के पुरस्कारों का वितरण श्रीमती विजयलक्ष्मी एवं श्रीमती रत्ना द्वारा किया गया। संयंत्र में सर्वभाषा कवि गोष्ठी का आयोजन प्रथम बार किया गया जिसमें तमिलभाषी कार्मिकों ने अधिक संख्या में भाग लेकर पहली बार आयोजित हो रही इस कवि गोष्ठी में उत्साह से भाग लिया एवं अपनी-अपनी कविताएं प्रस्तुत कीं। कार्यक्रम का आयोजन संयंत्र के लॉन में सायंकाल को किया गया जिसमें आवासीय कॉलोनी में रहने वाले कार्मिक एवं उनके परिवार के सदस्य भी उपस्थित थे।

इस अवसर पर राभाकास के अध्यक्ष एवं उप महाप्रबंधक श्री रामाराव ने इस बात पर ज़ोर दिया कि ऐसे आयोजनों में छुपी हुई प्रतिभांगों को बाहर लाने का अवसर मिलेगा एवं सर्वभाषा में होने से हिंदी के साथ-साथ दूसरी भाषाओं के कवियों को भी मौका मिला। मुख्य महाप्रबंधक महोदय ने भी अपने उद्बोधन में कहा कि ऐसे आयोजन होते रहने चाहिए एवं दक्षिणी तमिलनाडु जहाँ की मुख्य भाषा ही तमिल है एवं यहाँ संयंत्र के तमिलभाषी कवियों को अपनी कविताएँ सुनाने का एक अवसर मिला और मेरा मानना है कि ऐसे अवसर उन्हें मिलते रहेंगे।

मुख्य महाप्रबंधक महोदय एवं उप महाप्रबंधक महोदय ने भी क्रमशः कन्नड़ एवं तेलुगु में अपनी-अपनी कविताएं सुनाईं। समारोह का संचालन श्री मनोज कुमार शर्मा, सहायक निदेशक (राजभाषा) ने किया। धन्यवाद ज्ञापन के बाद, कविगोष्ठी राष्ट्रगान के साथ संपन्न हुई।

हिंदी के मामले में भी हम उत्सवधर्मी हो गये हैं

—आचार्य विष्णुकांत शास्त्री

हमारा देश उत्सवों का देश है। बंगाल के बारे में तो कहा भी जाता है कि बारह महीनों में तेरह उत्सव होते हैं। होते तो और भी ज्यादा हैं। हिंदी दिवस भी हर वर्ष उत्सव की भाँति बन गया है। सरकारी कार्यालय अपने यहाँ एक दिन, कहीं एक सप्ताह, कहीं एक पखवाड़ा और आज तो मैंने देखा कि हिन्दुस्तान पेपर कॉरपोरेशन में हिंदी माह की बात हो रही है। बस इस दौरान हिंदी की कुछ बातें करते हैं, हिंदी में थोड़ा बहुत काम करते हैं और इसे भूल जाते हैं। हम कहते कुछ हैं और करते कुछ हैं। जो कहते हैं वो करते नहीं हैं। कथनी और करनी में फर्क देश के लिए अभिशाप बन गया है। जब तक हम इस फ़र्क को

नहीं मिटाते तब तक कुछ नहीं हो सकता। हिंदी की सेवा बस नाममात्र की ही रहेगी—ये शब्द हैं उत्तर प्रदेश तथा हिमाचल प्रदेश के पूर्व राज्यपाल आचार्य विष्णुकांत शास्त्री के, जो उन्होंने हिन्दुस्तान पेपर कॉरपोरेशन द्वारा 22 सितम्बर 2004 को भारतीय भाषा परिषद के सभागार में आयोजित "कलकत्ता महानगर राजभाषा परिसंवाद, 2004" का उद्घाटन करते हुए कहा।

आचार्य शास्त्री ने इस स्थिति पर गहरा दु:ख प्रकट किया कि हम भारतीय भाषाओं का प्रयोग करते हुए भी उनमें अंग्रेजी के इतने शब्द घुसेड़ देते हैं कि वह हिंदी अथवा बंगला ने होकर हिंग्लिस, बंग्लिस बनकर रह जाती है।

इस अवसर पर मुख्य वक्ता के रूप में अपनी बात रखते हुए केंद्रीय जल परिवहन निगम लिमिटेड के अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक कमाण्डर प्रफुल्ल तायल ने कहा कि हिंदी के प्रयोग की बात करते समय हमें याद रखना चाहिए कि इसका प्रयोग केवल लिखने में ही नहीं बल्कि बोलने में भी होता है और आपका कामगार अपनी बात हिंदी में कहने में सरलता महसूस करता है। कमाण्डर तायल ने हिंदी के प्रचार में हिंदी फिल्मों की ओर भी इंगित किया।

समारोह की अध्यक्षता करते हुए हिन्दुस्तान पेपरकॉरपोरेशन के अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक श्री रजी फ़िलिप ने कहा कि भाषा की सरलता और इसके प्रति हमारी गंभीरता सबसे अधिक महत्वपूर्ण है। आपने जोर दिया कि भारत सरकार जब कम्पनियों के साथ उत्पादन संबंधी समझौता ज्ञापन (एम०ओ०यू०) हस्ताक्षरित करते हैं तो वहाँ लक्ष्यों में राजभाषा कार्यान्वयन का भी एक बिंदु होना चाहिए। श्री फिलिप ने भाषा के सरल और सुललित स्वरूप पर विशेष रूप से बल दिया।

इस समारोह का उद्घाटन आचार्य विष्णुकांत शास्त्री द्वारा दीप प्रज्वलन से किया गया। सुश्री अरुण वी ने राष्ट्रगीत प्रस्तुत किया और हिन्दुस्तान पेपर कॉरपोरेशन के निदेशक (प्रचालन) श्री अशोक कुमार भाटिया ने अभ्यागतों का स्वागत किया।

समारोह के उद्घाटन से पूर्व इसी स्थान पर हिन्दुस्तान पेपर कॉरपोरेशन एवं उसकी इकाइयों नगाँव कागज मिल एवं कछार कागज मिल के हिंदी कार्यों की प्रदर्शनी का उद्घाटन आचार्य विष्णुकांत शास्त्री ने किया और प्रदर्शनी का अवलोकन किया। इस प्रदर्शनी में निगम को हाल ही में प्राप्त 'ग' क्षेत्र के लिए अखिल भारतीय स्तर पर सर्वाधिक कार्य हिंदी में करने के लिए इंदिरा गाँधी राजभाषा शील्ड समेत कई वैज़यन्तियाँ, विविध घटनाओं के चित्र और साहित्य प्रदर्शित थे।

परिसंवाद के दूसरे सत्र में श्री दाऊलाल कोठारी ने हिंदी में रवीन्द्र संगीत प्रस्तुत किया जिसकी सभी ने भूरि-भूरि प्रशंसा की। तृतीय सत्र में राजभाषा हिंदी के विविध पक्षों पर श्री आशुतोष मनुज, डॉ० सय्यद महफूज हसन रिजवी 'पुण्डरीक' आदि ने श्री सुभाष चंद्र पालीवाल की अध्यक्षता में अपने विचार रखे। परिसंवाद का चौथा और समापन सत्र काव्य गोष्ठी को समर्पित था। श्री पुण्डरीक की अध्यक्षता में सम्पन्न इस काव्य गोष्ठी में श्री विश्वमित्र उपाध्याय, श्री शादाब जौनपुरी, सुश्री अरुणा वी, श्री अशोक कुमार सिन्हा और स्वयं पुण्डरीक जी ने अपनी भाव विभोर करने वाली ग़ज़लें, गीत और कविताएँ प्रस्तुत कीं।

उद्घाटन सत्र में साधुवाद ज्ञापन श्री इन्द्र कुमार माथुर उप प्रबंधक (राजभाषा) नगाँव कागज मिल ने किया और समापन सत्र में डा० ओम प्रकाश शर्मा, वरिष्ठ प्रबन्धक (राजभाषा) ने। कलकत्ता महानगर के तमाम राष्ट्रीयकृत बैंकों, लोक उद्यमों और केंद्रीय राजकीय कार्यालयों के लगभग 150 हिंदी अधिकारियों के सहयोग से और उनकी उपस्थिति में आयोजित अपने ढंग के इस अनोखे कार्यक्रम का संचालन निगम के उप प्रबंधक (राजभाषा) डॉ० प्रमथनाथ मिश्र ने किया। जबकि इस अवसर पर राजभाषा विभाग के उप निदेशक श्री जी०डी० केसवानी और यूको बैंक के पूर्व सहायक महाप्रबंधक श्री सुभाष चंद्र पालीवाल का सम्मान भी किया गया। ■

पाठकों के पत्र

राजभाषा भारती त्रैमासिकी का अंक (जनवरी-मार्च, 2004) का अवलोकन करने के पश्चात् राजभाषा हिंदी के प्रसार व प्रचार की दिशा में आपके द्वारा किए गए प्रयासों की सराहना व प्रशंसा किए बगैर नहीं रहा जा सकता। पत्रिका में एक ओर नए आर्थिक परिदृश्य में बैंकिंग उद्योग का बदलता स्वरूप जैसे लेख आर्थिक जानकारी प्रदान करते हैं तथा चिंतन आयाम में डॉ० राजेन्द्र प्रताप सिंह के लेख हिंदी राजभाषा से जनभाषा तक बहुपयोगी लेख सिद्ध हुए हैं।

—गुलशन लाल चोपड़ा,

हिंदी अधिकारी, आसूचना ब्यूरो, गृह मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली।

राजभाषा भारती का (जनवरी-मार्च, 2004) अंक के आलेख ज्ञानवर्द्धक और उपयोगी हैं। 'इंटरनेट और हिंदी साहित्य', 'कार्यमूलक हिंदी का अर्थछाया कोश' इत्यादि आलेख विशेष रूप से उल्लेख्य हैं क्योंकि इन आलेखों के द्वारा राजभाषा हिंदी के सामर्थ्य को रेखांकित किया गया है। सचमुच हिंदी की शब्दावली ज्ञान-विज्ञान और आधुनिकतम तकनीक को सहजतापूर्वक अभिव्यक्त करने में सर्वथा सक्षम हैं।

—डॉ० वीरेन्द्र कुमार सिंह,

हिंदुस्तान एरोनाटिक्स लि० (हिंदी अनुभाग), सुनाबेड़ा-763002 (उड़ीसा)

राजभाषा भारती का (जनवरी-मार्च, 2004) का 104वाँ अंक में प्रकाशित सभी रचनाएँ पठनीय और ज्ञानवर्धक हैं। विशेषकर श्री प्रदीप कुमार अग्रवाल का लेख 'भूमंडलीकरण मीडिया, विज्ञापन और हिंदी : वर्तमान परिदृश्य', डॉ० राजेन्द्र प्रताप सिंह का लेख 'हिंदी : राजभाषा के जनभाषा तक' प्रशंसनीय हैं। पत्रिका के उज्जवल भविष्य की हार्दिक शुभकामनाओं सहित।

—राजेन्द्र खरे,

वरिष्ठ लेखा अधिकारी/राजभाषा,

महालेखा (लेखा एवं हकदारी) प्रथम का कार्यालय, मध्य प्रदेश, ''लेखा भवन'', ग्वालियर-474002

त्रैमासिक पत्रिका **राजभाषा भारती** के संयुक्तांक 102-103 (जुलाई-दिसम्बर, 2004) की एक प्रति प्राप्त हुई, इसके लिए धन्यवाद। पत्रिका में प्रकाशित पाठ्य सामग्री, पत्रिका का आवरण, साज-सज्जा और मुद्रण सभी आकर्षक एवं सराहनीय हैं।

आपके और आपके साथियों को बधाई।

रमेश चंद्र गुप्त,

तकनीकी सहायक (पुस्तकालय)

राजभाषा भारती में साहित्य, विज्ञान व सूचना प्रौद्योगिकी की त्रिवेणी के साथ-साथ विभिन्न नगरों तथा कार्यालयों द्वारा आयोजित समारोहों की सूचना जहां प्रेरणा व प्रोत्साहन प्रदान करने वाली है वहीं कर्मचारियों की रचनात्मक प्रतिभा में भी अपेक्षित अभिवृद्धि करने वाली है। सरकारी पत्र-पत्रिकाओं से भी हिंदी कार्यान्वयन को बहुमुखी नेतृत्व एवं मार्गदर्शन प्राप्त हो रहा है। पत्रिकाएँ किसी भी संगठन की बौद्धिक क्षमता के साथ-साथ विभागीय गतिविधियों को अधिकाधिक प्रबुद्ध मानव समुदायों तक पहुँचने का सहज-सरल माध्यम है। निश्चय ही इस प्रकार के कदम राष्ट्रीय स्तर पर प्रबुद्धजनों को एक मंच पर जोड़ने का सफल प्रयास है। एतदर्थ 'विकल्प' परिवार की ओर से पत्रिका से जुड़े सभी सहकर्मियों को साधुवाद।

—डॉ० दिनेश चमोला,

संपादक 'विकल्प',

भारतीय पेट्रोलियम संस्थान (वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान परिषद्), हरिद्वार रोड, मोहकपुर,

देहरादून-248005

राष्ट्रभाषा भारती का (जनवरी-मार्च, 2004) अंक में चिंतन पर आधारित लेख 'भूमंडलीकरण मीडिया, विज्ञापन और हिन्दी : वर्तमान परिदृश्य', 'हिन्दी : राजभाषा के जनभाषा तक' ज्ञानवर्द्धक एवं सूचनापरक है। साथ ही राजभाषा हिन्दी के कार्यान्वयन संबंधी गतिविधियों को राजभाषा भारती में शामिल करने से पत्रिका और भी रोचक हो गयी है। मैं कामना करता हूँ कि पत्रिका में दिन-प्रतिदिन और निखार जाए, इसी मंगल कामना के साथ संपादक मंडल को पत्रिका के सफल संपादन के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ।

—डॉ० जयन्ती प्रसाद नौटियाल,

मुख्य प्रबंधक,

कार्पोरेशन बैंक, प्रधान कार्यालय : मंगलादेवी मंदिर, डा० पे० सं० 88, मंगलूर-575001

राजभाषा भारती पत्रिका का अंक 104 (जनवरी-मार्च, 2004) में श्री प्रदीप कुमार अग्रवाल द्वारा लिखित मीडिया, विज्ञापन और हिंदी : वर्तमान परिदृश्य, डॉ० शशि शर्मा द्वारा लिखित कार्यमूलक हिंदी का अर्थछाया कोश अवधारणा और उपयोगिता आदि लेख अति महत्वपूर्ण एवं तथ्यपरक लगे। इंटरनेट और हिंदी साहित्य, नए परिदृश्य में बैंकिंग उद्योग का बदलता स्वरूप इत्यादि लेख विवरणात्मक एवं प्रेरक लगे। पत्रिका में प्रकाशित अन्य पाठ्य सामग्री भी ज्ञानवर्धक एवं जानकारीप्रद लगे।

—श्यामलता,

कृते सहायक निदेशक (राजभाषा),

भारत सरकार, परमाणु ऊर्जा विभाग, भारी पानी संयंत्र, डाकघर : भापासं कॉलोनी, तूतीकोरिन-628007

सत्यमेव जयते

एस. जयपाल रेड्डी

सूचना और प्रसारण एवं संस्कृति मंत्री
भारत सरकार

अपील

हिंदी दिवस के अवसर पर मेरी हार्दिक शुभकामनाएं। भारतवर्ष की संविधान सभा ने 14 सितंबर, 1949 को देवनागरी लिपि में लिखी हिंदी को राजभाषा, के रूप में स्वीकार किया और तभी से 14 सितंबर को हर वर्ष हिंदी दिवस के रूप में मनाया जा रहा है।

हिंदी सरल, सहज और सुबोध भाषा है इसीलिए यह जनसंपर्क की भाषा बनी है। स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान भी राष्ट्रीय चेतना जागृति के लिए हिंदी ने ही पूरे राष्ट्र को एक सूत्र में पिरोया था। संघ सरकार को हिंदी के प्रचार-प्रसार का दायित्व सौंपा गया जिसे निभाने में सूचना और प्रसारण मंत्रालय सर्वोपरि है। इलेक्ट्रॉनिक और प्रिंट मीडिया ने हिंदी को जन-जन तक पहुंचाकर इसे जनमानस की भाषा बनाया है। देश की अखंडता और एकता को अक्षुण्ण बनाने के लिए हिंदी का व्यावहारिक प्रयोग बहुत जरूरी है। हम अपने दिन-प्रतिदिन के काम में बोझिल भाषा को छोड़कर सरल, सहज और सुबोध भाषा का इस्तेमाल करें ताकि हमारे भावों का सहज आदान-प्रदान हो सके।

आइए, आज हम इस पावन पर्व पर यह संकल्प लें कि हम मन, वचन और कर्म से हिंदी को अपनाएं तथा सरकारी कामकाज में हिंदी का प्रयोग कर अपना संवैधानिक दायित्व पूरा करें।

एस. जयपाल रेड्डी

क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन उत्तर एवं दिल्ली क्षेत्र चंडीगढ़ में दिनांक 30-11-2004 को पुरस्कार प्रदान करते हुए माननीय गृह राज्य मंत्री श्री माणिक राव गावीत जी। साथ में राजभाषा सचिव श्री बालेश्वर राय (बाएं) तथा संयुक्त सचिव श्री मदल लाल गुप्ता जी।

क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन उत्तर एवं दिल्ली क्षेत्र चंडीगढ़ में दिनांक 30-11-2004 को हिंदी में प्रकाशित पत्र-पत्रिकाओं की प्रदर्शनी का अवलोकन करते हुए माननीय गृह राज्य मंत्री श्री माणिक राव गावीत जी।

पं. सं. 3246/77
आई एस एस एन 0970-9398

सत्यमेव जयते

बी. के. चतुर्वेदी

मंत्रिमंडल सचिव
CABINET SECRETARY
NEW DELHI

06 सितम्बर, 2004

संदेश

प्राचीन समय से हिंदी संपूर्ण भारत की संपर्क भाषा रही है। देश के स्वतंत्रता आंदोलन में हिंदी के सार्वदेशिक एवं सर्वग्राह्य स्वरूप ने इसे राष्ट्रभाषा के रूप में प्रतिष्ठित किया। 14 सितम्बर, 1949 को संविधान सभा ने देवनागरी लिपि में लिखी जाने वाली हिंदी को राजभाषा के रूप में स्वीकार किया था। तभी से हर वर्ष 14 सितम्बर हिंदी दिवस के रूप में मनाया जाता है।

संविधान के लागू होने के साथ-साथ 26 जनवरी, 1950 से संविधान के अनुच्छेद 343 के अनुसार हिंदी भारत संघ की राजभाषा बनी। सरकार का यह प्रयास रहा है कि हिंदी भाषा का प्रसार बढ़ाया जाए ताकि यह भारत की सामासिक संस्कृति के सभी तत्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम बन सके।

भारत एक बहुभाषी राष्ट्र है। संविधान में वर्णित सभी प्रांतीय भाषाओं के साथ-साथ इस विशाल बहुभाषी राष्ट्र को एक सूत्र में बांधने में हिंदी की एक महत्वपूर्ण भूमिका है। हिंदी में कार्य करना सरल है। इस कार्य में हमारे वरिष्ठ अधिकारी स्वयं हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग करके अधीनस्थ कर्मचारियों को हिंदी में काम करने के लिए प्रेरित एवं प्रोत्साहित कर सकते हैं।

हिंदी दिवस के अवसर पर केंद्र सरकार के सभी मंत्रालयों/विभागों/संगठनों आदि से मेरा आग्रह है कि राजभाषा संबंधी संवैधानिक एवं कानूनी प्रावधानों का पालन सुनिश्चित करने के लिए राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा जारी किए गए वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति की दिशा में पूरे प्रयास करें ताकि राजभाषा हिंदी को संविधान द्वारा प्रदत्त इसका उचित स्थान मिल सके।

बी. के. चतुर्वेदी

भारत सरकार राजभाषा विभाग, (गृह मंत्रालय), लोकनायक भवन, नई दिल्ली-110 003, के लिए डॉ० राजेन्द्र प्रताप सिंह, उप संपादक द्वारा प्रकाशित तथा प्रबंधक, भारत सरकार मुद्रणालय, मायापुरी, नई दिल्ली द्वारा मुद्रित।